प्रकाशितवाक्य

मेमने की जीत

Revelation *(Hindi)*

Copyright © All rights reserved

First Edition : May 2009

Published in Hindi by **Harvest Mission Publication** with permission
Contact Address:
V – 82 Sector- 12, NOIDA, UP- 201301
Tel : 0120- 2550213, 4264860, 6417828, 9811373357
bijujo@bijujohn.com, bijujohn@roadrunnerworldmission.com
www. harvestpublishers.org

Printed at : New Life Printers (P) Ltd, New Delhi

प्रकाशितवाक्य

मेमने की जीत

एफ. वायन मैक लेआड

विषय वस्तु

1. यीशु मसीह का प्रकाशन..........
2. मनुष्य के पुत्र का दर्शन..........
3. इफिसुस की कलीसिया..........
4. स्मुरना की कलीसिया..........
5. पिरगमुन की कलीसिया..........
6. थूआतीरा की कलीसिया..........
7. सरदीस की कलीसिया..........
8. फिलादेलफिया की कलीसिया..........
9. लौदीकिया की कलीसिया..........
10. स्वर्गीय सिंहासन का स्थान..........
11. मुहरबन्द पुस्तक..........
12. मुहरों का खोला जाना..........
13. एक लाख चौवालीस हजार तथा विशाल भीड़..........
14. सातवीं मुहर तथा तुरहियों का शब्द..........
15. स्वर्गदूत तथा छोटी पुस्तक..........
16. दो गवाह..........
17. सातवीं तुरही का फूँका जाना..........
18. स्त्री, बच्चा और अजगर..........
19. समुद्र में से निकला हुआ पशु..........
20. पृथ्वी में से निकला हुआ पशु..........
21. एक लाख चौवालीस हज़ार गायकों का दल..........

पृथ्वी की कटनी 127
प्रकोप के सात कटोरों का उंडेला जाना 131
वेश्या और पशु 137
बाबुल का पतन 143
पशु और झूठे नबी का पतन 147
अजगर और मृत्यु की हार 153
स्वर्गीय नगर 157
दर्शनों की समाप्ति 161
मुख्य विषयों पर पुनर्विचार 165

पुस्तक का परिचय

प्रकाशितवाक्य नामक पुस्तक बाइबल की एक ऐसी पुस्तक है जिसे समझ बड़ी कठिनाई होती है। पाठक के सामने अनेक प्रश्न उठ खड़े होते हैं; इस को लिखने का मेरा उद्देश्य यह नहीं है कि मैं पाठक के प्रत्येक प्रश्न का उत्तर करूं, क्योंकि स्वयं मेरे सामने भी इस पुस्तक की भविष्यवाणियों के संबंध में अ प्रश्न हैं जिन्हें मैं नहीं समझ पाता हूं। प्रेरित यूहन्ना को भी, जिसने इस पुस्तक भविष्यवाणी के वचन लिखे हैं, प्रभु यीशु के दर्शन की बातें समझने में संघर्ष पड़ा था।

तौभी मैं आशा करता हूं कि पाठक को इस पुस्तक की तीन महत्वपूर्ण वास्तविक को जानकर नया आनन्द प्राप्त होगा और इस पुस्तक की बहुमूल्यता उनकी दृ बढ़ेगी।

पहली बात : जैसा कि हम सभी आज जानते हैं, परमेश्वर सब बातों का कर देगा, अधार्मिकता नष्ट होगी और धार्मिकता की स्थापना होगी।

दूसरी बात : मसीही जीवन निरंतर काम में लगे रहने वाला और जूझते रहने जीवन है। एक विश्वासी को उसके विश्वास के लिए दुख उठाना पड़ सकत

तीसरी बात : अंत में जीत ख्रीस्त की होगी और उनकी होगी जो ख्रीस्त पर वि रखते हैं। हालांकि हम स्वयं शैतान से लड़ते हैं, पर यह जानते हैं कि हमारा पर शत्रु से कहीं बढ़कर शक्तिशाली है। ख्रीस्त में हम जयवन्त से भी बढ़कर हैं। हमारी धन्य आशा है। वह दिन आने वाला है जब हम अपने प्रभु को आमने- देखेंगे, तब हमारे सब दुख दूर हो जाएंगे।

मेरी आशा है कि इस धार्मिक टीका के द्वारा पाठक प्रभु के प्रति अपने स में और उनके लिए निर्धारित प्रभु की अंतिम योजना को पूर्ण करने का प्रोत्साहन करेंगे। टीका के प्रत्येक अध्याय को पढ़ने के लिए समय निर्धारित कीजिए और के साथ साथ पवित्रशास्त्र बाइबल भी पढ़िये। सच्चाई को समझने के लिए प्र कीजिए। सच्चा गुरु पवित्रात्मा है जो सत्य का प्रकाशन करता है। जब आप इस महत

ार बहुमूल्य पुस्तक का अध्ययन करते हैं तो पवित्रात्मा के मार्गदर्शन के लिए प्रार्थना ीजिए।

प्रभु ने चाहा तो संपूर्ण विश्व के विश्वासियों तक यह पुस्तक तथा इस शृंखला ी अन्य पुस्तकें पहुंचाने का प्रयास किया जाएगा ताकि उन्हें प्रोत्साहन और आत्मिक हयोग प्राप्त हो सके। यदि आपको इस पुस्तक से आशीष मिलती है तो मेरे साथ ालकर प्रार्थना कीजिए कि परमेश्वर अन्य पाठकों को भी दृढ़ करने, उन्हें प्रोत्साहित रने और उन्हें शान्ति देने में इस पुस्तक का प्रयोग करे ताकि उसका राज्य सुदृढ़ ।

–एफ. वेन मैक लेआड

अध्याय 1

प्रभु यीशु मसीह का प्रकाशन

(पढ़ें प्रकाशितवाक्य 1:1-8)

इस पुस्तक का मूल विचार क्या है? यूहन्ना हमें बताता है कि उसकी पुस्तक प्रभु यीशु मसीह का प्रकाशन है (पद-1)। यीशु ही इस पुस्तक का मुख्य विषय है। यह पुस्तक इसलिए लिखी गई ताकि यीशु के विषय में और उसकी योजना के विषय में परिचित कराया जा सके। इसी मूल-विचार को ध्यान में रखना अत्यन्त महत्वपूर्ण है। प्रकाशन द्वारा हमें ज्ञात हो जाएगा कि किस प्रकार हमारा जीवित प्रभु यीशु अपने शत्रुओं को पराजित कर देगा। यह पुस्तक यीशु का प्रकाशन है और संसार, शैतान, मृत्यु और अधोलोक की शक्तियों पर उसकी जीत का प्रकाशन है।

इन पदों में ध्यान से पढ़ें, यह प्रकाशन हम तक कैसे पहुंचा? पद-1 में बताया जाता है कि पिता परमेश्वर ने यह प्रकाशन अपने पुत्र को दिया, उस पर प्रकट किया, फिर पुत्र ने स्वर्गदूतों को प्रकाशन की बातें बताई, जिन्होंने बाद में यूहन्ना पर वे सब बातें प्रकट कीं। फिर यूहन्ना ने उन सब बातों को लिख दिया, जैसे कि आज हम लिखते हैं। यह प्रकाशन मानवीय नहीं है। यूहन्ना केवल उन बातों का गवाह है जो उसने सुनीं और देखीं थीं। प्रकाशन का मूल-स्रोत परमेश्वर ही है।

चूंकि यह वचन परमेश्वर का वचन है इसलिये इसके साथ आशीषें भी जुड़ी हैं। पद 3 में उन आशीषों पर ध्यान दीजिये जो उन्हें पा सकता है। ये आशीषें उनके लिये हैं जो वचनों को पढ़ता, सुनता और हृदय में ग्रहण कर उनका पालन करता है। आप इन वचनों को जो इस पुस्तक में लिखे हैं, पढ़ तो सकते हैं पर यदि उन्हें सुनकर उनका पालन न करें तो आशीषों के भागीदार नहीं बन सकते। यदि आप इस पुस्तक की पूरी आशीषों को पाने की इच्छा रखते हैं तो आपको तीनों ही बातों का एक साथ पालन करना होगा। जब हम आगे इन बातों पर मनन करते हुए अध्ययन करेंगे तो हम जान पाएंगे कि इस पुस्तक के वचनों को थामें रहना या उनका पालन करना कैसा

कठिन काम है। कुछ को सताव सहना पड़ सकता है, अन्यों को ख्रीस्त के कार
मरना भी पड़ सकता है। अध्याय 2 और 3 का मुख्य शब्द है ''जो जय पाए।'' ज
पाने का अर्थ है अनेक बाधाओं और दुखों पर जय पाना। अत: आशीषें उन्हों के लि
हैं जो प्रभु के नाम में इन दुखों और बाधाओं का सामना करते हुए उन पर विज
होते हैं।

पत्र एशिया की सात कलीसियाओं के नाम लिखा गया है। हम नहीं जानते f
क्यों केवल इन्हीं कलीसियाओं को पत्र लिखे गए? यूहन्ना के इन पत्रों का अभिप्रा
था कि पत्र सब कलीसियाओं में जाएं ताकि उन्हें प्रोत्साहन प्राप्त हो और वे सता
का सामना करने की चुनौती पाएं। यह पुस्तक सतावों के दौरान लिखी गई। इस पुस्त
का लेखक 'यूहन्ना' परमेश्वर के वचन और यीशु की गवाही के कारण पतमुस नाम
द्वीप में था क्योंकि उसे देश-निकाला दे दिया गया था (पद-9)। सातों कलीसिया
भी सताव के कारण दुख उठा रही थीं। यह कैसी अच्छी बात है कि प्रभु इन विशि
कलीसियाओं की चिन्ता करता है। वह उन्हें नाम लेकर पुकारता है और ठीक ठी
जानता है कि किस प्रकार की बातें वे सहन कर रही थीं।

यूहन्ना त्रिएकत्व के तीनों व्यक्तियों की ओर से इन सातों कलीसियाओं को शुभकामना
भेजता है, लिखा है, ''उसकी ओर से जो है, जो था और जो आने वाला है'' (पद-4
यूहन्ना उन सात आत्माओं की ओर से भी शुभकामनाएं भेजता है जो ख्रीस्त के सिंहास
के समक्ष हैं। आइये अब इन तीनों व्यक्तियों का अलग अलग अध्ययन करें।

पहले, यूहन्ना उसकी ओर से आशीर्वाद भेजता है जो है, जो था और जो आने वा
है (पद-4)। परमेश्वर वह है जो अनन्त है। वह अति महान और अनादिकाल से
जिसने संसार की सृष्टि की और उसके अन्त तक वहीं रहेगा। उसका कोई आरम
नहीं है और न ही उसका कोई अन्त है। परमेश्वर के अलावा हर वस्तु आती और जा
रहेगी परन्तु परमेश्वर पर समय और परिस्थितियों का कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

फिर दूसरी बात, ये आशीर्वाद उन सात आत्माओं की ओर से दिया जाता है
यीशु के सिंहासन के सामने हैं। ये सात आत्माएँ कौन हैं? ध्यान दीजिए, ये आशीर्व
जो सात आत्माओं की ओर से हैं वे पिता (पद-4) और पुत्र (पद-5) के द्वारा दि
गए आशीर्वाद के मध्य में हैं। इन आत्माओं को स्वयं परमेश्वर से कम समझना सम्भ
नहीं है। एन.आई.वी. बाइबल में दी गई टिप्पणी के अनुसार सात आत्माओं का अनुव
''सात गुनी आत्मा'' किया जा सकता है।

प्रकाशितवाक्य नामक इस पुस्तक में सात अंक बड़ा महत्वपूर्ण अंक है। परमेश्व

ने छह दिनों में सृष्टि का निर्माण किया और सातवें दिन उसने विश्राम किया। इसी से अंक सात सिद्धता और पूर्णता का प्रतीक बना। पवित्रात्मा को अंक सात से हमें उसकी पूर्णता और सिद्धता का स्मरण कराने के लिए जोड़ा जाता है।

जैसा कि हम पहले बता चुके हैं, इस पुस्तक का केन्द्रीय पात्र प्रभु यीशु मसीह है, यूहन्ना इसी यीशु मसीह के नाम में सात कलीसियाओं को अपना आशीर्वाद वचन भेजता है। ध्यान दीजिए यूहन्ना प्रभु यीशु मसीह के विषय में हमें क्या बताता है!

वह हमें बताता है, यीशु ''विश्वासयोग्य साक्षी'' है (पद-5)। वह दो प्रकार से विश्वासयोग्य है, पहली बात, उसने परमेश्वर पिता के विषय में जो बातें बताई, वे विश्वासयोग्य बातें हैं। यूहन्ना अपने सुसमाचार में यीशु को परमेश्वर का वचन कहता है (यूहन्ना 1:1)। यीशु पूरी तरह परमेश्वर का प्रतिनिधित्व करता है, और परमेश्वर का अभिप्राय प्रकट करता है। जो बातें यीशु ने कहीं वे सच्ची और परमेश्वर के हृदय से निकली हुई सिद्ध बातें थीं। यीशु परमेश्वर पिता के हृदय का विश्वासयोग्य साक्षी है। दूसरी बात, यीशु अपने कार्यों में भी विश्वासयोग्य था। यद्यपि उसने दुख सहा और मर गया, तौभी वह उस कार्य को करने में विश्वासयोग्य रहा जिस काम के लिए पिता ने उसे नियुक्त किया था।

आगे यीशु के बारे में बताते हुए यूहन्ना उसे ''मृतकों में से जी उठने वालों में पहिलौठा'' कहता है (पद-5)। कुछ अन्य लोग भी यीशु से पहले जी उठे थे, हमारे प्रभु यीशु ने स्वयं कुछ लोगों को मृतकों में से जीवित किया था, पर वे बाद में फिर मर गए, जब यीशु जी उठा, तो फिर मरने के लिए नहीं जी उठा। केवल यीशु ने ही वास्तव में मृत्यु पर जीत पाई। वह ''पृथ्वी के राजाओं का शासक है'' (पद-5)। इस पृथ्वी के सबसे शक्तिशाली शासक को भी एक दिन यीशु के चरणों में अपना शीश झुकाना होगा। वह राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु है। सबको उसके सम्मुख लेखा देना होगा।

यूहन्ना हमें भी याद दिलाता है कि यीशु ने क्या किया? उसने हम से प्रेम किया और उसने अपने लहू के द्वारा हमें पापों से छुड़ाया (पद-5)। उसने हम से कितना प्रेम किया? वह हमारे लिये मरने को भी तैयार हो गया। यीशु ने क्रूस पर भयानक मृत्यु हमारे लिये सही। इससे बड़ा प्रेम और कोई हो नहीं सकता। यूहन्ना 15:13 इस प्रकार बताता है:

''इस से महान् प्रेम और किसी का नहीं, कि कोई अपने मित्रों के लिए अपना प्राण दे।''

किसी दूसरे व्यक्ति के लिए प्राण देना, प्रेम प्रकट करने की सर्वोच्च क्रिया होती है। इससे अधिक मूल्यवान वस्तु कोई नहीं जो कोई व्यक्ति अदा कर सके; और यीशु ने हमारे लिए यह कीमत अदा की और स्वेच्छा से तथा प्रेम के साथ अदा की।

अपनी मृत्यु के द्वारा ख्रीस्त ने हमें ''याजकों का राज्य'' बनाया (पद 6)। पुराने नियम में केवल याजकों को ही परमेश्वर के निकट जाने और उनकी सेवा करने का सम्मान प्राप्त था। और आज, यीशु ख्रीस्त की मृत्यु के कारण आपको और मुझे परमेश्वर के निकट साहस के साथ जाने का अधिकार प्राप्त है (देखें इब्रानियों 4:16)। हम उसके चुने हुए दास और दासियाँ हैं। हमें संसार के समक्ष उसका प्रतिनिधित्व करने का आनन्द और गौरव प्राप्त है। इससे बड़ा सम्मान और कोई हो नहीं सकता।

जो कुछ यीशु ने हमारे लिए किया और जो वह है, इसके फलस्वरूप वह हमारी स्तुति और प्रशंसा के योग्य है (पद-6)। केवल वही महिमा और सामर्थ्य के योग्य है। अन्य किसी के भी पास यदि सामर्थ्य और महिमा होवे, तो वह बड़ी भयानक होगी। इन दोनों बातों पर सही प्रकार से नियंत्रण सिवाय यीशु ख्रीस्त के और कोई नहीं कर सकता। केवल वही योग्य है।

यूहन्ना अपने पाठकों को आगे बताता है, कि यही महिमा से भरा हुआ यीशु बादलों के साथ आने वाला है (पद-7)। क्या आप उस दिन की कल्पना कर सकते हैं? कैसा ऐश्वर्ययुक्त वह दिन होगा! जिसे हम प्रेम करते हैं, उसे हमारी आँखें देखेंगी। सब लोग उसे आते हुए देखेंगे। जब वह आएगा तो उस प्रकार से नहीं आएगा जैसे पहली बार आया था, उस समय तो वह एक बालक बनकर आया था और चुपचाप आया था। पर इस बार जब वह आएगा तो ''हर एक आँख उसे देखेगी।'' क्या ही भयानक होगा वह दिन उनके लिये, जो उसे नहीं जानते! जिन्होंने उसे बेधा था वे भी उसे देखेंगे। उस दिन आनन्द और शोक दोनों के मिश्रण वाला दिन होगा। जो उसे जानते हैं वे तो अति आनन्द से भर जाएंगे और जिन्होंने उसे बेधा था और उसका तिरस्कार किया था वे भयभीत होंगे और विलाप करेंगे।

यही यीशु अलफा और ओमेगा है (पद-8), अर्थात् आदि और अन्त है। वह सदा से था और सदाकाल तक रहेगा। वह सर्वशक्तिमान परमेश्वर है उसे जानना क्या ही आनन्द की बात है! यही महान् परमेश्वर है जो एशिया की सातों कलीसियाओं को अपना आशीर्वाद वचन प्रेषित करता है। त्रिएक परमेश्वर की ओर से सातों कलीसियाओं को संदेश और शुभकामनाएँ दी गई। इससे बड़ा आदर और क्या हो सकता है?

विचार-विमर्श के लिये प्रश्न :

- प्रकाशितवाक्य नामक पुस्तक का मूल-विषय क्या है? पुस्तक की व्याख्या करने में इस से हमें क्या सहायता मिलती है?
- पुस्तक में आशीष प्राप्त करने की कौन सी शर्तों का वर्णन किया गया है? क्या इन शर्तों को पूरा करना सरल है?
- परमेश्वर अनन्त है, इस तथ्य में आप कौन सी सांत्वना पूर्ण बातें पाते हैं?
- यीशु कैसे विश्वासयोग्य साक्षी है? क्या आप विश्वासयोग्य साक्षी रहे हैं?
- इसका हमारे लिये क्या अर्थ है कि हम वर्तमान समय में ख्रीस्त के याजक हैं? क्या आपने कभी विश्वासयोग्यता के साथ ख्रीस्त का याजक होने का प्रतिनिधित्व किया है?
- यीशु का दुबारा आना किन बातों में उसके बालक के रूप में (प्रथम आगमन के समय) आने से भिन्न है? क्या आप उसके स्वागत के लिये तैयार हैं?

प्रार्थना के विषय :

- प्रार्थना कीजिए कि जब आप प्रकाशितवाक्य की पुस्तक का दैनिक अध्ययन करते हैं तो प्रभु आपको अपनी पहचान दे और अपनी विधियाँ सिखाए।
- प्रार्थना कीजिए कि आपको अनुग्रह प्राप्त हो कि आप इस पुस्तक के सत्य वचन सुनकर उनका पालन कर सकें।
- प्रार्थना में परमेश्वर का धन्यवाद दीजिए कि वह अनन्त परमेश्वर है, कभी बदलता नहीं; और इसी कारण आप उस पर सदा दृढ़ आशा रख सकते हैं और निर्भर रह सकते हैं।
- धन्यवाद दीजिए कि उसने इस संसार में आपको अपना प्रतिनिधि होने के लिये बुलाया है। प्रार्थना कीजिए कि आप उसके विश्वासयोग्य साक्षी रह सकें।
- प्रभु का उस कार्य के लिये धन्यवाद देने में कुछ पल बिताएँ जो उसने क्रूस पर किया। धन्यवाद दीजिए कि वह पुनः आने वाला है। विश्वासी होने के नाते यीशु के कारण जो धन्य आशा उस पर आपकी है, उस आशा के लिए उसका धन्यवाद दीजिए।

अध्याय 2

मनुष्य के पुत्र का दर्शन

(पढ़ें प्रकाशितवाक्य 1:9-20)

इस पाठ का अध्ययन करने से पूर्व पद ९ पर ध्यान देते हुए पता लगाएं कि यूहन्ना यं अपने विषय में क्या बताता है। वह स्वयं को सात कलीसियाओं के विश्वासियों । भाई और उनका सहभागी बताता है। वे सब आपस में भाई थे, क्योंकि उन सबका क ही स्वर्गिक पिता है।

यूहन्ना उनका सहभागी है। सहभागी उसे कहते हैं जो दूसरे व्यक्ति के किसी विशेष नुभवों में, उसी के समान उन्हीं अनुभवों में से गुजर रहा होता है। यह संभव हो कता है कि कोई व्यक्ति भाई हो, पर सहभागी न हो। अक्सर सहभागी अधिक प्रिय ता है क्योंकि अनुभव समान होता है। यूहन्ना सहभागी होने के साथ-साथ उसका ई भी था। वह न केवल एक ही पिता होने के नाते उसका भाई था, पर साथ ही पके समान दुखों में से गुज़रने वाला उसका सहभागी भी था।

प्रेरित यूहन्ना कौन से अनुभवों की चर्चा अपने पाठकों से करता है? पद ९ हमें ताता है कि वह तीन प्रकार के अनुभवों में उसका सहभागी था। पहली बात, वह नके क्लेश (दुख) में उसका सहभागी था। जिस समय वह यह पुस्तक लिख रहा तब सुसमाचार के कारण या यीशु के कारण वह पतमुस नामक द्वीप में था। वह पने क्लेश भोग में अकेला ही नहीं था पर साथ ही उसके पाठकगण भी यीशु के ारण क्लेश भोग रहे थे।

दूसरी बात, यूहन्ना राज्य में भी उसका सहभागी था। जबकि वे पृथ्वी पर क्लेश गने के लिए बुलाए गए तो वे सब महिमा की आशा में भी सहभागी होने के लिए लाए गए। वे जानते थे कि उनका जीवन तो थोड़े ही दिनों का है, वे जगत में यात्री मान हैं, उनकी आँखें उनके स्वर्गीय घर की ओर लगी थीं; इस कारण वे अपने दयों में ख्रीस्त के वर्तमान राज्य में भी सहभागी थे। वे सब अपने अपने जीवनों में

ख्रीस्त की प्रभुता की अधीनता में सहभागी थे। उन पर यीशु ख्रीस्त का शासन था

तीसरी और अंतिम बात, यूहन्ना अपने भाइयों के साथ धीरज में सहभागी था। उन्होंने अपने प्रभु के कारण सतावों और क्लेशों का धीरज के साथ सामना किया और सतावों में स्थिर रहे। यूहन्ना उन विश्वासियों के साथ धीरज में संयुक्त था।

ध्यान दीजिए, जिस दिन यूहन्ना ने प्रभु का दर्शन पाया वह प्रभु का दिन (रविवार) था। हालांकि प्रेरित यूहन्ना अकेला पतमुस टापू में था, अपने साथियों से दूर था, तौभी प्रभु की संगति से उसे कोई वस्तु दूर नहीं कर सकती थी। उसी देश-निकाले की स्थिति में प्रभु ने उस से बातचीत की और उससे संगति की। इसी एकान्त स्थान मे परमेश्वर यूहन्ना का पूर्ण और अविभाजित ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर पाया। किसी भी प्रकार की उनके बीच में बाधा नहीं थी, करने के लिए कोई काम वहां नहीं था वह सबसे अलग और अकेला वहाँ था। कभी कभी परमेश्वर हमें ऐसे सूनसान इलाकों में रखता है ताकि हमारा पूरा ध्यान उस पर लग सके और वह हमारे दिलों से बात कर सके।

अपने दर्शन में यूहन्ना ने एक बड़ा शब्द सुना। यह शब्द तुरही की ध्वनि के समान बड़ा शब्द था। उस शब्द ने यूहन्ना से कहा, जो कुछ तू देखता है, उसे पुस्तक में लिख और सातों कलीसियाओं को भेज जो एशिया में हैं।

तब यूहन्ना यह देखने के लिए कि कौन उस से बोल रहा है पीछे मुड़ा और उसने सोने के सात दीपदान देखे, और उन दीपदानों के मध्य मनुष्य के पुत्र सदृश एक पुरुष को देखा जो पैरों तक का चोगा पहिने और छाती पर एक सुनहरा पट्टा बांधे हुए था यह बिल्कुल स्पष्ट है कि वह पुरुष बड़ा विशेष और महान था। इस शब्द चित्र से हम अंदाज़ लगा सकते हैं कि वह पुरुष याजकीय वस्त्रों से सुशोभित था।

फिर यूहन्ना ने देखा कि उस पुरुष के सिर के बाल ऊन सदृश श्वेत और हिम के समान उज्ज्वल थे। बाइबल युग में पक्के बाल बुद्धि और प्रताप के चिन्ह माने जाते थे। फिर उसकी आँखें आग की ज्वाला के सदृश थीं। उसके पैर ऐसे चमकदार पीतल के समान थे जो भट्टी में तपाकर चमकाया गया हो। उसकी वाणी महा-जलनाद जैसी थी। वह ऐश्वर्यपूर्ण और पवित्र था।

उसे दाहिने हाथ में सात तारे थे, उसके मुख से दोधारी तेज़ तलवार निकलती थी परमेश्वर के वचन की दोधारी तलवार से तुलना की जाती है देखें इब्रानियों 4:12 जो भीतर तक छेद देती है; यह वचन अधिकारपूर्ण वचन है।

ूहन्ना ने उस पुरुष का मुह ऐसा देखा, जैसे दोपहर के समय सूर्य पूर्ण प्रताप के
चमकता है। उसका संपूर्ण व्यक्तित्व आग की ज्वाला के समान ज्योतिर्मय था।
प में कहें तो वह महिमापूर्ण पुरुष था।

जब यूहन्ना ने उसे देखा तो मृतक के समान उसके पैरों पर गिर पड़ा। वह अत्यन्त
भीत हो गया और समझ न सका कि क्या देखता है। वह इतना महिमापूर्ण पुरुष
कि यूहन्ना सोच बैठा होगा यदि वह ज्यादा देर उसको और देखेगा तो शायद वह
ही जाएगा, इसलिए वह उसके पैरों में गिरकर अपने प्राण दान मांगने लगा होगा।

ूहन्ना को भयभीत देखकर वह पुरुष जिसे यूहन्ना दर्शन में देख रहा था, उसके
ट आया और अपना दाहिना हाथ उस पर रखकर बोला, "भयभीत न हो मैंने मृत्यु
जीत लिया है, मैं मर गया था और देख, मैं युगानुयुग जीवित हूं, मृत्यु और अधोलोक
कुंजियाँ मेरे पास हैं" (पद-17-18)। अब यूहन्ना का भय उस प्रतापी पुरुष की
स्थिति में जाता रहा।

जिस पुरुष को उस दिन यूहन्ना ने दर्शन में देखा था वह अपने पूर्ण प्रताप में प्रभु
मसीह था। यीशु के ही पास मृत्यु और अधोलोक की कुंजियाँ हैं। वह हमारे शत्रु
ढ़कर सामर्थी है। यूहन्ना के लिए और एशिया की सातों कलीसियाओं के लिए
बात अत्यन्त उत्साहवर्धक रही होगी। प्रभु यीशु मसीह ने अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान
मृत्यु और अधोलोक की कुंजियाँ प्राप्त कीं; उसने मृत्यु व अधोलोक दोनों को
जीत लिया। चूंकि उसने मृत्यु और अधोलोक को जीता है, इसलिए वे भी उसके
में मृत्यु और अधोलोक को जीत सकते हैं।

स अध्याय के अंतिम पद में विश्वासियों के लिये एक और शांतिदायक बात पाई
है। यूहन्ना ने हमारे प्रभु को दीपदानों के मध्य अपने दाहिने हाथ में सात तारे
हुए देखा।

पद 20 हमें बताता है, सात तारे सात कलीसियाओं के दूतों के प्रतीक हैं। स्वर्गदूत
ंवाहक होते हैं इसलिए यह संभव हो सकता है कि ये सात तारे इन सात कलीसियाओं
पास्टरों को प्रकट करते हैं, और सात दीपदान सात कलीसियाओं को दिखाते हैं
इसलिए हैं कि संसार में ज्योति फैलाएं।

अब इन सबमें आपसी संबंध पर ध्यान दें अर्थात् ख्रीस्त, तारे (पास्टर लोग) तथा
दान (कलीसियाएं) के बीच संबंध पर। पद 13 के अनुसार यूहन्ना ने ख्रीस्त को
दानों के मध्य खड़ा देखा। याद कीजिए ये सभी कलीसियाएँ उस समय सताई
रही थीं। अतः उन्हें यह स्मरण कराने की आवश्यकता थी कि उनके सताए जाने

के समय ख्रीस्त उनके मध्य उपस्थित था। और तारे क्या उन कलीसियाओं के अ
कहां थे, वे ख्रीस्त के दाहिने हाथ में थे (पद-16)। इस से प्रकट होता है कि
को उन सातों कलीसियाओं के अगुवों की विशेष चिन्ता थी। प्रभु ने उन पास्टरों
अपने हाथ में रखा था। वे वहाँ सुरक्षित थे।

वह जो अपने दाहिने हाथ में सात तारे लिये है और वह जो सात दीपदानों के म
चलता-फिरता है आज भी हमारा परमेश्वर है उसी के पास मृत्यु और अधोलोक
कुंजियाँ हैं; वह हमारा प्रभु है। अपनी परीक्षा की घड़ी में याद रखें कि वह अभी
शासन करता है, सिंहासन पर विराजमान है, वह हमें न त्यागेगा, वह हमारे म
चलता-फिरता है और हमें अपने हाथों में लिए रहता है।

विचार-विमर्श के लिये प्रश्न :

❐ एक भाई और सहभागी के बीच क्या अन्तर होता है? ख्रीस्त की देह के सद
के लिए हम किस प्रकार से एक भाई/बहन और सहभागी दोनों ही बन स
हैं?

❐ प्रेरित यूहन्ना के एकान्त वास में ही विशेषकर परमेश्वर ने उससे बातचीत
किस प्रकार परमेश्वर परीक्षाओं या क्लेशों द्वारा हमारा ध्यान अपनी ओर आक
करके हमें अपने समीप लाता है?

❐ महिमान्वित ख्रीस्त के प्रति यूहन्ना की क्या प्रतिक्रिया थी? आपके लिये ख
यीशु क्या महत्व रखता है?

❐ इस पाठ में यीशु को मृत्यु और अधोलोक की कुंजियाँ लिये हुए चित्रित कि
गया है। आपको इस बात से कैसा प्रोत्साहन मिलता है कि उसके पास मृत्यु
अधोलोक की कुंजियाँ हैं।

❐ पाठ में यीशु को दीपदानों के मध्य चलता-फिरता और सात तारे अपने हाथ
लिए हुए चित्रित किया गया है। तारों और दीपदानों का क्या अर्थ है, वे क्या प्र
करते हैं? आज यह चित्रण आपको किस प्रकार प्रोत्साहन प्रदान करता है

प्रार्थना के विषय :

❐ प्रभु से सहायता मांगें कि आप अपने चहुँ ओर के विश्वासी भाई/बहनों के
भाई (या बहन) तथा सहभागी बन सकें।

परमेश्वर का धन्यवाद दीजिए उन क्षणों के लिए जबकि आपके दुखों व कष्टों द्वारा आपका ध्यान परमेश्वर की ओर लगा।

प्रभु की महिमा और वैभव के लिए उसका धन्यवाद दीजिए। धन्यवाद दीजिए कि महाप्रतापी और वैभवशाली होने पर भी वह हम में रुचि लेता है, और हमारी देखभाल करता है।

प्रभु का धन्यवाद दीजिए कि उसके पास मृत्यु और अधोलोक की कुंजियाँ हैं। धन्यवाद दीजिए कि हमारी जिन्दगी और मौत उसी के हाथों में है। धन्यवाद दीजिए कि एक दिन आएगा जब वह शैतान और उसके दूतों को अनन्तकाल तक के लिए अथाह कुंड में डाल देगा।

कुछ क्षण निकालिये कि प्रभु का धन्यवाद दे पाएं कि वह हमारे मध्य चलता-फिरता है और हमें अपने हाथों में सुरक्षित रखता है। धन्यवाद दीजिए कि वह न तो हमें धोखा देता है और न ही हमें छोड़ता है (व्य.वि. 31:6)।

अध्याय **3**

इफिसुस की कलीसिया

(पढ़ें प्रकाशितवाक्य 2:1-7)

एक समर्पित मसीही होने के नाते हमारे सामने एक भारी परीक्षा यह आती है कि प्रभु की सेवा में इतने लीन हो जाते हैं कि स्वयं प्रभु की ओर हमारा ध्यान नहीं। हकीकत तो यह है कि हमारा धार्मिक उन्माद और हमारी विभिन्न कलीसियाई विधियाँ हमारे विश्वास की दुर्बलता का कारण बन जाती हैं। संसार में असंख्य विश्वासीगण शत्रु शैतान की इस परीक्षा में पड़कर अपने कार्यों या अपनी परम्पराओं निभाने में आनन्दित रहते हैं। हमारी परम्पराएं और धार्मिक कर्मकाण्ड हमारे जीवन आत्मिक भूख-प्यास और हमारे खालीपन को भरने के लिये पर्याप्त नहीं हैं। अवश्य कि हमारा संपूर्ण ध्यान प्रभु यीशु मसीह में रहे। अपनी गतिविधियों में उलझ कर यीशु को भूल जाना बड़ा ही सरल होता है। इफिसुस की कलीसिया में यही परीक्षा थी।

यूहन्ना ने इफिसुस की कलीसिया के दूत को (अर्थात् वहां के पास्टर को) जो कलीसिया का प्रतिनिधि था, यह पत्र लिखा। ध्यान दीजिए, यह पत्र उसकी ओर जा गया, ''जो अपने दाहिने हाथ में सात तारे लिए है, और जो सात स्वर्ण दीपदानों मध्य चलता-फिरता है'' (पद-1)। हम इस पुरुष के विषय में अध्याय एक में चुके हैं। यह पुरुष स्वयं यीशु ख्रीस्त है जो अपने लोगों के मध्य चलता-फिरता उन्हें अपने हाथों में सुरक्षित रखता है।

इफिसुस की कलीसिया के इस पत्र में प्रभु यीशु उनके कार्यों, उनके परिश्रम और के धैर्य की प्रशंसा करता है। आइये अब हम इन तीनों शब्दों पर विस्तार से अध्ययन

पहली बात : प्रभु ने इफिसुस की कलीसिया के कार्यों को देखा। यूनानी भाषा जो शब्द कार्य के लिए यहां प्रयुक्त हुआ है वह ऐसे शानदार कार्य को प्रकट करता जो किसी कलाकार द्वारा किया गया हो। वह कार्य जो परिश्रम के साथ किया गया

हो और स्पष्ट दिखाई दे; जो कठिन परिश्रम का फल है। इफिसुस की कलीसि के लोगों का कार्य भी ऐसा ही था जिसे यदि कोई देखे तो वह तुरन्त यही क कि ये लोग बड़े कुशल और विश्वासयोग्य सेवक हैं। हमें यह नहीं पता कि ये कि प्रकार के कार्य थे, पर यही बताया जाता है कि वे अपने आस-पड़ोस के लोगों सच्ची सेवा करते थे।

दूसरी बात : फिर इफिसुस की कलीसिया के परिश्रम की प्रभु प्रशंसा करता यूनानी भाषा का जो शब्द यहाँ प्रयुक्त हुआ है वह ऐसे परिश्रम को प्रकट करत जिसमें ऊंचे दर्जे का परिश्रम हो और साथ में कठिनाईयाँ या परीक्षाएँ भी हों। इफि की कलीसिया के लिए जीवन-यापन करना सरल नहीं था। उन्हें प्रभु के लिए जी जीने में बहुत सी कठिनाईयों का सामना करना पड़ता था। सताव होने का भय ह रहता था। ख्रीस्त के लिए समर्पित बने रहने के लिए कड़े परिश्रम की आवश्य पड़ती थी। प्रभु यीशु ने उनकी संघर्षपूर्ण अवस्था को देखा।

तीसरी बात, इफिसुस की कलीसिया की उनके धैर्य के लिये प्रशंसा की गई। धै क्या होता है? बिना मार्ग से हटे विश्वासयोग्य बने रहने की योग्यता को धैर्य या धै कहते हैं। यह किसी व्यक्ति विशेष की वह विशेषता है जिसके द्वारा वह अपने मक में कायम रहता है चाहे उसके सामने कितनी ही बाधाएं क्यों न आएं। इफिसुस कलीसिया की यही स्थिति थी। वे प्रभु और उसकी महिमा के लिए समर्पित थे। उन्हें रोक नहीं सकता था कि विश्वासयोग्य न रहें।

इफिसुस की कलीसिया के सामने बहुत सारी परीक्षाएँ व प्रलोभन थे। पद-2 ब है कि कलीसिया को ऐसे झूठे शिक्षकों का सामना करना पड़ा था जो इफिसु आकर अपने आप को प्रेरित कहते थे; परन्तु कलीसिया ने उन्हें परखा और उन्हें पाया। उन्हें इस बात के लिये भी सराहा गया है कि उन्होंने नीकुलइयों की शिक्ष कार्यों से घृणा की थी। हमें नीकुलइयों के बारे में अधिक जानकारी नहीं है पर इतना जरूर जानते हैं कि वे सत्य वचन का प्रचार नहीं करते थे। कहाँ त्रुटि पाई है, इफिसुस की कलीसिया इसे अच्छी तरह पहचानने योग्य थी। उन्होंने उन त्रुटि झूठी शिक्षाओं का परित्याग किया और परमेश्वर की सच्चाई के पक्ष में खड़े रहे। उ इस कार्य से उनके विषय में बहुत कुछ जाना जा सकता है। यह वह कलीसिया जो झूठ और सच का अन्तर बाखूबी पहचानती थी। यह वह कलीसिया थी जो की खोजी और सत्य की प्रचारक थी।

पद-3 में प्रभु पहचान लेता है कि इफिसुस की कलीसिया ने उसके कारण

ख सहा और धैर्य रखा। वे निराश और हताश नहीं हो गए और न ही अपने संघर्ष थके। प्रभु के द्वारा कहे गए इन प्रशंसा के वचनों से इफिसुस की कलीसिया की त सी अच्छी बातें पता चलती हैं। आज ऐसी ही अनेकों कलीसियाओं की मसीही ाज को आवश्यकता है।

तौभी, प्रभु को इफिसुस की कलीसिया के विरुद्ध एक बात कहनी थी। पद 4 प्रभु ने कहा, ''तू ने अपना पहला सा प्रेम छोड़ दिया है।'' यह कैसे हो सकता कि इफिसुस जैसी कलीसिया अपना पहले जैसा प्रेम छोड़ दे? ऐसा हो ही नहीं कता था! क्या इस कलीसिया का धैर्य और इसका परिश्रम यह साबित नहीं करता यह कलीसिया प्रभु से प्रेम रखती थी। क्या यह संभव है कि वह कलीसिया जो द्धान्तिक रूप से खरी शिक्षा पर चलने वाली और प्रभु के लिए दुख सहने वाली , अपना पहला सा प्रेम छोड़ दे? परन्तु वचन में जो कुछ लिखा है उससे तो यह ष्ट है कि ऐसा होना न केवल संभव है पर अक्षरशः इफिसुस की कलीसिया में ा ही हुआ था। उसने अपना पहले जैसा प्रेम त्याग दिया था। बहुत से ऐसे जोड़े थवा नव-दंपत्ति हमें मिल जाएंगे जो अपने विवाह के वायदों में सच्चे और समर्पित । उन्होंने कभी सपनों में भी एक दूसरे के प्रति विश्वासघात करने का विचार तक ीं किया। अपने पारिवारिक जीवन में एक दूसरे के लिए समर्पित रहे। वैवाहिक जीवन परेशानियों का सामना करने के लिए तत्पर रहे। उनका दृढ़ विश्वास रहा कि मजबूत वाहिक जीवन समाज के निर्माण की महत्वपूर्ण कुंजी होते हैं। हालांकि वे जोड़े अपने थियों के प्रति विश्वासयोग्य होते हैं। तौभी उनका पहले जैसा प्रेम जाता रहता है। नकी चमक धूमिल पड़ जाती है। उनका जीवन दैनिक क्रिया बनकर रह जाता है। पहले के समान आपसी संगति के आनन्द में बने नहीं रहते। वे रहते तो विश्वासयोग्य परन्तु उनके बीच एक दूसरे लिए आकर्षण और आनन्द लोप हो जाता है।

अनेकों कलीसियाओं की आज यही दशा दिखाई देती है। आप सच्चाई के प्रति नके समर्पण में उनको दोषी नहीं ठहरा सकते। जैसा कि अभी हमने उस वैवाहिक ड़े के विषय में बताया है, उनका भी व्यवहार दैनिक क्रिया बनकर रह गया है। प्रभु से अधिक अपनी दैनिक क्रियाओं और परम्पराओं के प्रति ज्यादा समर्पित हो ए हैं। परमेश्वर हमारे प्रेम से रहित दैनिक क्रिया-कलापों और परम्पराओं के प्रति हमारे मर्पण को नहीं बल्कि हमारे हृदयों को चाहता है।

क्या आप प्रभु से प्रेम करते हैं? मैं यह नहीं पूछ रहा हूँ कि क्या आप अपनी कलीसिया सिद्धान्तों से प्रेम रखते हैं, और न ही मैं यह पूछ रहा हूँ कि क्या आप अपनी कलीसिया

के कार्यों के प्रति समर्पित है, और न ही मैं यह जानना चाहता हूँ कि क्या आप र
ख्रीस्त के लिए दुख उठाने को तैयार हैं? मेरा साधारण सा प्रश्न यह है कि क्या
स्वयं यीशु से प्रेम करते हैं? क्या यीशु आपके ह्रदय व विचारों का केन्द्रीय पात्र
क्या आप अपनी कलीसियाई शिक्षाओं व सिद्धान्तों से अधिक यीशु से प्रेम रखते
क्या आप अपनी कलीसियाई गतिविधियों से अधिक उसे प्रेम करते हैं? क्या
यीशु के लिए किए गए अपने कार्यों से अधिक यीशु से प्रेम रखते हैं? सिद्धान्त
अच्छे होते हैं पर ख्रीस्त उनसे भी अच्छा है। ख्रीस्त की दुल्हिन होने के नाते कली
सुन्दर है परन्तु ख्रीस्त निश्चय ही ज्यादा सुन्दर है।

सम्भव है, आपको ख्रीस्त से प्रेम रखना मामूली सी बात जान पड़े परन्तु प्रभु
दृष्टि में यह हल्की सी बात नहीं, यह इतनी गम्भीर बात है कि प्रभु को कहना
कि यदि इफिसुस की कलीसिया ने यह नहीं पहचाना कि वह किस ऊंचाई से
है और पश्चाताप नहीं किया तो वह उसका दीपदान हटा देगा (पद-5)। जब ख
दीपदान हटा देगा तो प्रकाश जाता रहेगा।

अधिकांश कलीसियाएँ आज शैतान के प्रलोभन में फंसकर ख्रीस्त से अधि
ख्रीस्त संबंधित क्रिया-कलापों से प्रेम करने लगी हैं। ख्रीस्त से प्रेम करने के ब
वे सिद्धान्तों और कलीसियाई परम्पराओं से प्रेम करने की परीक्षा में पड़ चुकी हैं
कलीसियाई बातें चाहे जितनी भी आवश्यक और महत्वपूर्ण क्यों न हों, हमें
ख्रीस्त के प्रति प्रेम और भक्ति से विचलित करने वाली नहीं बनने देना चाहिए।
कलीसियाएं स्वयं ख्रीस्त से अधिक अपनी परम्पराओं, अपनी सैद्धान्तिक शिक्षाओं
मसीही कार्यों को महत्व देती हैं वे मूर्तिपूजा की दोषी हैं। उनका प्रकाश शीघ्र ज
रहेगा। उनका दीपदान हटा दिया जाएगा।

प्रभु का मन उसके अपने लोगों की संगति का प्यासा है। वह चाहता है कि उ
लोग अन्य सब वस्तुओं से अधिक उसी से प्रीति रखें। वह नहीं चाहता कि आप
से अधिक किसी और बात से प्रेम रखें। इफिसुस की कलीसिया बड़ी अच्छी कली
थी। वह सताव सहने वाली कलीसिया थी, उसने विश्वास की रक्षा की थी, प्रभु के सा
साथ वह चलती थी, तौभी केवल एक बात में वह चूक गई; उसने ख्रीस्त यीशु
अधिक अन्य बातों से प्रेम किया। अत: सावधान रहिये, इस प्रकार के जाल में न फंसि

इफिसुस की कलीसिया को चुनौती देते हुए प्रभु ने पत्र को समाप्त किया, ''जि
कान हों, वह सुन ले कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता है'' (पद-7)।
सुनना और आज्ञापालन करना था। जो जय पाए उन्हें जीवन के वृक्ष में से जो परमे

ह स्वर्ग में है, खाने का अधिकार मिलना था। जीवन के वृक्ष के बारे में हम क्या जानते हैं? उत्पत्ति 3:22-24 हमें बताता है, इस वृक्ष में अनन्त जीवन देने की सामर्थ थी। इफिसुस की कलीसिया से प्रतिज्ञा की गई कि जो जय पाएगा उसे अनन्त जीवन प्राप्त होगा। इफिसुस की कलीसिया को प्रभु से प्रेम करने के क्षेत्र में जय पानी थी। वे लोग प्रभु से अधिक अपनी सैद्धान्तिक शिक्षाओं और मसीही कार्यों से प्रेम करने की परीक्षा में पड़े हुए थे। उन्हें इसी परीक्षा में जय पाकर ख्रीस्त को अपने हृदय का ध्यान-केन्द्र बनाना था। हमें भी यही काम करने की जरूरत है।

विचार-विमर्श के लिये प्रश्न :

- इस पाठ में हमारे पास कौन सा प्रमाण है जिसके आधार पर हम कह सकें कि इफिसुस की कलीसिया प्रभु की सेवा करने में गम्भीर थी?
- इस पाठ में कौन सी बात यह प्रकट करती है कि इफिसुस की कलीसिया सत्यता की रक्षा करने में गम्भीर थी?
- प्रभु की दृष्टि में प्रेम की घटी पाया जाना, गंभीर विवाद का विषय क्यों था? वास्तव में कौन सी बात प्रभु की दृष्टि में महत्व रखती है, इस बारे में हमें क्या बात पता चलती है?
- यदि इफिसुस की कलीसिया फिर से प्रभु को प्रेम न करने लगती तो नष्ट हो जाती। क्या यह बात आज भी कलीसियाओं के लिये सत्य है? समझाइये।
- क्या आप अन्य सब वस्तुओं से अधिक प्रभु यीशु से प्रीति रखते हैं?

प्रार्थना के विषय :

- प्रभु से अनुग्रह माँगें कि आप उसकी सेवा कर सकें और उसके वचन की सच्चाईयों का दृढ़ता से पक्ष ले सकें।
- प्रभु से क्षमा मांगें कि आपने उस से अधिक उसके कार्यों से और उसकी सच्चाईयों से प्रीति रखी।
- प्रार्थना करें कि परमेश्वर आपकी कलीसिया को पुनर्जीवित करे ताकि वह फिर से जान पाए कि प्रभु को जानने का आनन्द कैसा होता है।

अध्याय **4**

स्मुरना की कलीसिया

(पढ़ें प्रकाशितवाक्य 2:8-11)

मसीही होने के नाते, हम अपनी परिस्थितियों पर विजय प्राप्त कर सकते हैं। उसकी योजनाओं को अपने जीवनों में पूरा करते समय जिन दुखों का हम सामना करते हैं परमेश्वर उन्हें अपनी योजना की पूर्ति में प्रयोग कर लेता है। वह सदैव प्रत्येक परिस्थिति को अपने नियंत्रण में रखता है। हालांकि कभी-कभी ऐसा प्रतीत होता है कि हमारा शत्रु लड़ाई जीत रहा है, पर तौभी हमें भरोसा रखना चाहिये कि परमेश्वर हमें हारने नहीं देगा।

स्मुरना की कलीसिया को उसकी ओर से पत्र लिखा गया ''जो प्रथम तथा अंतिम है, जो मर गया था, और अब जी उठा है।'' हम इस व्यक्ति से प्रकाशितवाक्य 1:17-18 में भी भेंट कर चुके हैं। प्रभु यीशु मसीह ने मृत्यु पर जय पाई थी। पर हमें याद रखना चाहिये कि उस समय सभी कलीसियाएँ घोर यातनाएँ सह रहीं थीं। उन घोर यातनाओं के दौरान ऐसे व्यक्ति की ओर से जिसने मृत्यु पर जय पाई हो, पत्र प्राप्त करना निश्चय ही उनके लिए बड़े उत्साह का कारण रहा होगा।

प्रभु यीशु स्मुरना की कलीसिया के क्लेशों और दरिद्रता को जानता था। जब प्रभु ने इफिसुस की कलीसिया से बातचीत की थी तो उसने उनके परिश्रम पर दृष्टि डालते हुए कहा था कि वह उनके कार्यों, परिश्रम और धैर्य को जानता है (2:2)। यहाँ स्मुरना की कलीसिया में प्रभु ने उनके क्लेशों पर दृष्टि की। यह शब्द इफिसुस की कलीसिया के कष्टों से कहीं अधिक घोर संकटों और सतावों की ओर संकेत करता है। यहाँ जिस शब्द का अनुवाद दरिद्रता किया गया है वह यूनानी भाषा में ऐसे व्यक्ति का चित्र प्रस्तुत करता है जो इतना कंगाल हो गया हो कि भीख मांग कर गुजारा करता हो।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि स्मुरना की कलीसिया के लोग ख्रीस्त के कारण निर्धन बन गए थे। इतिहास में यह वह समय था जब मसीहीयत को अच्छी दृष्टि से नहीं

देखा जाता था। मसीही लोगों को विचित्र शिक्षाओं का पालन करने वाला संगठन समझा जाता था, इसी कारण उन्हें सताया जाता था। कुछ टीकाकारों का मानना है कि स्मुरना के मसीहियों को उनके विश्वास के कारण लूट लिया जाता था और उनकी संपत्ति छीन ली जाती थी। उनके साथ घोर अन्याय किया जाता था।

प्रभु उनके विषय में कहता है कि वे अपनी दरिद्रता के बावजूद धनवान हैं। भौतिक रूप से तो उनके पास कुछ नहीं, तौभी आत्मिक दृष्टि से वे सम्पन्न हैं। हमारे विश्वास की अद्‌भुत विशेषता यह है कि यह हमारी भौतिक परिस्थितियों से कहीं अधिक बढ़कर मूल्यवान है। हमें सताया जा सकता है, घोर दरिद्रता में रखा जा सकता है, हर कमी घटी हमें हो सकती है पर तौभी हम सबसे अधिक सन्तुष्ट लोग कहलाए जा सकते हैं।

मसीह में हमें परिस्थितियों पर विजय प्राप्त हो सकती है। परिस्थितियों पर जय पाने का सबसे प्रभावशाली प्रमाण हमें प्रेरितों के काम अध्याय 6 में स्तिफनुस का मिलता है। उसके विश्वास के कारण यहूदी लोग उसे घसीटते हुए नगर के बाहर ले गये ताकि उसे पत्थरवाह करके मार डालें। जब वे उसे पत्थरवाह कर रहे थे तो उन्होंने उसका मुंह स्वर्गदूत के सदृश प्रकाशमान देखा। स्तिफनुस की दृष्टि स्वर्ग की ओर लगी थी। उसने प्रभु यीशु को परमेश्वर के दाहिनी ओर खड़े देखा। वह बड़ा आनन्दित था कि वह प्रभु के साथ निवास करने के लिए जा रहा है। हालांकि वह शारीरिक रूप से घोर यातना में था, तौभी स्तिफनुस के हृदय में आनन्द और परमेश्वर की शान्ति थी। स्मुरना की कलीसिया भी परिस्थितियों पर अपनी विजय के संबंध में पूर्णतः आश्वस्त थी। यद्यपि वे भौतिक रूप से विभिन्न प्रकार के संकटों में थे तथापि वे आत्मिक आनन्द और शान्ति से भरपूर थे। अपने दुखों के माध्यम से वे प्रभु की निकटता में खींच लिए गये थे।

स्मुरना की कलीसिया पर दरिद्रता के रूप में सताव आया। यह सताव उन लोगों को बदनाम करने के द्वारा भी उन पर आया। पद 9 में प्रभु कहता है कि वह उन सब निन्दा करने वाली बातों को जानता है जो लोग उनके विषय में कहते हैं। यहूदियों द्वारा कलीसिया की बदनामी की जा रही थी। वे स्मुरना की कलीसिया की निन्दा करते समय क्या शब्द बोला करते थे, यह तो हम नहीं जाते पर इतना जरूर निश्चय से कह सकते हैं कि जो भी बातें वे बोलते थे वे उनके लिए अत्यन्त पीड़ादायक थीं और उस इलाके में कलीसिया के हित में नहीं थीं। हम केवल उन झूठी बातों का अनुमान ही लगा सकते हैं जो विश्वासियों के नाम को कलंकित करने के लिए वे गढ़ा करते थे।

हम बता चुके हैं कि जो लोग स्मुरना की कलीसिया के विश्वासियों की निन्दा करते थे वे यहूदी लोग थे। ध्यान दीजिए कि प्रभु उन यहूदियों के बारे में क्या कहता है। पद 9 के अनुसार प्रभु कहता है वे निन्दा करने वाले अपने आप को यहूदी तो कहते हैं, पर यहूदी हैं नहीं। उनकी राष्ट्रीयता यहूदी हो सकती है पर वे विचारों में और हृदय में यहूदी नहीं हो सकते। सच्चा यहूदी वह होता है जो परमेश्वर से प्रेम रखता है। पर इन यहूदियों में परमेश्वर के प्रति प्रेम नहीं था, वे परमेश्वर के बैरी थे, वे शैतान के सभाघरों के सदस्य थे। वे शैतान की शिक्षा पर चलते और उसी की सेवा करते तथा उसी के लिए जीवित थे।

पद 10 में प्रभु ने स्मुरना की कलीसिया से उन क्लेशों से भयभीत न होने के लिए कहा जो उन पर आने वाले थे। प्रभु ने उन सतावों और संकटों को दूर नहीं कर दिया। जैसा कि उसने अय्यूब के दिनों में किया था, शैतान को अनुमति दे दी कि उन्हें परखे। प्रभु ने कलीसिया को बता दिया कि शैतान उनमें से अनेकों को बन्दीगृह में डलवा देगा। पद 10 से ऐसा भी आभास होता है कि कुछ व्यक्तियों को अपने विश्वास के कारण मरना भी पड़ सकता है। फिर भी, ध्यान दीजिए कि सताव की सीमा निर्धारित है। पद 10 हमें बताता है कि सताव दस दिन तक रहेगा। परमेश्वर ने शैतान की सीमा बांध रखी है। अय्यूब के साथ शैतान केवल वह सब कुछ ही कर सका था जिसकी अनुमति परमेश्वर ने उसे दी थी। परमेश्वर उनकी सहन शक्ति से बाहर उन्हें दुख में नहीं पड़ने दे सकता था।

परमेश्वर ने स्मुरना की कलीसिया के सम्मुख प्राण देने तक विश्वासी रहने की चुनौती रखी। यदि उनके प्राण सताव सहते सहते चले भी जाएं तौभी उन्हें विश्वासी रहना है-उन्हें जीवन का मुकुट दिया जाएगा। यह उन्हें उसकी ओर से प्राप्त होगा "जो मर गया था, और अब जी उठा है।" संत पौलुस इस जीवन के मुकुट के विषय 1 कुरिन्थियों 9:25 में क्या कहते हैं, उस पर ध्यान दीजिए, "प्रत्येक खिलाड़ी सभी प्रकार का संयम रखता है, वह तो नष्ट होने वाले मुकुट की प्राप्ति के लिए यह सब कुछ करता है, परन्तु हम नष्ट न होने वाले मुकुट के लिए करते हैं।"

स्मुरना की कलीसिया के विश्वासियों से परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की, कि "जो जय पाए, उसे दूसरी मृत्यु से कोई हानि न होगी।" यह दूसरी मृत्यु क्या है? पवित्रशास्त्र दो प्रकार के जन्मों की शिक्षा देता है। पहला जन्म शारीरिक जन्म होता है जिसके द्वारा हम संसार में प्रवेश करते हैं। दूसरा जन्म आत्मिक जन्म होता है जिसके द्वारा हम परमेश्वर की सन्तान बनते हैं। शारीरिक मृत्यु हम जानते हैं, इसमें मृत्यु होने पर हमारा न्याय किया जाएगा। जिनके नाम जीवन की पुस्तक में लिखे नहीं पाए गए उन्हें आग की

झील में, परमेश्वर की उपस्थिति से अलग, डाल दिया जाएगा; यही दूसरी मृत्यु कहलाती है। प्रकाशितवाक्य 20:14 इसे स्पष्ट कर देता है:

"मृत्यु और अधोलोक आग की झील में डाले गए। यह आग की झील दूसरी मृत्यु है।"

स्मुरना की कलीसिया के सामने प्राण देने तक विश्वासी बने रहने की चुनौती थी। उनकी शारीरिक मृत्यु ही उनका अन्त नहीं थी। उन्हें अपनी विश्वासयोग्यता के माध्यम से जीवन का मुकुट आग की झील के दण्ड से बचाना था, जो परमेश्वर द्वारा ठहराया गया दण्ड है।

स्मुरना की कलीसिया सताव सहने वाली और क्लेशों का सामना करने वाली कलीसिया थी। परमेश्वर ने उन्हें स्मरण कराया कि वह उनके क्लेशों और दरिद्रता को जानता है और वह उनकी सहायता के लिए उनके निकट है। उनकी पीड़ाओं में वह उन्हें भूला नहीं है। उसने उन्हें प्रोत्साहित किया वे क्लेशों से डरें नहीं पर धीरज रखें और विश्वासी रहें। जो विश्वासी रहेगा वह अनन्त जीवन का प्रतिफल पाएगा।

विचार-विमर्श के लिये प्रश्न :

- ❒ स्मुरना की कलीसिया को उसकी ओर से पत्र लिखा गया था जो मर गया था और अब जी उठा है। हमारा प्रभु परमेश्वर हमें कभी भी ऐसी परीक्षाओं व क्लेशों में नहीं पड़ने दे सकता है जिसका उसने स्वयं सामना न किया हो और जयवन्त न हुआ हो; आपको इस बात से कैसा प्रोत्साहन मिलता है?
- ❒ हमने देखा कि स्मुरना की कलीसिया दरिद्रता में रह रही थी। क्या हमारे लिए प्रभु की यही योजना है कि हम सदा भौतिक रूप से सम्पन्न रहें और हमें कोई परेशानी न हो?
- ❒ विश्वासी जन होने के नाते क्या हमारे लिए यह संभव है कि हम परेशानियों में और क्लेशों में भी आनन्दित जीवन जी सकें?
- ❒ हमें इस बात से कैसा प्रोत्साहन प्राप्त होता है कि परमेश्वर ने शैतान की सीमा बांध रखी है, ताकि वह हमारी अधिक हानि न कर सके?
- ❒ दूसरी मृत्यु का क्या अर्थ है? क्या हम इस मृत्यु से बच सकते हैं? यदि बच सकते हैं, तो बताएँ कैसे बच सकते हैं?

प्रार्थना के विषय :

- प्रभु का धन्यवाद दीजिए कि वह जानता है कि हम किन क्लेशों का सामना कर रहे हैं और वह हमारी दुर्बलताओं को भी जानता है।
- प्रभु से अनुग्रह माँगें कि आप कठिन परिस्थितियों में भी विश्वासयोग्यता के साथ उसके संग संग चल सकें।
- प्रभु से सहायता माँगें कि आपकी आँखें आपकी भौतिक संपदा पर नहीं बल्कि उसी की ओर लगी रहें। प्रार्थना करें कि आपको भी स्तिफनुस की भाँति स्वर्ग का स्पष्ट दर्शन मिले जबकि वह सताया जा रहा था।
- प्रभु का धन्यवाद दीजिए कि उसने आपको दूसरी मृत्यु की हानि से बचाया है। प्रार्थना कीजिए कि आप अपने उन मित्रों और प्रियजनों को सुसमाचार सुना सकें जो प्रभु को अभी तक नहीं जानते हैं।

अध्याय 5

पिरगमुन की कलीसिया

(पढ़ें प्रकाशितवाक्य 2:12-17)

हम जानते हैं कि हमारा शत्रु शैतान बड़ा ही धोखेबाज़ है। वह धोखेबाज़ी और चालाकी ने का गुरु है। यदि हम निरंतर अपनी चौकसी न करते रहें तो वह हमें पछाड़ देगा। गमुन की कलीसिया ने निरंतर अपनी चौकसी नहीं की। उन्हें जागृत रहकर इस का ज्ञान होना चाहिए था कि उनके मध्य में क्या हो रहा है।

पिरगमुन की कलीसिया को उसकी ओर से पत्र लिखा गया "जिसके पास तेज़ ारी तलवार है" (पद 12)। जिस व्यक्ति के पास यह तेज़ दोधारी तलवार है उससे प्रकाशितवाक्य 1:16 में भी भेंट कर चुके हैं। यह तेज़ दोधारी तलवार जो उसके न का प्रतीक है, उसके अर्थात् यीशु के मुख से निकलती दिखाई देती है।

दोधारी तलवार के रूप में यह वचन बड़ा ही शक्तिशाली वचन है। इसी वचन के संसार रचा गया। उसका यही वचन उन लोगों का न्याय करेगा और उन्हें दोषी ाएगा जो अपने पापों में पड़े रहेंगे। पद 16 में प्रभु ने पिरगमुन की कलीसिया से ा, "पश्चात्ताप कर, अन्यथा मैं शीघ्र तेरे पास आ रहा हूं और अपने मुख की तलवार उन से युद्ध करूंगा।" अर्थात् उनके पापों का न्याय किया जायेगा।

प्रभु ने अपने पत्र के आरम्भ में कलीसिया को याद दिलाया कि वह जानता है वे लोग कहाँ रहते हैं वे ऐसे स्थान पर रहते हैं जहाँ शैतान का सिंहासन है (पद)। उनका नगर शैतान की गतिविधियों का केन्द्र था। टीकाकार बताते हैं, पिरगमुन सम्राट-पूजा का केन्द्रीय स्थान था। यहां पर सरकारी उच्चाधिकारी और प्रशासक भी रहा करते थे। संभव है कलीसिया पर सताव के निर्णय, यहीं इसी नगर में जाते हों।

पिरगमुन नगर में रहना सरल कार्य नहीं था। संपूर्ण नगर में शैतान के कार्य स्पष्ट जा सकते थे। हमें अन्तिपास नामक एक व्यक्ति के मारे जाने के शैतानी कार्य

के बारे में बताया जाता है। हम इस व्यक्ति के बारे में ज्यादा जानकारी नहीं पाते केवल इतना ही हमें पता चलता है कि यह व्यक्ति ख्रीस्त के कारण पिरगमुन नग में मारा गया। उसके विषय में वचन बताता है कि वह प्रभु का विश्वस्त साक्षी थ (पद 13)। पिरगमुन नगर में जो जो शैतान की गतिविधियाँ चल रही थीं, उनका एक उदाहरण अंतिपास का मारा जाना था।

घोर सताव के बावजूद पिरगमुन की कलीसिया के विश्वासी प्रभु के प्रति विश्वासयोग रहे। प्रभु कहता है, ''तू मेरे नाम पर स्थिर रहता है, और तू ने मुझ पर विश्वास कर से इंकार नहीं किया।'' प्रभु इसके लिए उनकी प्रशंसा करता है।

तौभी पिरगमुन की कलीसिया के विरुद्ध प्रभु दो बातें कहता है। उस कलीसि में कुछ लोग बिलाम की शिक्षा को और नीकुलइयों की शिक्षा को मानते थे।

हमारे पास नीकुलइयों के विषय में कोई विस्तृत जानकारी नहीं है। प्रकाशितवाव 2:6 में इफिसुस की कलीसिया के संबंध में भी उनका उल्लेख किया गया है। इफिसु की कलीसिया ने इस नीकुलई समूह की शिक्षा व कार्यों से घृणा की, परन्तु पिरगमु के विश्वासी ऐसा नहीं कर सके और कुछ लोग इनकी बुरी शिक्षाओं को मानने लग

पिरगमुन की कलीसिया के अन्य लोग बिलाम की शिक्षा पर चलने लगे। गिन नामक पुस्तक से हमें पता चलता है कि बालाक ने इस्राएलियों को शाप देने के लि बिलाम से आग्रह किया था (गिनती 23:11)। परन्तु परमेश्वर ने बिलाम को रोक दि और शाप नहीं देने दिया, फिर जब बिलाम ने मोआब देश छोड़ा तो इस्राएली लो मोआबी स्त्रियों के साथ व्यभिचार के पाप में पड़ गए। उन स्त्रियों ने उन्हें मूर्तिपू के पाप में भी डाल दिया (गिनती 24:25-25:3)। आगे चलकर परमेश्वर ने इस्राए छावनी में महामारी भेज दी। हम गिनती 31:16 में पढ़ते हैं कि इन मोआबी स्त्रि को बिलाम ने ही परामर्श दिया था। हालाँकि बिलाम ने इस्राएलियों को बालाक कहने पर शाप नहीं दिया था, पर तौभी मोआबी स्त्रियों को उसके गलत परामर्श इस्राएलियों को व्यभिचार और मूर्तिपूजा के पाप में गिरा दिया और संपूर्ण इस्राएल जा को परमेश्वर के दण्ड के अधीन कर दिया।

पिरगमुन की कलीसिया के अनेकों सदस्य बिलाम की शिक्षा पर चलने लगे थ गिनती नामक पुस्तक के संदर्भों के आधार पर हम कह सकते हैं कि बिलाम ने बाला को सिखाया था कि किस प्रकार इस्राएलियों को पाप की ओर आकर्षित किया ज सकता है और उन्हें पाप में गिराया जा सकता है। मोआबी स्त्रियों के माध्यम से उस यह कार्य किया। इन स्त्रियों ने इस्राएलियों को मूर्तिपूजा में सहभागी किया और अप

िक रीति विधियों के अनुसार व्यभिचार में भी उन्हें लिप्त किया। पिरगमुन की ीसिया के अनेकों सदस्य भी इसी प्रकार के अन्य जातीय धार्मिक रीति-विधियों अनैतिक बातों, मूर्तिपूजा और व्यभिचार में पड़ गए थे। प्रभु ने कलीसिया को चेतावनी क यदि उन्होंने पश्चात्ताप नहीं किया तो वह उनका न्याय करेगा और अपने मुख तलवार से उनसे युद्ध करेगा।

। पाप हमारे जीवन से दूर कर दिए गए हैं, ऐसा महसूस करना बड़ा सरल बात ौभी हम धोखा न खाएँ और ऐसा न सोचें कि कलीसिया में रहकर हम इनसे क्षत रहेंगे। हम व्यभिचार और मूर्तिपूजा जैसे घृणित पाप आज कलीसिया में बढ़ते देखते हैं। मूर्तिपूजा जैसा पाप हमारी कलीसियाओं से बिल्कुल भी दूर नहीं हुआ अनेकों बार हम अपनी परम्पराओं, अपनी शिक्षाओं, अपने धन, अपने काम-धन्धे वेश्राम समय को बहुत अधिक महत्व देते हैं और उनकी पूजा करते हैं। बिलाम परामर्श बड़ा ही धोखे से भरा परामर्श है, यह चुपके से हमारी कलीसियाओं में । कर जाता है। हम सबको इससे सावधान रहने और अपनी निरंतर जाँच करते की आवश्यकता है कि कहीं हम इसकी पकड़ में तो नहीं आ गये हैं।

ाभु ने पिरगमुन की कलीसिया से कहा जो जय पाएगा उसे वह गुप्त मन्ना में से और उसे एक श्वेत पत्थर भी दिया जाएगा। (पद-17)। आइये हम संक्षेप में इन वस्तुओं पर विचार करें।

रमेश्वर ने जंगलों में अपनी प्रजा को मन्ना खिलाया था। यूहन्ना रचित सुसमाचार अध्याय में कुछ लोगों ने यीशु से चिन्ह की माँग की ताकि उस चिन्ह को देखकर स पर विश्वास कर सकें (6:30)। उन्होंने मन्ना के समान, जिसे उनके पूर्वजों रमेश्वर की ओर से जंगलों में खाया था, कोई चिन्ह देखने की माँग की। उत्तर हुए यीशु ने उनसे कहा कि वह स्वयं ही वह रोटी है जो स्वर्ग से उतरकर आई 6:35)। जिस मन्ना की तलाश में वे लोग थे वह मन्ना स्वयं वही था। इस कथन म समझ सकते हैं प्रभु यीशु स्वयं ही वह गुप्त मन्ना है। जो धीरज से क्लेशों सामना करते और जयवन्त होते हैं उनका प्रतिफल वे स्वयं ही हैं।

वेत पत्थर की जहाँ तक बात है, तो इस संबंध में अनेकों अर्थ लगाए गए हैं। टीकाकार कहते हैं कि श्वेत पत्थर दिया जाना उस न्याय प्रक्रिया की ओर संकेत ा है जिसमें किसी व्यक्ति का न्याय किया जाता है और जब वह निर्दोष निकलता प्रमाण के तौर पर उसे श्वेत पत्थर दिया जाता है कि वह निर्दोष है। वह पत्थर की निर्दोषता का प्रमाण होता है। श्वेत रंग सामान्यत: पवित्रता का रंग माना जाता है। श्वेत को अपने पास रखने वाले व्यक्ति के लिए वह उसकी क्षमा का प्रतीक होता था।

फिर ध्यान दीजिए, हम पढ़ते हैं कि उस श्वेत पत्थर पर एक नया नाम लि होगा। किसी व्यक्ति का नाम उसके चरित्र को प्रकट करता है। नाम का नया हो यह दिखाता है कि जिस व्यक्ति के पास श्वेत पत्थर है, वह न केवल क्षमा कर दि गया है पर साथ ही उसका चरित्र व स्वभाव भी बदल गया है और नया हो गया

फिर पद 17 में हम न केवल यही पढ़ते हैं कि जय पाने वालों को गुप्त म में से दिया जाएगा, एक श्वेत पत्थर दिया जाएगा जिस पर एक नया नाम लिखा हु होगा, पर साथ ही यह भी पढ़ते हैं कि जिसे प्राप्त करने वाले के अतिरिक्त अ कोई नहीं जानेगा। नया नाम केवल वही व्यक्ति जानेगा, इससे ज्ञात होता है कि य एक व्यक्तिगत बात है। इस नए चरित्र और नए स्वभाव का आनन्द और उसकी परिपूर्ण केवल वही व्यक्ति अनुभव कर सकेगा और परमेश्वर ही इस बात को जानेगा। कार्य परमेश्वर हमारे जीवन में करता है वह पूर्ण रूप से व्यक्तिगत होता है, हृदय गहराईयों में होता है।

पिरगमुन की कलीसिया ऐसे नगर में स्थित थी जो शैतान की गतिविधियों का के था। विश्वासी होने के नाते कभी कभी हम भी ऐसी ही भयानक परिस्थितियों में र हैं। ऐसी परिस्थितियों में परमेश्वर हमेशा ही हमें परीक्षाओं और संघर्षों से बचाता न रहता है। पिरगमुन की कलीसिया में कुछ लोग उन परीक्षाओं में स्थिर न रह पा दृढ़ता से उनका सामना न कर पाए और अपने इर्द-गिर्द पाए जाने वाले पापों और प्रलोभ में गिर गए। तौभी अन्य लोग धीरज से उन परीक्षाओं और पापों का सामना करके जयव रहे और श्वेत पत्थर पाया, जो परमेश्वर की ओर से उनके लिए अनुमोदन का प्रतीक थ

विचार-विमर्श के लिये प्रश्न :

- ❐ पिरगमुन को शैतान की गतिविधियों का केन्द्रीय स्थान कहा गया है। पिरग राजनैतिक केन्द्र था। शैतान किस प्रकार अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिये राजनैति शक्तियों का प्रयोग करता है?
- ❐ आपके नगर में शैतान के कार्यों के कौन कौन से प्रमाण पाए जाते हैं?
- ❐ आपके समाज की कलीसिया किस प्रकार शैतान की परीक्षाओं का सामना क रही है? क्या विश्वासी शैतान की बातों में पड़ गए हैं?
- ❐ बिलाम को हम मोआबियों को यह सिखाते हुए पाते हैं कि किस प्रकार व्यभि और अनैतिकता द्वारा इस्राएलियों को परीक्षा में डाला जा सकता है। क्या अ

हमारी कलीसियाओं में भी व्यभिचार और अनैतिकता गंभीर समस्याएँ बन गई हैं? समझाइये।

- आपके जीवन में परमेश्वर कौन से कार्य कर रहा है? वह कैसे आपका चरित्र व स्वभाव बदल रहा है?

प्रार्थना के विषय :

- अपने जीवन में शैतान की परीक्षाओं का सामना करने के लिए प्रभु से अनुग्रह माँगें।
- दुष्टता और पाप से लिप्त इस संसार में विश्वासयोग्य और धीरजवन्त बने रहने के लिए परमेश्वर से अनुग्रह माँगें।
- बुरे विचारों और बुरे कामों से दूर रहने की सामर्थ के लिए प्रार्थना करें।
- अपनी कलीसिया के लिए कुछ क्षण प्रार्थना करें कि परमेश्वर कलीसिया को अनुग्रह प्रदान करे ताकि वह शैतान की परीक्षाओं का दृढ़ता से सामना कर सके।
- परमेश्वर का धन्यवाद करें कि वह व्यक्तिगत रीति से आपके जीवन में कार्य करता है। धन्यवाद करें कि परमेश्वर उन लोगों को प्रतिफल देता है जो धीरज से परीक्षाओं का सामना करते हैं।

अध्याय **6**

थूआतीरा की कलीसिया

(पढ़ें प्रकाशितवाक्य 2:18-29)

क्या कभी आपने कोई सिद्ध कलीसिया देखी है? ऐसा जान पड़ता है कि कलीसिया ाहे कितनी भी अच्छी क्यों न हो, उसमें त्रुटियाँ पाई ही जाती हैं। थूआतीरा ऐसी त्रुटियों अछूती कलीसिया नहीं थी, उसमें भी त्रुटियाँ विद्यमान थीं।

थूआतीरा की कलीसिया को परमेश्वर के पुत्र की ओर से पत्र लिखा गया ''जिसकी ाँखें अग्नि-ज्वाला, और जिसके पैर चमकते पीतल के सदृश'' थे। यह चित्रण प्रभु ाशु का है जिसका दर्शन यूहन्ना प्रेरित ने प्रकाशितवाक्य 1:14-15 में किया था।

थूआतीरा की कलीसिया में जो कुछ हो रहा था उसकी सारी जानकारी प्रभु को ी। उसने इस कलीसिया की छह मुख्य सकारात्मक विशेषताएँ बताईं। हम संक्षेप में न सभी छह विशेषताओं पर चर्चा करेंगे।

पहली विशेषता : प्रभु ने थूआतीरा की कलीसिया के कामों को देखा। उनके काम नके विश्वास के अनुसार थे। हालांकि यह नहीं बताया गया है कि वे काम किस कार के थे, तौभी यह बात स्पष्ट है कि यह कलीसिया व्यावहारिक रूप से प्रभु ाशु की आज्ञानुसार विश्वासपूर्ण कार्य करती थी।

दूसरी विशेषता : इस कलीसिया की दूसरी विशेषता यहाँ प्रेम बताया गया है। ह प्रेम किसके प्रति है? ऐसा जान पड़ता है कि यह प्रेम आपसी प्रेम के साथ-साथ भु के प्रति भी है। जब यीशु से पूछा गया था कि सबसे बड़ी आज्ञा कौन सी है? ब उसने मत्ती 22:37-39 में इस प्रकार जवाब दिया था :

''तू प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सारे हृदय और अपने सारे प्राण और अपनी ारी बुद्धि से प्रेम कर। और इसी के समान दूसरी आज्ञा यह है कि तू अपने

पड़ोसी से अपने समान प्रेम कर।'' थूआतीरा की कलीसिया ने इसी प्रकार के प्रेम का प्रदर्शन किया।

तीसरी विशेषता : थूआतीरा की कलीसिया विश्वास का भी आदर्श थी। उन्होंने अपना भरोसा अपने प्रभु परमेश्वर में और उसके वचन में रखा और अपने भरोसे और वचन के पालन करने में समर्पित रहे, भले ही वे पूरी रीति से परमेश्वर के मार्गों को न जानते हों।

चौथी विशेषता : थूआतीरा की कलीसिया की चौथी विशेषता उनकी सेवा थी। यूनानी भाषा में जो शब्द यहाँ प्रयुक्त हुआ है, उससे अंग्रेज़ी शब्द 'डीकन' निकला है। यह एक ऐसे व्यक्ति का गुण है जो दूसरे व्यक्ति की सेवा करता है। डीकन कलीसिया का वह व्यक्ति होता था जो कलीसिया की व्यावहारिक आवश्यकताओं की देखभाल करता था। प्रभु ने इस कलीसिया की सेवा पर ध्यान दिया कि ये कितनी अच्छी तरह एक दूसरे की सेवा करते हैं और एक दूसरे की आवश्यकताओं को पूरा करते हैं।

पाँचवीं विशेषता : थूआतीरा की कलीसिया धैर्य रखने वाली कलीसिया थी। उसके विश्वासीगण प्रभु के प्रति और उसके अभिप्रायों के प्रति प्रत्येक बाधाओं और क्लेशों के होते हुए भी समर्पित थे। उनका धैर्य रखना उनकी कठिन परीक्षा की ओर संकेत करता है। थूआतीरा की कलीसिया ने अपने विश्वास के कारण संघर्ष किया। वे उन परीक्षाओं में प्रभु के नाम को लेते रहे और समर्पित रहे।

छठवीं विशेषता : अंत में ध्यान दीजिए कि थूआतीरा की कलीसिया विकास करने वाली या बढ़ने वाली कलीसिया थी। उनकी बढ़ोत्तरी गिनती में नहीं पर उनकी गुणवत्ता में थी। पद 19 से ज्ञात होता है कि उनके ''वर्तमान कार्य विगत कार्यों से बढ़कर'' थे। प्रश्न पूछा जा सकता है कि वर्तमान में वे कौन से बड़े कार्य कर रहे थे? इस प्रश्न का एक संभव उत्तर यह हो सकता है कि जो आज्ञा प्रभु ने इस पत्र में उन्हें दी थी और जो प्रभु उन से अपेक्षा रखता था उससे बढ़कर वे कार्य कर रहे थे। वे विश्वास के और अधिक काम कर रहे थे। वे प्रभु के प्रति और एक दूसरे के प्रति और अधिक प्रेम प्रकट करने लगे थे। वे अपने विश्वास में बढ़ रहे थे। वे एक दूसरे की और अधिक सेवा करने लगे थे और वे अपने विश्वास में और अधिक धैर्यवान बन गए थे। क्या ये सब बातें हमारे विषय में कही जा सकती हैं? हालांकि थूआतीरा की कलीसिया में अनेकों सकारात्मक विशेषताएं पाई जाती थीं तौभी वह कलीसिया एक सिद्ध कलीसिया नहीं थी। थूआतीरा की कलीसिया में एक त्रुटि यह थी कि उन्होंने ''उस स्त्री इज़ेबेल'' को अपने मध्य रहने दिया था।

यह स्त्री इज़ेबेल कौन थी? संदर्भ सहित पढ़ने से ज्ञात होता है कि यह स्त्री वह थी जिसने मूर्तियों की पूजा और व्यभिचार के लिए विश्वासियों को भटकाया था। यही पाप प्रकाशितवाक्य 2:14 में बिलाम ने करवाया था। पहला राजा नामक पुस्तक में हम पढ़ते हैं कि इज़ेबेल एक दुष्ट रानी थी। उसने परमेश्वर की सन्तानों को मूर्तिपूजा और व्यभिचार की ओर आकर्षित किया। चूंकि इज़ेबेल इस्राएल और यहूदा राज्यों की सबसे दुष्ट रानी थी, इस कारण उसका नाम मूर्तिपूजा, व्यभिचार और दुष्टता का प्रतीक बन गया। थूआतीरा की कलीसिया इज़ेबेल जैसे आचरण की ओर आकर्षित हो गई थी। यहाँ इज़ेबेल नाम उन लोगों का प्रतीक है जो उसके समान दुष्ट कार्यों में फंस गए थे।

अब इस बात पर ध्यान दीजिए कि परमेश्वर ने थूआतीरा की कलीसिया की समस्या के प्रति क्या कदम उठाया। उसने "इज़ेबेल" और उसके अनुगामियों को पश्चात्ताप करने का समय दिया। उनके प्रति परमेश्वर की सर्वप्रथम अभिलाषा यह थी कि वे पश्चात्ताप करें। वह पश्चात्ताप देखना चाहता था। वह एक पापी के सर्वनाश से आनन्दित नहीं होता। वे चाहे जितने दुष्ट क्यों न थे, वह उन्हें क्षमा करने को तैयार था।

इज़ेबेल और उसके अनुयायियों ने पश्चात्ताप करने से इंकार किया। इसलिए परमेश्वर ने कहा मैं उसे दण्ड दूंगा। परमेश्वर क्रोध से भर गया और यह स्वाभाविक था। हम पढ़ते हैं, आगे परमेश्वर कहता है "मैं उसे रोग-शय्या पर डालूँगा और उसके बालकों को महामारी से मारूँगा।"

इज़ेबेल और उसके पीछे चलने वालों को दण्ड देने का परिणाम क्या होगा? पद-23 हमें बताता है कि "सारी कलीसियाओं को ज्ञात हो जाएगा कि मनों और हृदयों को जाँचने वाला मैं ही हूँ।" परमेश्वर से कोई बात छिपी नहीं रह सकती है। वह सब कुछ जानता है। इज़ेबेल और उसके अनुगामी शायद सोचते होंगे कि वे गुप्त में अपने कुकर्म करते रहेंगे और कोई उन्हें जान नहीं पाएगा। संभव है कलीसिया के अन्य सदस्य भी इन लोगों के कार्यों से अन्जान हों; लेकिन जब इज़ेबेल और उसके साथी न्याय के लिए परमेश्वर के सामने खड़े होंगे तो उनके वे सब काम जो वे गुप्त में करते रहे थे प्रकट हो जाएंगे। कलीसिया उनके काम देखेगी और जान लेगी कि परमेश्वर सब बातों को जानता है चाहे वे छिप कर ही क्यों न किए गए हों। उनके साथ भी ऐसा ही हो सकता है और उनके सारे गुप्त पाप भी प्रकट हो सकते हैं।

परमेश्वर ने उन लोगों को चुनौती दी जो उसके प्रति विश्वासयोग्य रहे थे और शैतान की बातों में नहीं फँसे थे कि वे विश्वासयोग्य ही बने रहें। वह उन पर अधिक बोझ

नहीं डालता पर यही चाहता है कि वे विश्वासयोग्य ही बने रहें। (पद-24)। वह उनकी सहनशक्ति को जानता है और उतना ही करने की आज्ञा देता है जितना वह कर सकते हैं।

जय पाने वाले के लिए बड़ा प्रतिफल भी रखा है, उसे जाति जाति पर अधिकार दिया जाएगा। प्रभु के विश्वासी होने के कारण एक दिन हम प्रभु के साथ राज्य करेंगे। जगत के सारे राज्य नष्ट कर दिए जाएंगे। ध्यान दीजिए कि प्रभु उन पर लोहे के राजदण्ड से शासन करेगा। यह लोहे का राजदण्ड सामर्थ और अधिकार पूर्ण होगा जिसे कोई भी चकनाचूर न कर सकेगा।

जय पाने वालों के लिए एक और भी प्रतिफल प्रभु के पास है। यूहन्ना थूआतीरा की कलीसिया को बताता है कि जो जय पाए उसे भोर का तारा प्रदान किया जाएगा। प्रकाशितवाक्य 22:16 हमें बताता है कि यीशु मसीह ही यह भोर का तारा है। थूआतीरा की कलीसिया के जयवन्त विश्वासियों का अंतिम प्रतिफल यह था कि वे ख्रीस्त के साथ रहेंगे। इस प्रतिफल से बड़ा और कोई प्रतिफल नहीं हो सकता।

प्रभु यीशु मसीह हमें ऐसा प्रतिफल नहीं देगा जिसे हम संभाल न सकें। हम प्रभु के साथ रहने के इस अंतिम प्रतिफल को पाने का प्रयत्न करते हैं। जो प्रतिफल विश्वासियों को मिलेगा उसकी तुलना में हमारे वर्तमान समय की परीक्षाएँ और क्लेश कोई महत्व नहीं रखते। क्योंकि हम प्रभु के साथ राज्य करेंगे। हम उसे आमने-सामने देखेंगे और हमेशा उसके साथ रहेंगे। इससे बड़ा हमारा कोई लक्ष्य नहीं है।

विचार-विमर्श के लिये प्रश्न :

- ❐ थूआतीरा की कलीसिया की किन विशेषताओं का वर्णन इस पाठ में किया गया है? क्या आपमें ये गुण पाए जाते हैं?
- ❐ थूआतीरा की कलीसिया के समान क्या आप प्रभु के साथ अपनी संगति में ब[ढ़ते] हैं?
- ❐ थूआतीरा की कलीसिया में कौन सा ''गुप्त पाप'' पाया जाता था? क्या क[हीं] आपके जीवन में तो गुप्त पाप नहीं है?
- ❐ परमेश्वर सब गुप्त बातें जानता है, इस बात की जानकारी से आपके कार्यों [पर] जो आप करते हैं, क्या प्रभाव पड़ता है?

ार्थना के विषय :

- प्रार्थना कीजिए कि आप उन विशेषताओं को अपने जीवन से दिखा सकें जो थूआतीरा को कलीसिया में पाई जाती थीं।
- प्रार्थना कीजिए कि परमेश्वर आपके हृदय को जाँचे और आपके गुप्त पाप आप पर प्रकट करे।
- परमेश्वर का धन्यवाद दीजिए कि वह जानता है कि हम कितनी सहनशीलता रखते हैं और वह हमारी सहनशक्ति से बाहर हम पर भार नहीं डालता।
- प्रभु का धन्यवाद दीजिए कि वह स्वयं ही हमारा बड़ा प्रतिफल है।

अध्याय **7**

सरदीस की कलीसिया

(पढ़ें प्रकाशितवाक्य 3:1-6)

कुछ कलीसियाएँ जो जीवित तो दिखाई देती हैं, पर वास्तव में वे जीवित नहीं होतीं। यह संभव हो सकता है कि कलीसिया जीवित कलीसिया के नाम से प्रसिद्ध हो, पर वास्तव में वह आत्मिक रूप से एक मृतक कलीसिया हो। किसी कलीसिया की गतिविधियाँ और लोगों की भारी संख्या की उपस्थिति या उनकी मान्यताएँ उस कलीसिया को जीवित नहीं बनाती।

जो पत्र सरदीस की कलीसिया को लिखा गया वह उसकी ओर से था जिसके 'हाथ में सात आत्माएँ और सात तारे'' हैं। प्रकाशितवाक्य 1:20 हमें बताता है कि सात सितारे उन सात कलीसियाओं के सात दूतों के प्रतीक हैं या पास्टरों के प्रतीक हैं जो एशिया में पाई जाती थीं। और प्रकाशितवाक्य 1:4 में बताई गई सात आत्माएँ (या सात गुनी आत्मा) प्रतीक हैं पवित्रात्मा का। और सात की संख्या उसकी सिद्धता की ओर संकेत करती है।

पाठ में हम पढ़ते हैं कि प्रभु ने सात दूतों और सात आत्माओं को अपने हाथ में ले रखा है। जिस यूनानी शब्द का यहाँ प्रयोग हुआ है उसका अर्थ ''पास होना'' या 'थामें रहना'' हो सकता है। यह शब्द दो व्यक्तियों के मध्य रिश्ते को या आपस में गहरा संबंध रखने के लिए भी प्रयोग में आता है (जैसे विवाह में दो जन गहरे संबंध में आते हैं)। प्रभु परमेश्वर जिसने कलीसिया से ये शब्द कहे, वह ऐसा परमेश्वर है जो दूतों के साथ (अर्थात् पास्टरों के साथ) जो विभिन्न सात कलीसियाओं के हैं, गहरी संगति रखता है। सात आत्माओं का प्रभु के हाथों में होना यह दिखाता है कि वह आत्मा प्रभु की इच्छा के पूर्ण रूप से अधीन है। पवित्र आत्मा, प्रभु यीशु और परमेश्वर पिता के अभिप्रायों और उनकी इच्छा के अनुकूल पूर्ण आज्ञापालन में क्रियाशील होता है। इस पत्र में हम पढ़ते हैं कि प्रभु यीशु सरदीस की कलीसिया के कार्यों को

जानता है (पद-1)। यही बात हम इफिसुस और थूआतीरा की कलीसियाओं के संबंध में भी देख चुके हैं। पर यहाँ सरदीस की कलीसिया के इस विषय पर अन्तर पाया जाता है। पद-2 पर ध्यान दीजिए जहाँ प्रभु ने कहा, ''मैंने अपने परमेश्वर की दृष्टि में तेरे किसी कार्य को पूर्ण नहीं पाया।'' जो बात हमें इस पद द्वारा समझनी है वह यह है कि सरदीस की कलीसिया अपने आत्मिक जीवन द्वारा वह फल नहीं ला रही थी जिन्हें उसे लाने की आवश्यकता थी।

प्रभु ने इस कलीसिया से कहा, वे जीवित तो कहलाते हैं, लोग उन्हें फलों से लदा हुआ कहते हैं, पर वास्तव में वे मरे हुए हैं। वे ऐसे दिखाई देते हैं मानों जीवित हैं पर हैं मरे हुए। बहुत सी ऐसी कलीसियाएँ पाई जाती हैं जो अपने समाज में व सामाजिक कार्यों में बड़ी सरगर्म होती हैं। वे बड़ी कलीसियाएँ होती हैं, और बढ़ने वाली कलीसियाएँ होती हैं। हज़ारों लोगों को अपनी ओर आकर्षित करती हैं। उनकी आराधना-विधि बड़ी रोचक और लोगों को लुभाने वाली होती है और जब आप उनकी गहराईयों में जाएँ तो पाएँगे कि वहाँ बहुत कम आत्मिक उन्नति है और लोग आत्मिक रूप से अपरिपक्व होते हैं। सुसमाचार की सच्चाईयों का वहाँ सूखापन नज़र आएगा। प्रचार ऐसा किया जाता है कि किसी को बुरा न लगे। ऐसी कलीसियाओं को हम ख्रीस्त के नाम पर चलने वाले सामाजिक सेवा संगठन ही कह सकते हैं, पर ख्रीस्त केन्द्रित कलीसिया नहीं कह सकते।

सरदीस की कलीसिया से कहा गया कि वह नींद से जाग उठे और जागृत हो, और जो वस्तुएँ शेष रह गई हैं और मिटने पर हैं, उन्हें दृढ़ करे। इस कलीसिया की दशा टिमटिमाती हुई मोमबत्ती के समान थी जो किसी भी समय बुझ सकती थी। अत: उन्हें अति शीघ्र ही जागृत होना था। यदि वे तुरन्त जागृत न हुए तो उनका दीपक किसी भी समय बुझ सकता था।

फिर हम देखते हैं कि जो पुकार उन्हें दी गई वह न केवल अत्यावश्यक पुकार थी पर साथ ही उन्हें शेष बातों को तुरंत दृढ़ करने की भी पुकार थी। वे शीघ्र ही उन शेष वस्तुओं को दृढ़ नहीं कर रहे थे इसलिए ऐसा जान पड़ता है कि वे जानबूझकर सो रहे थे, उनका यह नींद में पड़े रहना उनकी मृत्यु का प्रतीक था। इस नींद के कारण उनका सारा लहू मानों उनकी नसों में से बह गया था, वे मृतक समान हो गए थे, अब वे अपनी चौकसी करने में असमर्थ हो गए थे। उनका शत्रु उनकी नींद के कारण लाभ उठा रहा था। जितना वे सोते थे उतना ही वे शैतान के हाथों में पड़ते जाते थे। हर पल इस नींद के कारण उनके हृदय की गति धीमी पड़ती जा रही थी।

ु उन्हें चिताता रहा कि वे शीघ्र जाग जाएँ। प्रभु उनसे कहता है इससे पहले कि हुत देर हो जाए भलाई इसी में है कि वे जाग उठें, नहीं तो उनका दीपक जो टिमटिमा ा है, बुझ जाएगा।

उनकी इस नाजुक हालत में प्रभु सरदीस की कलीसिया को आज्ञा देता है कि स्मरण करें कि उन्होंने कैसी शिक्षा प्राप्त की और सुनी थी। प्रभु यहाँ किस बात ी ओर संकेत कर रहा था? इस बात की ओर कि उन्होंने क्षमा करने वाले सुसमाचार ा पूर्ण सामर्थ में सुना था। उन्होंने पवित्रात्मा भी पाया था जो उनकी सामर्थ और नका ज्ञान था। उन्होंने परमेश्वर की आत्मा के वरदानों का भी अनुभव प्राप्त किया । उन्हें ख्रीस्त के राजदूत होने की बुलाहट थी। उन्हें ख्रीस्त का अधिकार दिया गया । लेकिन अब उन्होंने इन सब बातों पर गम्भीरतापूर्वक ध्यान लगाना छोड़ दिया था। ः कारण प्रभु ने उन्हें चुनौती दी कि वे स्मरण करें कि उन्होंने कैसी शिक्षा प्राप्त ी थी-और उसमें बने रहें और मन फिराएं।

अब इस बात पर ध्यान दीजिए कि यदि वे मन न फिराएँ तो इसका परिणाम क्या सकता है? प्रभु चोर के सदृश उनके पास आएगा। चोर के समान आने में दो महत्वपूर्ण तें होती हैं।

पहली बात-जब चोर आता है तब हमारा सब कुछ ले जाता है। जब प्रभु चोर के मान आयेगा तो उनका प्रकाश ले जाएगा। वे आत्मिक मृतकों के समान सामाजिक स्था बनकर सामाजिक कार्यों में लगे रह सकते हैं। उनका प्रकाश अब चमकेगा नहीं। **सरी बात**-चोर ऐसे समय आता है जब उसके आने की हमें उम्मीद नहीं होती। प्रभु अचानक आ जाएगा जबकि उन्हें उसके आने की उम्मीद भी न होगी, और प्रभु नका न्याय करना आरम्भ कर देगा।

परन्तु सरदीस की कलीसिया में कुछ ऐसे लोग थे जिन्होंने अपने वस्त्र अशुद्ध नहीं ए थे। वे श्वेत वस्त्र पहिने हुए प्रभु के साथ चलेंगे-फिरेंगे (पद-4)। श्वेत रंग प्रायः वित्रता का प्रतीक माना जाता है। आत्मिक सड़ाहट के बीच बहुमूल्य हीरे-मोती भी ल जाया करते हैं। अतः इन विश्वासी स्त्री-पुरुषों की प्रभु प्रशंसा करता है। सरदीस ी कलीसिया में यही बड़े खेद की बात रही कि वहाँ ऐसे विश्वासी लोग बहुत थोड़े थे।

पद 5 में प्रभु जय पाने वालों के लिए तीन प्रतिफलों की चर्चा करता है। **हली बात**-उन्हें श्वेत वस्त्र पहनाया जाएगा। उन्हें प्रभु की ओर से क्षमादान का आनन्द प्त होगा। उनका पापपूर्ण स्वभाव दूर हो जाएगा और नया स्वभाव प्राप्त होगा जिससे ु की महिमा प्रकट होगी।

दूसरी बात-उनका नाम जीवन की पुस्तक में से नहीं मिटाया जाएगा। उनका उद्धा होना निश्चित है। परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने के लिए कोई उन्हें रोक नहीं सकेग

अंत में **तीसरी बात**- प्रभु यीशु मसीह अपने पिता और उसके स्वर्गदूतों के सम: उनका नाम मान लेगा। वह उन्हें परमेश्वर की सन्तान कहकर पुकारने में गर्व का अनुभ करेगा। वह स्वयं व्यक्तिगत रूप से पिता के सम्मुख उनके पक्ष में निवेदन करने व लिए खड़ा होगा। उन्हें परमेश्वर के पुत्र का समर्थन प्राप्त होगा। उनके पक्ष में पुत्र व वचनों के कारण पिता के सम्मुख वे निश्चय ही स्वीकार कर लिए जाएंगे।

क्या आप आत्मिक नींद से सोने के दोषी हैं? सरदीस की कलीसिया के नाम इ पत्र द्वारा प्रभु आपको चुनौती दे कि आज नींद से जाग उठें और उसकी महिमा व कारण बन सकें।

विचार-विमर्श के लिये प्रश्न :

- ❒ आप कौन सी आत्मिक गतिविधियों में लगे हुए हैं? परमेश्वर किस प्रकार इ गतिविधियों द्वारा आपको अपने निकट ला रहा है?
- ❒ हमारे कामों के प्रति मुनष्यों के विचारों में और परमेश्वर के विचारों में क्या अन्त है? क्या यह संभव है कि समाज में लोग हमें सम्मान की दृष्टि से देखते परन्तु हम परमेश्वर की दृष्टि में सही न हों?
- ❒ हम क्यों अपने प्रति परमेश्वर के विचारों से अधिक चिंता करते हैं कि लोग हम बारे में क्या विचार रखते हैं?
- ❒ आत्मिक रूप से सोते रहने का क्या अर्थ है?
- ❒ प्रभु ने सरदीस की कलीसिया को चुनौती दी कि वह स्मरण करे कि उसने कैर शिक्षा प्राप्त की और सुनी थी? आपने प्रभु से कौन सी शिक्षाएँ प्राप्त कीं अं सुनी हैं? क्या आप उनके प्रति परमेश्वर की महिमा के लिए विश्वासयोग्य है

प्रार्थना के विषय :

- ❒ प्रभु से प्रार्थना कीजिए कि आपका हृदय उसके लिए और उसके अभिप्रायों लिए जागृत हो।

परमेश्वर से प्रार्थना कीजिए कि आप मनुष्यों की दृष्टि में अपने आचरण से अधिक इस बात की चिन्ता में रहें कि उसकी दृष्टि में आपका आचरण कैसा है?

प्रभु से प्रार्थना कीजिए कि वह आपको स्मरण कराए कि उसने कौन कौन सी बातें आपको विश्वासी के रूप में सौंपी थीं? प्रार्थना कीजिए वह सहायता करे, कि आप उन बातों द्वारा अपने जीवन में उसकी महिमा प्रकट कर सकें।

अध्याय **8**

फिलादेलफिया की कलीसिया

(पढ़ें प्रकाशितवाक्य 3:7-13)

सीही विश्वासी होने के नाते हमें इस जीवन में अनेकों प्रतिबन्धों का सामना करना ा है, पर यह बड़ा आवश्यक है कि हम सदैव स्मरण रखें कि हमारा प्रभु शासन ा है और सब कुछ उसके नियंत्रण में है। वह हमारे संघर्षों को जानता है कि हम किन समस्याओं से जूझ रहे हैं। वह हमें गहराई से जानता है। वह हमें ऐसी परीक्षा ड़ीं पड़ने देता जो हमारे सहने से बाहर हो-देखें 1 कुरिन्थियों 10:13; वह परीक्षा ाँच-पड़ताल करता है, और उसी परीक्षा को हम पर आने देता है जो हमारी सहनशक्ति नुकूल होती है और जिसमें हमारी भलाई छिपी होती है।

फलादेलफिया की कलीसिया को उसकी ओर से पत्र भेजा गया जो "पवित्र और ा है, और जिसके पास दाऊद की कुंजी" है। प्रकाशितवाक्य 1:18 में हम पाते ि प्रभु यीशु के पास मृत्यु और अधोलोक की कुंजियाँ हैं। अगर यीशु के पास और अधोलोक की कुंजियां हैं तो उसके पास स्वर्ग और जीवन की भी कुंजियाँ या यह संभव है कि दाऊद की कुंजी दाऊद के नगर की कुंजी है? दाऊद का यरूशलेम था। यरूशलेम को आमतौर पर स्वर्गीय नगरी का प्रतीक माना जाता त: प्रभु के पास स्वर्ग और जीवन की भी कुंजियाँ हैं। फिलादेलफिया की कलीसिया बड़ा संघर्ष कर रही थी, उसके लिए यह बात बड़ी उत्साहवर्धक थी। पाप के द्ध उनका संघर्ष बड़ा ही कड़ा था, परन्तु उनके प्रभु के पास अनन्त जीवन की स्वर्गीय नगरी की कुंजियाँ थीं। पाप के विरुद्ध हमारा युद्ध जितना भयंकर होगा, ही अधिक स्वर्ग प्राप्ति का हमारा निश्चय दृढ़ होगा। हमारा यह निश्चय इतना है कि कोई इसे कमज़ोर नहीं कर सकता। यीशु ने हमारे लिए स्वर्ग के द्वार खोल हैं। शैतान इस द्वार को बन्द करके हमारा प्रवेश करना नहीं रोक सकता। हम इस द्वार से स्वर्ग में प्रवेश करने की आशा और निश्चय लेकर सारी परीक्षाओं का

सामना साहस के साथ कर सकते हैं। मृत्यु का भय भी हमें विचलित नहीं कर पाए हमारे प्रभु के पास उनकी कुंजियाँ हैं, इस कारण हमें मृत्यु पर जय प्राप्त है।

ध्यान दीजिए कि प्रभु ने फिलादेलफिया की कलीसिया के लिए एक द्वार ख रखा था (पद-8)। यह कौन सा द्वार था? संदर्भ पढ़ने से पता चलता है कि फिलादेलफि की कलीसिया की सामर्थ बहुत थोड़ी थी। यह कलीसिया बड़ी कलीसिया नहीं और न ताकतवर कलीसिया थी। यह कलीसिया सरदीस की कलीसिया की तरह अधि सदस्यों वाली कलीसिया भी नहीं थी, और न ही इसे महान कलीसिया कहलाने गौरव प्राप्त था। यह कलीसिया थोड़े ही में विश्वासयोग्य रहने वाली कलीसिया

पद 9 और 10 में इसे खुले द्वार का संकेत मिलता है जिसके द्वारा हम जान स हैं कि खुले द्वार का क्या अर्थ है। फिलादेलफिया की कलीसिया ऐसे लोगों के वि संघर्ष कर रही थी जो शैतान के सभाघर के सदस्य थे। संदर्भ पढ़ने से ज्ञात होत कि ये शैतान के सभाघर के सदस्य यहूदी लोग थे जो भटका दिये गये थे और जि शैतान अपने लिए प्रयोग कर रहा था। ये लोग कलीसिया को यातनाएँ दे रहे थे। ने फिलादेलफिया की कलीसिया से कहा, मैं इन सब लोगों को बाध्य करूंगा वे एक दिन आकर तेरे चरणों में झुक जाएंगे और जान लेंगे कि मैंने तुझ से प्रेम किया

बातचीत का जैसा चित्र प्रभु ने यहाँ खींचा है उससे हमें पुराने नियम के एक यूसुफ़ का स्मरण हो उठता है। यूसुफ़ के भाईयों ने यूसुफ़ से ईर्ष्या रखी। वे अव उसका मज़ाक उड़ाया करते थे और बाद में उन्होंने उसे बेच डाला कि वह मिस्र गुलाम बना लिया जाए। परमेश्वर ने मिस्र में यूसुफ़ को उन्नत किया, उसे अधि दिया और सामर्थी बना दिया। जब उसके भाई मिस्र आकर उससे अनाज खरीदने तब उन्होंने उसे दण्डवत् किया और पहचाना कि प्रभु ने उसे आशीष दी है। फिलादेलफि की इस सताव सहने वाली कलीसिया के साथ भी ऐसा ही होने जा रहा था। दिन आने वाला था जब उन्हें सताने वाले लोग उनके सामने दीनता और नम्रता से झु और उनके जीवनों में प्रभु की रक्षा के हाथों को पहचान सकेंगे।

फिलादेलफिया की कलीसिया के लिए प्रभु ने द्वार खोल रखा है इसका अर्थ यह भी हो सकता है कि प्रभु ने उनके लिये आशीषों और प्रतिफलों का द्वार ख रखा था। यह गवाही देने का द्वार भी हो सकता है जिसे प्रभु ने खोल रखा था। उन गवाही सुनकर व देखकर उनके शत्रुओं ने पहचाना कि प्रभु ने फिलादेलफिया कलीसिया को आशीषें दी हैं। पद-10 से हम जान सकते हैं कि यह द्वार बचने भी द्वार था। कलीसिया को प्रभु ने उनकी सहनशक्ति से बाहर सतावों से बचाया।

र भी ज्यादा सताव आने का अन्देशा था किन्तु प्रभु ने उन्हें आने न दिया और कलीसिया बचाया। प्रभु उनकी दशा जानता था कि यह कलीसिया ज़्यादा मज़बूत नहीं है। ः उसने उनको सामर्थ से बाहर सतावों में नहीं पड़ने दिया।

फिर प्रभु ने फिलादेलफिया की कलीसिया से कहा, "जो कुछ तेरे पास है, उसे थे रह", उसे त्याग न दे। फिर उनसे प्रभु ने कहा "कोई तेरा मुकुट छीन न ले।" कुट एक प्रतिफल होता है जो किसी धावक को दौड़ जीत लेने के पश्चात् दिया ता है। यह मुकुट उन्हीं के लिए होता था जो अन्त तक दृढ़ रहते थे। यह मुकुट । से वे वंचित भी रह सकते थे यदि वे परिश्रम न करें और धीरज से दौड़ते नहीं । पर एक सच्चा विश्वासी ऐसा मुकुट पाता है जो मुरझाने का नहीं।

इस बात पर भी ध्यान दीजए कि जो जय पाए उसे परमेश्वर के मन्दिर में एक म्भ बनाया जाएगा (पद-12)। स्तम्भ एक स्थाई वस्तु होती है। इसी प्रकार जो जय एगा उसे स्वर्ग में स्थाई रूप से स्थापित किया जाएगा। जय पाने वाला परमेश्वर की स्थिति में उसके मन्दिर में हमेशा तक रहेगा।

फिर प्रभु ने फिलादेलफिया की कलीसिया से कहा कि वह जय पाने वालों पर । नाम लिखेगा। पहला नाम वह परमेश्वर पिता का लिखेगा, दूसरा नाम नए यरूशलेम , तथा तीसरा नाम ख्रीस्त अपना नया नाम लिखेगा। हम अपना नाम किसी वस्तु यह दिखाने के लिए लिखते हैं कि वह वस्तु हमारी है। परमेश्वर जय पाने वालों अपना नाम इसलिए लिखता है क्योंकि उन पर उसका अधिकार है, वे उसी के ने हैं। उसने उन पर नए यरूशलेम का नाम लिखा, इसलिए लिखा क्योंकि वे उस त्र नगरी के हैं। ख्रीस्त ने अपना विजयी नाम उन पर लिखा; क्यों लिखा, क्योंकि हें खरीदने और अपना बनाने के लिए उसने अपने प्राण दिए।

इस बात पर विशेष ध्यान दीजिए कि जय पाने वालों पर ख्रीस्त का जो नाम लिखा । वह ख्रीस्त का नया नाम था। प्राचीन काल में जब कोई व्यक्ति बहादुरी का काम ता था अथवा अनोखा काम करता था तो सम्राट उसके नाम के आगे 'सर' या मान' पदवी लगाने का सम्मान प्रदान करता था। इस कार्य के लिए उसको राजकीय मान भी दिया जाता था। प्रभु यीशु ने अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान द्वारा प्रत्येक युग र प्रत्येक काल के लिए एक महान कार्य पूरा किया है, परमेश्वर पिता ने इसी कारण उसे वह नाम दिया जो सब नामों में श्रेष्ठ है कि प्रत्येक घुटना उस नाम के आगे के। परमेश्वर ने यीशु के नाम को अति महान किया। संत पौलुस ने इस नाम के षय में इस प्रकार लिखा :

''इस कारण परमेश्वर ने उसको अति महान भी किया और उसको वह नाम प्र किया जो सब नामों में श्रेष्ठ है कि यीशु के नाम पर प्रत्येक घुटना टिके, चाहे स्वर्ग में हो या पृथ्वी पर या पृथ्वी के नीचे'' (फिलि. 2:9-10)।

जो नाम जय पाने वालों पर लिखा जाएगा वह विजयी यीशु ख्रीस्त का नाम हो वह ख्रीस्त का कहलाएगा जो सर्वसामर्थी प्रभु है। ख्रीस्त को उसे अपना बनाने पर होगा और तब वह अपना नया नाम उस पर लिखेगा।

प्रभु फिलादेलफिया की कलीसिया की प्रशंसा करता है क्योंकि वे विश्वासय पाए गए थे। वे दुर्बल थे, तौभी उन्होंने धीरज धरा। यह युद्ध बलवानों के लिये धा। अनेकों बलवान मसीही युद्ध में पराजित हुए हैं। हम ऐसे स्त्री व पुरुषों को ज जानते होंगे जिनकी हम बड़ी प्रशंसा करते थे, उनका बड़ा सम्मान करते थे पर में उनकी पराजय के कारण हमें आश्चर्य हुआ था। संभव है आप बाइबल का अ ज्ञान रखते हों और बाइबल के विषय में बहुत सी बातें जानते हों, आप बाइबल स्व अथवा सेमिनरी गए हों, पीढ़ियों से मसीही हों, तौभी आप किसी दुर्बल भाई के स सरलता से पराजित हो सकते हैं। मुकुट बलवानों को नहीं परन्तु जय पाने वालों दिया जाएगा। काश कि हम सब जय पाने वाले बनें।

विचार-विमर्श के लिये प्रश्न :

- ❒ दाऊद की कुंजी क्या है? प्रभु के पास ये कुंजियाँ हैं, इससे आपको धीरज में क्या प्रोत्साहन प्राप्त होता है?
- ❒ फिलादेलफिया की कलीसिया एक दुर्बल कलीसिया थी तौभी उसने प्रभु के से अपने पक्ष में प्रशंसा के वचन सुने। जबकि वे दुर्बल थे तब भी अपने में वचन सुने, ऐसा क्यों?
- ❒ फिलादेलफिया की कलीसिया के शत्रुओं के विषय में परमेश्वर ने उनसे प्रतिज्ञा की?
- ❒ जय पाने वालों पर प्रभु तीन नाम लिखेगा। वे कौन से नाम हैं और क्या दि हैं?
- ❒ क्या हमेशा ही युद्ध बलवानों के लिए होता है? फिलादेलफिया की कलीसि हमें क्या शिक्षा देती है?

ना के विषय :

उद्धार के निश्चय के लिए प्रभु का धन्यवाद दीजिए।

प्रभु से सहायता माँगें कि आप अपनी सामर्थ का प्रयोग उसकी महिमा के लिए कर सकें।

प्रभु का धन्यवाद दीजिए कि वह हमें अपना बनाता है और हम पर अपना नया नाम लिखता है।

परमेश्वर से प्रार्थना कीजिए कि जो थोड़ा आपके पास है, उसमें विश्वासयोग्य बने रहने का अनुग्रह दे।

अध्याय **9**

लौदीकिया की कलीसिया

(पढ़ें प्रकाशितवाक्य 3:14-22)

आप अपनी आत्मिक स्थिति का मूल्यांकन कैसे करेंगे? एक से दस तक की गिनती में आपका कौन सा स्थान हो सकता है? आप गर्म हैं या ठण्डे? जोशीले हैं या उदासीन? अधिकांश लोग अपने आप को इन दोनों बातों के मध्य में रखना चाहेंगे। हमारे समाज में एक आम बात लोगों में दिखाई देती है कि लोग एक मार्ग अपनाते हैं। हम अन्य सब लोगों से भिन्न कहलाना नहीं चाहते या अलग प्रकार का बनना नहीं चाहते। हम गुनगुना रहने में ही सन्तुष्ट रहना पसन्द करते हैं। लौदीकिया की कलीसिया में यही बुराई थी।

लौदीकिया की कलीसिया को उसकी ओर से पत्र लिखा गया जो ''आमीन, विश्वासयोग्य और सच्चा गवाह और परमेश्वर की सृष्टि का मूल कारण'' है। हम जानते हैं कि वह कौन है, वह यीशु मसीह है।

यहाँ प्रभु यीशु मसीह को 'आमीन' कहा गया है। अपनी बात को दृढ़ करने के लिये आमीन शब्द का प्रयोग किया जाता है। जब हम 'आमीन' कहते हैं तो इसका अर्थ है आप उस बात को सत्य मान रहे हैं और उस पर छाप लगा रहे हैं कि वह बात विश्वासयोग्य है। यीशु आमीन है। उसकी बात पर हम भरोसा कर सकते हैं।

यीशु विश्वासयोग्य और सच्चा गवाह भी है। इसके दो प्रमाण हैं–पहला, उसने अपनी मृत्यु तक धीरज रखा। उसने कलवरी के क्रूस पर प्राण दिये। वह प्राण देने तक विश्वासयोग्य रहा। दूसरा प्रमाण, उसने जो शिक्षा दी और कहा उन सब में वह विश्वासयोग्य गवाह रहा। उसके वचन सत्य थे जिन पर हम अपना भरोसा रख सकते हैं।

यीशु मसीह सृष्टि का मूल भी है, उसका शासन है, क्योंकि वह अन्त तक विश्वासयोग्य रहा था इसीलिए परमेश्वर ने उसे महान् किया। ख्रीस्त को वह नाम दिया गया जो

व नामों में श्रेष्ठ है। वह समस्त विश्व पर महान राजा के समान शासन करता है सलिए हर घुटना उसके आगे झुकेगा।

परमेश्वर की सृष्टि का मूल यह महान् राजा लौदीकिया की कलीसिया की परिस्थितियों परिचित है। चूंकि इस कलीसिया के लोग गुनगुने हैं इसलिए वह उन्हें अपने मुंह उगल देगा (पद-16)। लौदीकिया नगर में पीने का पानी एक गर्म पानी के सोते से आता था जो नगर से कुछ दूरी पर था। यह गर्म पानी नगर तक पहुंचते पहुंचते तो गर्म ही रहता था और न ठंडा रहता था, पर गुनगुना हो जाता था। यही दशा आत्मिक रूप से इस कलीसिया की हो गई थी।

प्रभु ने इस कलीसिया से कहा, कैसा अच्छा होता कि वे ठण्डे होते या फिर गर्म होते, चूंकि वे गुनगुने हैं इसलिए वह उन्हें अपने मुंह से उगल देगा। यीशु उन्हें गुनगुना नहीं पर ठण्डा या गर्म देखना चाहता था। मसीही कलीसिया को उन लोगों से अधिक हानि नहीं पहुंचती जो आत्मिक बातों से पूर्णतः दूर रहते हैं, पर उन लोगों से भारी हानि पहुंचती है जो कलीसिया में उत्साह रहित होते हैं।

उत्साह रहित या गुनगुने मसीहियों का एक पाँव सांसारिकता की बातों में तथा दूसरा कलीसिया में रहता है। वे दोनों संसारों के आनन्द में रहने का प्रयत्न करते हैं। उनमें पाप पर विजय पाने की शक्ति नहीं होती, वे कपटी होते हैं। वे रविवार की सुबह कलीसिया की आराधना सभा में तथा सोमवार की सुबह संसार की बुराईयों में रहते हैं। वे प्रभु के पीछे तब तक चलते हैं जब तक कोई परेशानी नहीं है। प्रभु को ऐसे अनुयायियों से कोई मतलब नहीं। वे लोग अपने कपटी जीवन से कलीसिया का नाम बदनाम करते और ख्रीस्त का अनादर करते हैं। हम या तो ख्रीस्त के पक्ष में रहें या फिर उसके विरोध में रहें। हमें निर्णय करना है कि हमें कहाँ होना चाहिये।

लौदीकिया की कलीसिया एक धनवान कलीसिया थी। वे सांसारिक धन-सम्पत्ति में धनी थे। इसी सांसारिक सम्पत्ति ने उन्हें प्रभु की संगति से दूर कर दिया था। प्रभु यीशु के प्रति उनके समर्पण में जो गुनगुनापन आ गया था, क्या उसका कारण यही धन-सम्पत्ति था? एक ओर तो यह कलीसिया भौतिक रूप से धनी थी, वहीं दूसरी ओर आत्मिक रूप से निर्धन थी। वे नहीं जानते थे कि वे अभागे, तुच्छ, दरिद्र, अन्धे और नंगे हैं। प्रभु की दृष्टि में उनकी दशा यही थी।

पद 17 में विचारों के विरोधाभास पर ध्यान देना बड़ा मनोरंजक लगता है। कलीसिया ने अपना मूल्यांकन करते समय स्वयं को धनी पाया। किन्तु जब ख्रीस्त ने उनका मूल्यांकन किया तो उन्हें दरिद्र पाया। यह बिल्कुल स्पष्ट है कि यहाँ पर कलीसिया के मूल्यांकन

ें दो स्तरों का प्रयोग किया गया है। लौदीकिया की कलीसिया ने भौतिक बातों पर ध्यान दिया था। उन्होंने देखा कि वे भौतिक संपदा और धन द्वारा आशीषित किये गए हैं। सम्भव है उनके पास बड़ी सी चर्च बिल्डिंग हो और कलीसिया के सदस्यों की संख्या भी बहुत हो। सम्भव है वे अन्य कलीसियाओं की भाँति कष्टों व बीमारियों में न हों, लोग अपनी दिन-प्रतिदिन की दिनचर्या में आनन्दित हों। इस प्रकार वे शायद सोचते थे कि उनकी कलीसिया एक अच्छी कलीसिया है।

लेकिन जब प्रभु ने इस कलीसिया पर दृष्टि की तो उनका मूल्यांकन उसी दृष्टिकोण से नहीं किया। उसने उनके हृदय पर दृष्टि डाली। उसने पाया कि उनके हृदय गुनगुने हैं और किसी एक बात के पक्ष में नहीं हैं, बल्कि बीच में हैं। कलीसियाई जीवन में वे एक सामाजिक क्लब की तरह आनन्द मनाते हैं, प्रभु के प्रति वे समर्पित नहीं हैं, आत्मिक रूप से वे दरिद्र और नंगे हैं। कलीसिया के सदस्यों पर कलीसिया का कोई प्रभाव नहीं है। उद्धारकर्त्ता की ओर लोगों को लाने का कोई प्रयास वहाँ नहीं किया जा रहा है; प्रभु यीशु के प्रेम में लोग उन्नति नहीं कर रहे थे। वे अपने बाहरी जीवन से सन्तुष्ट थे।

प्रभु ने लौदीकिया की कलीसिया की समस्याओं के समाधान के लिये तीन वस्तुएँ ख़रीदने की चुनौती दी थी। **पहली वस्तु**-आग में शुद्ध किया हुआ सोना मोल लेने को कहा। इस सोने का भौतिक संपदा से कोई सरोकार नहीं था। जो भी कोई इस सोने को खरीदता, वह आत्मिक रूप से धनी बन सकता था। वे कैसे वह सोना खरीद सकते थे? 55:1-2 में यशायाह इस विषय में इस प्रकार समझाता है:-

''हे सब प्यासे लोगों, पानी के पास आओ। और जिनके पास रुपया न हो, तुम भी आकर मोल लो और खाओ! आओ, दाखमधु और दूध बिना रुपया और बिना दाम लो। जो रोटी नहीं है उसके लिए रुपया और जिस से पेट नहीं भरता उसके लिए अपनी शक्ति क्यों गंवाते हो? ध्यान से मेरी सुनो, और जो उत्तम है उसे खाओ, तथा बहुतायत से पाकर आनन्दित हो जाओ।''

जो आशीषें ख्रीस्त लौदीकिया की कलीसिया के लिए प्रस्तुत करता है वे बिना रुपया दिए खरीदी जा सकती थीं। यदि वे उसके पास आकर पीएँ तो फिर प्यासे न होंगे। उनकी आत्मा संतुष्ट हो सकेगी। उन्हें पापों की क्षमा, शान्ति और निश्चय उस से प्राप्त हो सकेगा। जिसके पास रुपया न हो पर यह सोना उसके पास है, वही वास्तव में धनी है।

दूसरी वस्तु-लौदीकिया की कलीसिया को अपना नंगापन ढांकने के लिए श्वेत

वस्त्र खरीदने की भी आवश्यकता थी। टीकाकार बताते हैं कि लौदीकिया नगर काले ऊन के व्यापार का प्रसिद्ध नगर था, लोग अपने कपड़े इसी काले ऊन के बनाते थे प्रभु कहता है उन काले वस्त्रों का त्याग कर दो और वह श्वेत वस्त्र पहनो जो मैं तुम्हें देता हूँ। यह श्वेत वस्त्र क्षमादान और पवित्रता का वस्त्र था। सरदीस की कलीसिया का अध्ययन करते समय हम देख चुके हैं कि जो जय पाए उन्हें श्वेत वस्त्र पहनाया जाएगा (प्रका. 3:4)। प्रभु यही श्वेत वस्त्र लौदीकिया की कलीसिया को प्रदान करना चाहता है।

तीसरी वस्तु: इस कलीसिया को अपनी आँखों में लगाने के लिए सुरमा खरीदना था ताकि वे देख सकें। वे आत्मिक रूप से अन्धे थे। उनका दृष्टिकोण प्रभु के दृष्टिकोण के समान नहीं था। लौदीकिया नगर में आँखों की बीमारी व सूजन ठीक करने के लिए सुरमा बेचा जाता था। वह सुरमा उनकी आत्मिक आँखें ठीक नहीं कर सकता था। केवल प्रभु ही उन आत्मिक आँखों को स्वस्थ करने के योग्य था। यदि वे प्रभु के पास आएँ तब प्रभु उनका अंधापन दूर कर सकता था। जब प्रभु छूता है तो हम पहले के समान नहीं देखते या पहले के समान दृष्टिकोण अपनाए नहीं रखते, परिवर्तन आ जाता है। हमारी आँखें खुल जाती हैं कि हम सत्य को पहचान सकें और जीवन का अभिप्राय समझ सकें। लौदीकिया की कलीसिया को आवश्यकता थी कि उनकी आत्मिक आँखें खोली जाएं। वे ख्रीस्त को पहचानने में अन्धे थे और साथ ही यह भी नहीं जानते थे कि ख्रीस्त के सामने उनकी वास्तविक दशा कैसी है।

इस बात पर विशेष ध्यान दीजिए कि प्रभु ने लौदीकिया की कलीसिया को क्यों डांटा था। पद-19 हमें बताता है कि प्रभु उनसे प्रेम करता था इसीलिए उसने उनको डांटा था। यह सच है कि उनके गुनगुनेपन के कारण प्रभु उन्हें अपने मुंह से उगलने पर था, लेकिन तौभी उसने उन्हें छोड़ नहीं दिया था। वह धीरज के साथ द्वार पर खड़ा खटखटाता रहा। उसने उन पर दबाव नहीं डाला। वह द्वार पर ही खड़ा रहा और स्वयं उन्हें अवसर देता रहा कि वे निर्णय अपने आप करें और उसके लिए द्वार खोलें।

यदि वे द्वार खोलेंगे तभी प्रभु भीतर प्रवेश करेगा और उनके साथ संगति करेगा तब वे भी प्रभु के साथ घनिष्ट संगति का आनन्द उठा सकेंगे। इस कलीसिया में इसी संगति का अभाव था। उनके पास कलीसिया तो थी पर उसमें प्रभु नहीं था, उसके साथ संगति नहीं थी। अब उनके लिए वह समय आ पहुंचा था कि वे अपना हृदय खोलें और प्रभु को अन्दर आने का निमंत्रण दें।

अनेकों बार देखा गया है कि कलीसियाएँ अपने सिद्धान्तों में, अपनी सेवकाई में और अपनी परम्पराओं में इतनी व्यस्त रहती हैं कि उनका ध्यान प्रभु यीशु की ओर नहीं जाता। कुछ कलीसियाएँ तो यहाँ तक भी कहती हैं कि यीशु के विषय में किसी को अधिक उत्साहित नहीं होना चाहिये। अपनी निर्धारित रीति, विधियों और धार्मिक कार्यों के कारण वे यीशु के प्रति भक्ति रखने और यीशु को अधिकाधिक जानने से ध्यान हटा लेते हैं, उनका ध्यान यीशु की ओर जाता ही नहीं, और यीशु कलीसिया के द्वार पर अन्दर आने की अभिलाषा लिए खड़ा रहता है।

लौदीकिया की कलीसिया को चुनौती दी गई कि वह अपने हृदय का द्वार खोले और प्रभु को अन्दर आने दे ताकि प्रभु उनके साथ संगति कर सके। यदि वे प्रभु को अन्दर आने देंगे तो उन्हें उसके साथ स्वर्ग के सिंहासन पर बैठने का सम्मान प्राप्त होगा। उनकी गुनगुनेपन की दशा के होते हुए भी, उनके लिए आशा थी। प्रभु ने अभी तक उन्हें छोड़ नहीं दिया था। उसने उन्हें एक और अवसर दिया था।

हो सकता है आपकी भी दशा लौदीकिया की कलीसिया के समान हो। प्रभु, आज आपको पुकार रहा है कि आप अपने हृदय का द्वार खोलें और उसे आमंत्रित करें, वह आप में ज्वाला भड़का देगा और आपकी आत्मा में जीवन फूंक देगा। पर ध्यान दें, वह आप पर दबाव नहीं डालेगा। वह धीरजवन्त होकर आपके हृदय का द्वार खटखटाता ही रहेगा। क्या आप द्वार खोलकर उसे आमंत्रित नहीं करेंगे?

विचार-विमर्श के लिये प्रश्न :

- गुनगुना मसीही बनकर जीवन व्यतीत करना क्यों सरल कार्य होता है? आज आप अपनी आत्मिक दशा का मूल्यांकन कैसे करेंगे?
- आज कलीसिया में गुनगुना होना क्यों भयंकर बात है? गुनगुने विश्वासियों से कलीसिया को कौन कौन सी हानियाँ हो सकती हैं?
- क्या कभी आपने ऐसा सोचा है कि जब कलीसिया बड़ी और धनवान थी तो बड़ी अच्छी थी? एक स्वस्थ कलीसिया कैसी होती है?
- प्रभु लौदीकिया की कलीसिया के बाहर खड़ा था, आप ऐसी कल्पना क्यों करते हैं? आपकी कलीसिया में किन बातों ने लोगों के मन और हृदय में अधिकार कर रखा है? इन सब बातों में यीशु कहाँ है?

र्थना के विषय :

1. प्रभु से प्रार्थना करें कि आपकी आँखें खोली जाएं कि आप प्रभु की दृष्टि में अपनी आत्मिक दशा को पहचान सकें।
2. प्रभु से क्षमा मांगें कि उससे संबंध रखने में आप गुनगुने रहे।
3. प्रभु से क्षमा मांगें कि आपने प्रभु को अपने हृदय से बाहर खड़ा रखा जबकि प्रभु ही आपके हृदय के ध्यान का केन्द्र होना चाहिए था। प्रभु से कहें कि वह आप पर प्रकट करे कि आपके जीवन में किन-किन बातों ने अधिकार कर रखा है।

अध्याय 10

स्वर्गीय सिंहासन का स्थान

(पढ़ें प्रकाशितवाक्य-4)

क्या कभी आप ऐसी कल्पना करके विस्मित हुए हैं कि स्वर्ग कैसा होगा? चौथे अध्याय में प्रेरित यूहन्ना हमें स्वर्गीय सिंहासन के स्थान की एक झलक दिखाता है। जब वह पतमुस नामक टापू में था तो उसने एक आवाज़ सुनी जो उसे पुकार रही थी। वह आवाज़ तुरही के शब्द की भाँति बहुत तेज़ आवाज़ थी। उसने पहचान लिया कि वह तो वही आवाज़ है जो उसे पहले भी प्रकाशितवाक्य 1:10 में सुनाई दी थी और उसने उससे बातें की थीं। जब यूहन्ना ने आँखें उठाकर देखा तो उसे एक खुला हुआ द्वार नज़र आया। तब उस आवाज़ ने उसे ऊपर बुलाया और उससे कहा कि वह उन बातों को देखेगा जो भविष्य में घटने वाली हैं।

हम इस अध्याय में पढ़ते हैं कि जब यूहन्ना ने आवाज़ सुनी थी तो उस समय वह आत्मा में था। यह स्पष्ट है कि प्रभु का आत्मा यूहन्ना पर इसीलिए आया था कि उसे वे बातें दिखाए जो भविष्य में घटने वाली हैं। प्रेरित यूहन्ना दर्शन में उठा लिया गया, (प्राचीन काल में अनेकों भविष्यद्वक्ता भी इसी प्रकार दर्शनों में उठा लिए गए थे) ताकि वह उन बातों को देख सके जो कोई भी मनुष्य देख नहीं सकता। यहेजकेल भविष्यवक्ता भी इसी प्रकार यरूशलेम नगर का दर्शन देखने के लिए ले जाया गया था (यहे. 40:1-20)।

यूहन्ना स्वर्गीय सिंहासन के स्थान पर लाया गया। जो सिंहासन पर बैठा था वह यशब और माणिक्य के समान दिखाई देता था। यशब एक प्रकार का पारदर्शी पत्थर होता है। यह ऐसी वस्तु है जो पारदर्शी है और उसमें अपवित्रता नहीं है। यह सिंहासन पर बैठे हुए की सिद्धता का भी प्रतीक हो सकता है कि वह कैसा सिद्ध है। माणिक्य एक प्रकार का लाल पत्थर होता है। कुछ टीकाकार इस पत्थर के विषय में बताते हैं कि यह गहरे लाल रंग का या आग के समान लाल होता है, लाल रंग आमतौर

र लहू या आग के समान होता है। लहू पाप की कीमत चुकाए जाने को दिखाता है, और आग परमेश्वर की पवित्रता और उसके न्याय दंड का प्रतीक माना जाता है। इस प्रकार ये कीमती पत्थर उस व्यक्ति की पवित्रता, न्याय और शुद्धता की ओर संकेत करते हैं जो सिंहासन पर बैठा है।

यूहन्ना ने सिंहासन के चारों ओर एक मेघ-धनुष को भी देखा। यहेजकेल नबी ने भी अपने दर्शन में इसी प्रकार का मेघ-धनुष देखा था (यहे. 1:27-28)। यहेजकेल ने अपने दर्शन में इसी धनुष से बातें की थीं क्योंकि यह धनुष उस परमेश्वर की महिमा का प्रतीक था जो उस समय सिंहासन पर बैठा था।

''जैसे वर्षा के दिन बादल में धनुष दिखाई पड़ता है, उसी प्रकार चारों ओर का प्रकाश दिखाई पड़ता था। यह यहोवा के तेज के समान दिखाई देता था। जब मैंने उसे देखा तो मैं मुंह के बल गिर पड़ा और मैंने किसी को कहते हुए सुना'' (यहे.1:28)।

यह भी ध्यान देने की बात है कि पुराने नियम में यह धनुष उस वाचा का भी प्रतीक है जो परमेश्वर ने नूह के साथ बांधी थी (उत्पत्ति-9)। जब जब भी आकाश में यह धनुष दिखाई दिया, तब तब लोगों ने परमेश्वर की प्रतिज्ञा को याद किया। अतः यहां सिंहासन के चारों ओर दिखाई देने वाला धनुष उसकी विश्वासयोग्यता को जो सिंहासन पर बैठा था, दिखाता है कि वह अपनी प्रतिज्ञाओं को पूरा करने वाला परमेश्वर है।

सिंहासन के चारों ओर चौबीस प्राचीन थे। ये सभी चौबीस प्राचीन श्वेत वस्त्र पहिने थे तथा उनके सिर पर सोने के मुकुट थे। यह चौबीस की गिनती बड़ी अर्थपूर्ण गिनती है। क्या ये 24 प्राचीन जो अपने अपने सिंहासन पर विराजमान थे, इस्राएल के 12 गोत्रों के प्रधानों और नए नियम के 12 प्रेरितों का प्रतिनिधित्व करते हैं? यदि यह सही बात है तो ये सभी चौबीस प्राचीन दोनों नए और पुराने नियम के परमेश्वर के लोगों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

फिर हम पढ़ते हैं कि ये प्राचीन श्वेत वस्त्र पहने हुए थे जो इस बात को दिखाता है कि उन्होंने जय पाई थी। प्रभु ने प्रकाशितवाक्य 3:5 में सरदीस की कलीसिया से कहा था, ''वह जो जय पाए, उसे श्वेत वस्त्र पहिनाया जाएगा।'' उनके श्वेत चोगे उनकी शुद्धता के प्रतीक थे। उनके मुकुट उनकी विजय का प्रतीक थे। प्रकाशितवाक्य 2:10 में प्रभु ने स्मुरना की कलीसिया से कहा था-''प्राण देने तक विश्वासी रह-तब मैं तुझे जीवन का मुकुट प्रदान करूंगा।'' फिर प्रभु ने फिलादेलफिया की कलीसिया को 3:11 में चिताया था कि ''जो कुछ तेरे पास है, उसे थामें रह कि कोई तेरा मुकुट छीन न ले।'' ये सभी चौबीसों प्राचीन सिंहासनों पर बैठे थे, इसलिए, क्योंकि उन्होंने

जय पाई थी। वे प्राण देने तक विश्वासी रहे थे। वे उस सच्चे विश्वासी का प्रतीक थे जिसका नाम जीवन की पुस्तक में लिखा जाता है।

इसके बाद यूहन्ना ने उस सिंहासन से बिजलियाँ, गर्जन और बादलों की गड़गड़ाहट निकलते देखी। वह गर्जन की आवाज़ सुन सकता था। सिंहासन देखने में बड़ा भययुक्त प्रतीत हो रहा होगा। मूसा के दिनों में जब परमेश्वर पहाड़ पर उतरा था तब पूरा पहाड़ आग से भर गया था, आकाश में भारी गर्जन हो गई थी और बिजलियाँ चमकने लगीं थीं। परमेश्वर की जहाँ उपस्थिति होती है वहाँ ऐसा ही भयानक दृश्य हो जाता है। जिस पर्वत पर परमेश्वर उतरा था वहाँ किसी को आने की आज्ञा नहीं थी क्योंकि वह पवित्र परमेश्वर है। कोई उसके निकट सरलता से उस समय नहीं जा सकता था। उसकी उपस्थिति लोगों में भय उत्पन्न कर दिया करती थी।

फिर सिंहासन के सामने यूहन्ना ने आग के जलते हुए सात दीपक और काँच का समुद्र देखा। पुराने नियम के काल में परमेश्वर मंदिर के महापवित्र स्थान में स्थित वाचा के संदूक में रहा करता था। महापवित्र स्थान में प्रवेश करने से पहले पुरोहित बड़े हौद तथा दीपदान के बीच से गुज़रता था। निर्गमन 27:20 के अनुसार यह दीपक निरंतर परमेश्वर की उपस्थिति में जलता रहना चाहिये था। पुरोहित के लिए आवश्यक था कि वह इस्राएल के पवित्र परमेश्वर की उपस्थिति में आने से पहले उस बड़े हौद में स्नान करके अपने को शुद्ध करे तब भीतर प्रवेश करे। क्या यह हो सकता है कि यूहन्ना ने ऐसा ही दृश्य देखा हो?

पद-5 में बताया गया है कि परमेश्वर के सिंहासन के सामने आग के जो सात दीप जल रहे थे वे परमेश्वर की सात गुनी आत्माएँ थीं। हम पहले भी बता चुके हैं कि ये सात आत्माएं पवित्रात्मा की पूर्णता को दिखाती हैं। यही पवित्र आत्मा हमारे मन में परमेश्वर के भेदों को प्रकाशित करता है। इसके बिना हम परमेश्वर की उपस्थिति में नहीं जा सकते अथवा उसका दर्शन नहीं कर सकते हैं। यही पवित्रात्मा है जो हमें ख्रीस्त का दर्शन करने का ज्ञान-बुद्धि देता है।

यूहन्ना ने सिंहासन के सामने एक कांच का समुद्र या हौद भी देखा था जो स्फटिक के समान साफ़ था। इस हौद में एक विश्वासी परमेश्वर की उपस्थिति में जाने से पहले अपने आप को पाप और अशुद्धता से शुद्ध कर सकता है। उस समुद्र का पानी स्फटिक के समान स्वच्छ था। यह समुद्र परमेश्वर की सामर्थ की ओर संकेत करता है जो हमें पापों की क्षमा और शुद्धता प्रदान करने की सामर्थ रखता है। मीका भविष्यवक्ता एक ऐसे गहरे समुद्र का उल्लेख करता है जिसमें परमेश्वर हमारे पापों को डाल देता है और फिर उन्हें स्मरण नहीं करता।

''तू हम पर पुन: दया करेगा, तू हमारे अधर्मों को कुचल डालेगा, हां, तू ह
सब पापों को गहरे समुद्र में डाल देगा'' (मीका 7:19)।

फिर यूहन्ना ने सिंहासन के मध्य और उसके चारों ओर चार प्राणी देखे। इन प्राणि
के आगे पीछे आँखें ही आँखें थीं। यहेजकेल ने भी ऐसे ही प्राणी अपने दर्शन में
थे। इन चारों प्राणियों के मुंह एक दूसरे भिन्न थे। पहला प्राणी सिंह के समान
दूसरा प्राणी बैल के समान था। तीसरा प्राणी मनुष्य के समान और चौथा प्राणी उक
के समान था। इन चारों प्राणियों के छह छह पंख थे। ये प्राणी कुछ कुछ स्वर्ग
के समान थे। ये आराधना में प्राचीनों की अगुवाई कर रहे थे। ऐसा जान पड़ता है
उनका उत्तरदायित्व ही यही था कि वे आराधना के समय अगुवाई करें (पढ़ें प्र
7:14; 14:3; 19:4)।

इन चारों प्राणियों के भिन्न भिन्न चेहरों के बारे में अनेकों विचार और व्याख
की गई हैं। संक्षेप में यदि कहा जाए तो हम कहेंगे कि ये चारों प्राणी परमेश्वर
समस्त सृष्टि की महानता को दिखाते हैं। सिंह जंगली जानवरों का राजा होता है
सबसे बलवान समझा जाता है। बैल सब घरेलू पशुओं का राजा होता है जो अपने परि
के कारण मान्यता रखता है। वह दास का स्वरूप भी प्रकट करता है। मनुष्य सम
सृष्टि का शिरोमणि है। वह अपनी बुद्धि व विवेक के कारण हैसियत रखता है। अ
में उकाब पक्षी जगत का राजा होता है जो अपनी तीव्र गति एवं वेग के कारण उ
जाता है। जिस सांकेतिक भाषा में इन सब बातों को प्रस्तुत किया गया है उसे यूह
खूब अच्छी तरह समझ सकता था। ये चारों प्राणी बड़े शक्तिशाली और चालाक प्र
थे, पर जो सिंहासन पर विराजमान है उसकी तरह नहीं। उन प्राणियों में हम चार
देखते हैं- सिंह की सी शक्ति, बैल का सा निरंतर उद्योगी जीवन, मनुष्यों की बु
तथा उकाबों की सी गति। इस प्रकार ये प्राणी परमेश्वर की जीवधारी रचना का प्रतिनिधि
करते हैं।

जैसा कि हम पहले बता चुके हैं, कि चारों प्राणियों का एक बड़ा मुख्य काम
था कि वे परमेश्वर की आराधना में अगुवाई करें। इसलिए वे दिन रात परमेश्वर
स्तुति में यह कहते नहीं थकते थे, ''पवित्र, पवित्र, पवित्र, प्रभु परमेश्वर सर्वशक्ति
है, जो था, और जो है, और जो आनेवाला है'' (पद 8)।

जब जब ये चारों प्राणी, उसकी जो सिंहासन पर विराजमान और युगानुयुग जी
है, महिमा करते, उसका आदर व धन्यवाद करते थे, तब तब वे 24 प्राचीन उ
सामने जो सिंहासन पर बैठा है, गिर पड़ते थे, उसकी आराधना करते थे, और अ

ने मुकुट सिंहासन के सामने डाल दिया करते थे, जो उनके आदर करने का प्रतीक . और तब वे पूर्ण समर्पण के साथ उसकी वन्दना करते हुए यह कहते थे:

''हे हमारे प्रभु और परमेश्वर, तू ही महिमा, आदर और सामर्थ के योग्य है, क्योंकि ही ने सब वस्तुओं को सृजा, और उनका अस्तित्व और उनकी सृष्टि तेरी ही इच्छा हुई'' (प्रका. 4:11)।

वे परमेश्वर को अपना सृजनहार मानते हुए उसकी आराधना करते थे। उन्होंने अपना वन उसे सौंप दिया था। वे उसी के लिए सृजे गए थे और उसी में अपना आनन्द थे। जो बात इन प्राचीनों पर लागू थी, वही बात हम पर भी लागू होती है। हम परमेश्वर के लिए सृजे गए हैं, परमेश्वर की आराधना करने और उसी की सेवा ने में हमारे जीवनों का अभिप्राय छिपा है और केवल इसी कार्य में सच्चा अर्थ मिलेगा।

हमारे सामने उसकी महिमा का दृश्य है जो सिंहासन पर विराजमान है। यहाँ यह भी याद रखें कि इस समय यूहन्ना पतमुस में था। उसे उसके विश्वास के कारण -निकाला दे दिया गया था। सातों कलीसियाएँ भी इस समय यातनाएँ और घोर ड़ाएँ सह रहीं थीं। परमेश्वर अभी भी समस्त संसार पर अपने सिंहासन पर बैठा राज्य रहा था। सारी वस्तुएँ उसी की इच्छा से सृजी गई और उसके द्वारा ही संभाली , वही स्तुति और प्रशंसा के योग्य है। जब भी ऐसा प्रतीत हो कि हालात आपको ी कर रहे हैं, तो अपनी दृष्टि इस स्वर्गीय सिंहासन के स्थान की ओर लगाएं और रण करें कि प्रभु शासन कर रहा है और सिंहासन पर विराजमान है। स्मरण रखें एक दिन आप भी, यदि आप प्रभु के हैं, तो उस भीड़ की स्तुति प्रशंसा में शामिल ो जो सिंहासन के चारों ओर एकत्रित थी। उसकी जो सिंहासन पर बैठा है, नित्य ंसा हो।

चार-विमर्श के लिये प्रश्न :

यूहन्ना ''आत्मा में आ गया'' इसका क्या अर्थ है? क्या परमेश्वर आज भी इसी तरह कार्य करता है?

स्वर्गीय सिंहासन के चारों ओर पाए जाने वाले पत्थर हमें परमेश्वर के गुणों के विषय में क्या शिक्षा देते हैं?

स्वर्गीय सिंहासन के चारों दिखाई देने वाला धनुष हमें परमेश्वर के विषय में क्या बताता है?

- चौबीसों प्राचीनों के श्वेत वस्त्रों और उनके मुकुटों का क्या अर्थ है?
- दीपदान और समुद्र (हौद) का पानी हमें प्रभु परमेश्वर के उस कार्य के विष में क्या शिक्षा देते हैं, जिसके द्वारा हम परमेश्वर की उपस्थिति में जाने के योग बनते हैं?

प्रार्थना के विषय :

- प्रभु से प्रार्थना करें कि इस पाठ की सच्चाईयों द्वारा आप प्रोत्साहित किए जा सक प्रार्थना करें कि आप जान सकें कि प्रभु अभी भी सिंहासन पर विराजमान है अ शासन करता है।
- परमेश्वर का धन्यवाद करें कि उसने आपके लिए यह प्रबन्ध किया है कि आ पवित्रात्मा द्वारा तथा प्रभु यीशु द्वारा पापों की क्षमा देने और शुद्ध बनाए जाने द्वारा परमेश्वर की उपस्थिति में जा सकते हैं।
- प्रभु से अनुग्रह मांगें कि आप धीरज रख सकें ताकि आपको भी श्वेत वस्त्र पहना जा सके और जीवन का मुकुट आपको भी मिले।
- प्रभु का धन्यवाद कीजिए कि एक दिन आप भी परमेश्वर की महिमापूर्ण उपस्थि में स्वर्ग जा सकेंगे।

अध्याय 11

मुहरबन्द पुस्तक

(पढ़ें प्रकाशितवाक्य-5)

यहाँ स्वर्गीय सिंहासन के स्थान का दृश्य है। परमेश्वर अपने सिंहासन पर विराजमान । उसके दाहिने हाथ में एक पुस्तक है जो भीतर-बाहर लिखी हुई है। यह पुस्तक ात मुहर लगाकर बन्द की गई है। अध्याय 6 से हमें ज्ञात होता है कि इस बन्द पुस्तक ं परमेश्वर के न्याय और उसकी योजना का वर्णन था जो उसने पृथ्वी के लिये ठहराई ी। हम विस्तार से इन सब बातों पर अगले अध्याय में देखेंगे। फिलहाल हमें इतना ी ध्यान में रखना है कि मानव जाति की नियति निर्धारित कर दी गई है। इससे पहले क विनाश आ पड़े, पुस्तक में पहले ही से आने वाली घटनाओं का विवरण लिख त्या गया था। मानव इतिहास के रहस्य प्रकट करना हम पर निर्भर नहीं होता, परमेश्वर ी है जिसने हमारे भविष्य की योजना सावधानीपूर्वक बनाई है। इसी बात से हमें सन्तोष मल सकता है

जब यूहन्ना अपने सामने इस दृश्य को देखता है तो उसने एक बलवान स्वर्गदूत ो ऊंची आवाज़ से यह प्रचार करते सुना, "इस पुस्तक को खोलने और उसकी मुहरों ो तोड़ने योग्य कौन है?" पर किसी ने भी यह सम्मान पाने का दावा नहीं किया। वर्ग में ऐसा कोई योग्य व्यक्ति न था जो परमेश्वर की योजना को प्रकट कर सके ो उसने मानवों के लिए बनाई थी। पृथ्वी पर भी कोई योग्य व्यक्ति न था और न ी पृथ्वी के नीचे कोई ऐसा व्यक्ति मिला जो इस उत्तरदायित्व को ले सके।

यहाँ पृथ्वी के नीचे पाए जाने वालों का जिक्र किया गया है जिसे समझना कठिन । हो सकता है यह उनकी ओर संकेत है जो पहले ही मर चुके थे और गाड़ दिए ए थे। यह भी हो सकता है कि यह बात शैतान और उसके दूतों की ओर इशारा रती है। संकेत किसी की ओर भी हो पर इतना जरूर स्पष्ट कि इस विश्व के संपूर्ण तिहास में ऐसा कोई अगुवा न मिला जो इस योग्य हो कि उस पुस्तक को खोल

कर पढ़ सके और मानव जाति के लिए परमेश्वर की निर्धारित योजना का रहस्य प्रकट कर सके।

अधोलोक का कोई भी प्राणी या मानव चाहे वह कितना ही शक्तिशाली माना गया हो, इस योग्य नहीं पाया गया कि जगत का न्याय कर सके और परमेश्वर की निर्धारित योजना को उस पुस्तक से पढ़कर बता सके।

अब यूहन्ना की प्रतिक्रिया पर ध्यान दीजिए, जब उस पुस्तक को खोलने या पढ़ने योग्य कोई न मिला तो उसने क्या किया? पवित्रशास्त्र बाइबल हमें बताती है कि वह फूट-फूटकर रोने लगा। वह प्रेरित क्यों रोने लगा? कुछ टीकाकार कहते हैं, वह इसलिए रोने लगा कि अब वह कभी भी न जान पाएगा कि पुस्तक में क्या लिखा है? पर मैं सोचता हूँ उसके रोने का केवल यही कारण नहीं था कि उसकी जिज्ञासा अब पूरी नहीं हो पाएगी, पर उसके रोने का और भी गहरा एक कारण था। उस पुस्तक में परमेश्वर की योजना लिखी थी, उसके न्याय की चर्चा थी कि वह बुराई को दण्ड देगा, पर यदि उस योजना को प्रकट न किया गया और पाप तथा बुराई को बिना दंडित किए छोड़ दिया गया तो यह बड़े दुख की बात होगी, और यही होने जा रहा था क्योंकि कोई योग्य नहीं था जो इस योजना को पूरा कर सके या वह कार्य कर सके। यदि बुराई पर विजय पाने वाला कोई न मिले, तो हमारा विश्वास व्यर्थ ठहरता है। प्रेरित यूहन्ना की दौड़-धूप व्यर्थ ठहरती है। अनेकों शहीदों का बलिदान व्यर्थ ठहरता है अनेकों लोगों का धर्मी जीवन जीना बेकार साबित होता है। सारा जीवन प्रभु की भक्ति में बिताने के बाद जब मैं स्वर्ग के द्वार पर पहुँचूँ और मुझे पता चले कि बुराई की जीत हुई, उसे दण्ड नहीं दिया जा सकेगा क्योंकि स्वर्ग और पृथ्वी पर कोई योग्य नहीं है जो परमेश्वर की योजना को पूरा कर सके; तो यह मेरे लिए बड़े खेद की बात होगी। यूहन्ना फूट फूटकर इसीलिए रो रहा था। तब चौबीसों प्राचीनों में से एक यूहन्ना के पास आकर कहता है कि वह न रोये और उसे बताता है कि एक व्यक्ति है जो इस पुस्तक को और उसकी सात मुहरों को भी खोलने के योग्य है। वह यहूदा के कुल का सिंह है और दाऊद का मूल है। हमारा प्रभु यीशु ही यहूदा के कुल का सिंह है। सिंह होने के नाते वह बलवान है, यहूदा के कुल और दाऊद के घराने का विजयी राजा है। उसने अपने जीवन और कार्यों से पाप और मृत्यु पर विजय पाई है। केवल वही इस योग्य है कि पुस्तक और उसकी मुहरों को खोलकर पृथ्वी पर परमेश्वर की योजना को पूरा कर सके।

फिर यूहन्ना ने सिंहासन और प्राचीनों के बीच में एक मेमना खड़ा देखा। यह मेमना ऐसा दिखाई देता था कि बलि किया गया हो। उसके शरीर पर तेज़ धार वाले चाकूओं

निशान बने थे। हमारे प्रभु यीशु की देह पर अभी भी क्रूस की कीलों के चिन्ह हैं। एक दिन आएगा जब हम स्वयं उन चिन्हों को देखेंगे।

इस बात पर भी ध्यान दीजिए कि मेमने के सात सींग भी हैं। सींग एक पशु का यार होता है। पवित्रशास्त्र में सींग को अधिकार और सामर्थ का प्रतीक माना गया नम्बर सात की संख्या को सिद्धता माना गया है। इस मेमने को यहाँ अधिकार और र्थ में सिद्ध चित्रित किया गया है।

फिर हम पढ़ते हैं कि इस मेमने की सात आँखें भी हैं। इसका वर्णन हम पद 6 पाते हैं कि ये सात आँखें परमेश्वर की सात आत्माएं हैं। हम पहले अध्ययन कर हैं कि सात गुनी आत्मा का अर्थ है पवित्र आत्मा। यह मेमना पवित्र आत्मा से पूर्ण है। यह मेमना सब कुछ जानता है और जो कुछ घटने वाला है उसे भी देख ता है।

तब यह मेमना अपने पिता के हाथों से वह पुस्तक ले लेता है। इस सारी धार्मिक का महत्व हम कदापि कम नहीं समझ सकते हैं। यह बड़ी महत्वपूर्ण बात है। ने पिता के हाथों से पुस्तक लेने पर यीशु को पिता की ओर से अधिकार प्राप्त गया कि वह जगत का न्याय करे और पृथ्वी पर परमेश्वर की निर्धारित योजना लागू करे। इस उत्तरदायित्व को निभाने के योग्य केवल यीशु ही पाया गया।

इस अध्याय के शेष भाग में बताया गया है कि जब यीशु को पुस्तक दे दी गई स्वर्ग में क्या कुछ हुआ। हम पढ़ते हैं कि यीशु के हाथों में पुस्तक आते ही, चारों ी और सभी चौबीस प्राचीन यीशु के चरणों में गिरकर उसकी आराधना करने लगे। न देने की बात है कि वे किस प्रकार से मेमने की उपासना कर रहे थे। वे अपनी नाओं से और अपनी वीणा बजाकर उसकी उपासना करने लगे।

पद 9 व 10 में हमें वह गीत मिलता है जिसे चारों प्राणियों और चौबीसों प्राचीनों इस दिन गाया। उन्होंने दो कारणों से मेमने की स्तुति की। **पहली बात:** उन्होंने के लहू के लिए उसकी स्तुति की जिसके द्वारा उसने उन्हें परमेश्वर के लिए खरीदा वे अपने पापों के गुलाम बने हुए थे, वे परमेश्वर से सदाकाल के लिए अलग को बाँध दिए गए थे, पर प्रभु यीशु ने अपनी मृत्यु द्वारा उन्हें शैतान के जबड़े छुड़ा लिया।

दूसरी बात: प्राचीनों ने मेमने की आराधना व स्तुति इसलिए की क्योंकि उसने परमेश्वर के लिए एक राज्य और याजक बनाया था। उन्हें ख्रीस्त के साथ राज्य

करने और उसकी सेवा करने का आदर दिया गया। इससे बड़ा आदर और कोई हो नहीं सकता कि हम जो यीशु को जानते हैं न केवल हम भारी दाम देकर छुड़ाए गए हैं पर साथ ही हमें यह गौरव भी प्राप्त हुआ कि हम याजक और राजाओं के रूप में उसकी सेवा भी कर सकें। हम उसके प्रतिनिधि हैं हमारे पास इसका अधिकार है जो उसने हमें दिया है।

यूहन्ना ने इस अर्थपूर्ण स्तुतिगान को सुना, इसके बाद ही उसने एक और स्तुतिगान सुना जिसमें चारों प्राणी व सभी प्राचीन शामिल थे। यह आवाज़ स्वर्गदूतों की थी। प्राचीनों और प्राणियों की आराधना स्तुति सुनकर लाखों करोड़ों स्वर्गदूतों ने स्तुतिगान आरम्भ कर दिया। वे अपने को रोक न पाए। वे भी पुकार उठे, ''वध किया हुआ मेमना सामर्थ्य, धन, बुद्धि, शक्ति, आदर, महिमा और धन्यवाद के योग्य है''। अगर यीशु को छोड़कर सामर्थ्य, धन, बुद्धि, शक्ति, आदर महिमा किसी अन्य के हाथों में होती तो बड़ी ख़तरनाक बात होती। केवल यीशु ही सारी महिमा और आदर और स्तुति के योग्य है।

पद 13 में हम पढ़ते हैं कि शीघ्र ही स्वयं पृथ्वी भी अपनी स्तुति प्रशंसा न रोक पाई। वह भी आराधना में शामिल हो गई। यूहन्ना ने सुना कि पृथ्वी और समुद्र ने भी स्वर्गीय गायक दल के साथ सम्मिलित होकर स्तुति आरम्भ कर दी और उसकी महिमा और आदर के गीत गाने लगे। तब समस्त पृथ्वी और स्वर्ग चिल्ला उठे:

''जो सिंहासन पर बैठा है उसका, और मेमने का धन्यवाद और आदर, महिमा और राज्य युगानुयुग रहे'' (5:14)।

स्वर्ग में चारों प्राणी और 24 प्राचीन तथा आकाश और पृथ्वी सब के सब, मेमने की आराधना स्तुति में झुक गए और एक साथ पुकार उठे, ''आमीन''। क्या ही महिमामय दर्शन इस दिन यूहन्ना ने देखा। वह आराधना और धन्यवाद देने का दिन था। प्रभु यीशु मसीह को उस दिन जगत का न्याय करने और परमेश्वर की योजना को पूरा करने का संपूर्ण अधिकार दिया गया क्योंकि उसने मृत्यु पर जय पाई थी और जी उठा था।

यीशु के कारण हमें नई आशा प्राप्त हुई। उसके बिना हम परमेश्वर रहित होकर सदा के लिए अंधकार में पड़े होते। हमारी दुनिया विनाश की ओर होती। अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान द्वारा हमारे प्रभु यीशु ने शत्रु पर विजय पाई। अब वह इस संसार में परमेश्वर द्वारा दिए गए अधिकार का प्रयोग कर जगत का न्याय करता है और परमेश्वर की योजना पूरी करता है। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के शेष भाग में प्रकाशित किया गया है कि किस प्रकार उसने यह कार्य पूरा किया।

विचार-विमर्श के लिये प्रश्न :

- पुस्तक किन बातों को दिखाती है?
- यह बात गम्भीर क्यों है कि स्वर्ग में, या पृथ्वी पर, या पृथ्वी के नीचे उस पुस्तक को खोलने और पढ़ने योग्य कोई न मिला?
- उस पुस्तक को और उसकी सात मुहरों को खोलने योग्य एकमात्र व्यक्ति कौन है? वही क्यों एकमात्र इस योग्य है?
- इस अध्याय में बताया गया मेमना कौन है? हमने उसके विषय में क्या सीखा है?
- प्रभु यीशु मसीह को जब पुस्तक दी गई तो स्वर्ग व पृथ्वी की क्या प्रतिक्रिया हुई? यह घटना महत्वपूर्ण क्यों थी?

प्रार्थना के विषय :

- प्रभु का धन्यवाद करें कि वह इतिहास की घटनाओं पर अधिकार रखता है। धन्यवाद दें कि आपका जीवन उसके हाथों में है।
- प्रभु का धन्यवाद करने में कुछ पल व्यतीत करें कि उसने आपके उद्धार के लिए क्या क्या कार्य किए हैं।
- प्रभु का धन्यवाद करें कि वह संसार में परमेश्वर की योजना पूरी कर रहा है उन दशाओं के लिए क्षमा मांगें जब आप उस पर यह विश्वास करने में चूक गए कि वह सब बातों पर नियंत्रण रखता है।

अध्याय 12

मुहरों का खोला जाना

(पढ़ें प्रकाशितवाक्य-6)

जो मुहरबन्द पुस्तक मेमने को दी गई थी, अब वह खोली जाती है। जिन चार प्राणियों ा अध्ययन हमने इस पुस्तक के अध्याय चार में किया था, अब वे चारों बारी बारी आते हैं और यूहन्ना को बुलाते हैं ताकि उसके सामने पुस्तक खोली जाए और वह बातों का गवाह ठहरे। जब-जब मुहर खोली जाती है तब तब पृथ्वी पर कुछ घटनाएँ कट होती हैं। इन घटनाओं का अर्थ लगाने के संबंध में टीकाकारों में बड़ा वाद-विवाद या जाता है। मैं मानता हूं कि जो कुछ यूहन्ना ने प्रकाशितवाक्य 6 में देखा वह पूर्ण प से उन बातों से मेल खाता है जो यीशु ने अपने चेलों से मत्ती 24 व लूका 21 ध्याय में कहीं। हम इन दोनों अध्यायों के आधार पर ही प्रकाशितवाक्य 6 की व्याख्या रेंगे कि यीशु ने हमें सुसमाचारों में क्या शिक्षा दी।

जब पहली मुहर खोलने का समय आया तो उन चारों प्राणियों में से एक ने यूहन्ना ो बुलाया कि वह आकर जान ले कि कौन सी घटना अब घटने वाली है। जैसे ही मने ने पहली मुहर खोली तो यूहन्ना ने एक श्वेत घोड़ा देखा। उसके सवार के हाथ एक धनुष था। उसके सिर पर एक मुकुट रखा था। वह विजय प्राप्त करने के लिए ज दिया गया। यूहन्ना ने प्रकाशितवाक्य 19 अध्याय में एक और भी श्वेत घोड़ा देखा । इसमें कोई सन्देह नहीं कि प्रकाशितवाक्य 19 में घोड़े का सवार हमारा प्रभु यीशु प्रकाशितवाक्य-19 अध्याय का सवार ''विश्वासयोग्य और सत्य'' कहलाता है। सकी आँखें आग की ज्वाला हैं। उसके सिर पर बहुत से मुकुट हैं। उसका नाम ''राजाओं ा राजा और प्रभुओं का प्रभु'' था। क्या प्रकाशितवाक्य-6 का सवार और काशितवाक्य-19 का सवार एक ही हैं? अनेकों टीकाकार दोनों को एक ही मानते तौभी, दोनों सवारों के बीच गहरा अन्तर पाया जाता है।

प्रकाशितवाक्य-6 में जो घुड़सवार है वह प्रकाशितवाक्य 19 के घुड़सवार प्रभु यीः की तरह श्वेत घोड़े पर सवार है। वह भी सिर पर मुकुट पहने है। लेकिन ध्यान दीजि प्रकाशितवाक्य 19 का सवार एक मुकुट पहने हुए नहीं है परन्तु उसके सिर पर बहु से मुकुट हैं (पद-12)। फिर प्रकाशितवाक्य 6 का घुड़सवार इतना महिमापूर्ण दिखा नहीं देता जितना महिमापूर्ण प्रकाशितवाक्य 19 का घुड़सवार दिखाई देता है। यूहन्‍ ने बड़ी स्पष्टता से इसकी महिमा का वर्णन किया है। यूहन्ना उसके ऐश्वर्य और महिम से बड़ा प्रभावित नजर आता है। पर हम प्रकाशितवाक्य 6 के घुड़सवार के बारे इतने महिमापूर्ण शब्दों का कोई वर्णन नहीं पाते हैं। क्या यह संभव हो सकता है वि श्वेत घोड़ा एक झूठे मसीह के रूप में आ गया हो? प्रभु यीशु ने अपनी शिक्षा में स्पष्‍ रूप से कहा है कि अन्त के दिनों में लोग धोखा खा जाएंगे, सत्य सुसमाचार से फि जाएंगे, झूठे नबी उठ खड़े होंगे और यह कहते हुए आएंगे " मैं मसीह हूं" और बहुत को धोखा देंगे। वह हो सकता है कि पहला घुड़सवार, झूठे नबी का प्रतीक हो ज अन्त के दिनों में प्रकट होंगे (देखें मत्ती 24:4-5; लूका 21:8-9)।

इस अध्याय में वर्णित श्वेत घोड़े की एक और उपयुक्त व्याख्या यह भी की ग है जिसे कुछ टीकाकार सही मानते हैं। उनके अनुसार यह सफ़ेद घोड़ा समस्त संसा में सुसमाचार पहुंचाने का प्रतीक है। यीशु ने कहा है, "राज्य का यह सुसमाचार सा जगत में प्रचार किया जाएगा कि सब जातियों पर साक्षी हो, और तब अन्त आ जाएगा (मत्ती 24:14)। निश्चय ही अन्त समय का यही चिन्ह है कि सुसमाचार सारे जग में फैल जाए। प्रभु के न्याय दंड देने से पहले अवश्य है कि सारी जातियां को पश्चात्ता करने का अवसर मिले।

मेमने द्वारा खोली गई पहली मुहर के संबंध में दो संभव व्याख्याएँ की जाती है पहली तो यह कि हो सकता है यह घुड़सवार एक धोखेबाज़ हो, जो लोगों को परमेश्व की ओर से भटका कर लोगों के हृदयों को जीतने के लिए आया हो। दूसरी व्याख्या-य भी हो सकता है कि श्वेत घोड़े का घुड़सवार सुसमाचार हो जिसे इसलिए भेजा गय हो ताकि लोग परमेश्वर की ओर फिरें और उनके हृदय जीते जाएँ। ये दोनों ही व्याख्या प्रभु की उन शिक्षाओं से मेल खाती हैं जो प्रभु ने अंत के दिनों के संबंध में दी

जब मेमने द्वारा दूसरी मुहर खोली गई तो यूहन्ना ने लाल रंग का घोड़ा देखा। इसव सवार को यह अधिकार दिया गया कि वह पृथ्वी पर से मेल-मिलाप उठा ले वि लोग एक दूसरे को घात करें। इस सवार को एक बड़ी तलवार भी दी गई। प्रभु यीः ने मत्ती 24:6-7 तथा लूका 21:9 में बताया कि हम अन्त के दिनों में लड़ाईयों औ

पद्रवों की चर्चा सुनेंगे। लाल घोड़ा आग और रक्त के रंग का था। वह लड़ाईयों और ातियों के बीच शत्रुता बढ़ने की ओर संकेत करता है जो उस समय होगा जब प्रभु ा आगमन होगा।

यूहन्ना ने उस समय काला घोड़ा देखा जबकि मेमने द्वारा तीसरी मुहर खोली गई। ाले घोड़े के सवार के हाथ में एक तराजू था। वह यह कहता हुआ जा रहा था, एक दीनार का किलो भर गेहूं तथा एक दीनार की तीन किलो जौ, पर तेल और ाखरस की हानि न करना" (पद-6)।

यहाँ भारी अकाल पड़ने के बारे में बताया जा रहा है। थोड़े से गेहूँ के लिए एक यक्ति को सारा दिन परिश्रम करना होगा। तेल और दाखरस को सुरक्षित रखा जाएगा योंकि ये कम मात्रा में उपलब्ध होंगे। ये बातें भी हमारे प्रभु की उन बातों से मेल ाती हैं जो उसने मत्ती 24:7 तथा लूका 21:11 में कहीं। इन पदों में यीशु ने सिखाया क अंत के दिनों में जगह जगह अकाल पड़ेंगे। अत: यह काला घोड़ा इन अकालों ा प्रतीक है।

जब चौथी मुहर खोली गई तब यूहन्ना ने हल्के पीले रंग का घोड़ा देखा। इसके वार का नाम 'मृत्यु' था। एक और व्यक्ति उसके पीछे आ रहा था जिसका नाम धोलोक था। इस घोड़े के सवार को पृथ्वी के एक चौथाई भाग पर यह अधिकार या गया कि तलवार, अकाल, महामारी और पृथ्वी के हिंसक पशुओं द्वारा संहार करे। त्ती 24:21 में यीशु ने अपने चेलों से कहा कि अन्त के दिनों में ऐसा भारी क्लेश ागा जैसा न तो जगत के आरम्भ से अब तक हुआ और न कभी होगा। अन्त के दिन ड़े दुख भरे और डरावने होंगे। अनेक लोग प्राण गंवा बैठेंगे। हल्के पीले रंग का घोड़ा त्यु और दुखों का प्रतीक है जो अन्त के दिनों में होंगे।

जब पाँचवीं मुहर खोली गई तो यूहन्ना ने पवित्र लोगों की आत्माओं को उच्च स्वर पुकारते हुए सुना कि हे पवित्र और सच्चे प्रभु तू कब तक न्याय न करेगा तथा ब तक पृथ्वी के निवासियों से हमारे रक्त का प्रतिशोध न लेगा? ये पवित्र लोग भु यीशु पर अपने विश्वास के कारण वध कर दिए गये थे। प्रभु ने इनमें से प्रत्येक ो श्वेत चोगा दिया। प्रकाशितवाक्य 3:5 में यह चोगा जय पाने वालों को प्रदान करने ी प्रभु ने प्रतिज्ञा की थी। यह चोगा इस बात का प्रतीक था कि इन्होंने पाप पर जय ाई है।

प्रभु ने इन संतगणों से कहा कि वे थोड़ी देर तक और विश्राम करें जब तक कि उनके ी दासों और भाइयों की गिनती पूरी न हो जाए जो उन्हीं के समान वध होने पर हैं।

प्रभु यीशु ने मत्ती 24:9-10 में कहा, ''वे क्लेश दिलाने के लिए तुम्हें पकड़वाएं और मार डालेंगे।'' यीशु ने लूका 21:16-17 में यह भी सिखाया कि विश्वासिय को उनके घर ही के सदस्यों द्वारा धोखा देकर पकड़वा दिया जाएगा और उनके विश्वास के कारण उन्हें मरवा दिया जाएगा। जैसे जैसे अन्त के दिन निकट आएंगे हम परमेश्व और उसके लोगों के प्रति घृणा बढ़ते हुए देखेंगे। हम कलीसिया पर और अधिक सताव का आना देखेंगे। पाँचवीं मुहर हमें सचेत करती है कि हमें दृढ़ होना है क्योंकि यीश के कारण हम में से बहुतों को प्राण देना पड़ सकता है।

जब छठी मुहर खोली गई, तो एक बड़ा भूकम्प हुआ। सूर्य काला पड़ गया, चन्द्रम लहू के सदृश हो गया, तारे आकाश से पृथ्वी पर गिर पड़े। कुछ टीकाकार अन्त व दिनों की राजनैतिक उथल-पुथल का दृश्य इस वर्णन में देखते हैं कि कौन नेता गिर या कौन गिर चुका है। वे भूकम्प को इन नेताओं के पतन के कारण होने वाली व्याकुलत के रूप में देखते हैं।

जब हम प्रकाशितवाक्य 6 की व्याख्या मत्ती 24 और लूका 21 के आधार पर कर हैं तो हमें इन पदों की आत्मिक व्याख्या करने की आवश्यकता नहीं है। यीशु ने सिखाय है कि उसके दूसरे आगमन से पूर्व कुछ घटनाएँ घटेंगी जो संकेत देंगी कि उसक आगमन निकट है। मत्ती 24:7 में यीशु ने कहा उसके आगमन में पहले भूकम्प आएंगे यीशु ने लूका 21:25-28 में क्या कहा, उस पर ध्यान दीजिए:

''सूर्य, चन्द्रमा और तारों में चिन्ह दिखाई देंगे, पृथ्वी पर जातियों के मध्य संक होगा, वे समुद्र के गरजन और लहरों के कोलाहल से घबरा जाएंगे, भय और संसा पर घटित होने वाली बातों की प्रतीक्षा करते करते मनुष्यों के हाथ-पैर ढीले पड़ जाएं क्योंकि आकाश की शक्तियां हिलाई जाएंगी।''

योएल भविष्यवक्ता ने प्रभु के आगमन की भविष्यवाणी की है। उसने भी कह है कि जब प्रभु का आगमन होगा तो आकाश में चिन्ह प्रकट होंगे जो संकेत देंगे वि प्रभु का आगमन निकट है। योएल ने इस प्रकार बताया:-

''मैं आकाश में और पृथ्वी पर अद्भुत कार्य करूंगा अर्थात् लहू और अग्नि तथ धुएं के खम्भे दिखाऊंगा। यहोवा के महान् और भयानक दिन के आने से पहले सू अन्धकार में और चन्द्रमा लहू में बदल जाएगा'' (योएल 2:30-31)।

मेरे विचार से छठी मुहर का अर्थ समझने का सर्वोत्तम उपाय यह है कि हम देर कि पद में क्या लिखा है और तब उसका शब्दशः अर्थ लगाएं। प्रभु के आगमन र पूर्व अंतिम दिनों में हमें आकाश में चिन्ह प्रकट होते दिखाई देंगे, जिनसे हमें संक मिलेगा कि उसका आगमन निकट है।

छठी मुहर खोले जाने के बाद यूहन्ना और भी घटनाएँ घटते हुए देखता है। उसने ाकाश को फटते और चर्मपत्र के समान उसे लिपटते हुए देखा। आकाश के फटते ो पृथ्वी हिल गई, प्रत्येक पर्वत तथा द्वीप अपने स्थान से हट गए; और तब प्रभु की पस्थिति प्रकट हुई।

इन सब घटनाओं के परिणामस्वरूप लोगों पर क्या प्रतिक्रिया हुई, इस बात पर ध्यान ीजिए! पद-15 में हम देखते हैं कि अमीर-गरीब, दास और स्वामी, राजा-प्रजा सबने ापने आप को गुफाओं और पहाड़ों में छिपा लिया। वे पर्वतों और चट्टानों से कहने ागे, हम पर गिर पड़ो। और हमें मेमने के प्रकोप से और उसकी दृष्टि से बचा लो ो सिंहासन पर बैठा है। कैसे भयानक डर ने उन्हें आ घेरा था।

अभी तक तो वे प्रभु की ओर से निश्चिन्त थे तथा अभक्ति में जीवन-निर्वाह कर हे थे, पर अब प्रभु उनसे बदला लेने व उनके बुरे कार्यों का न्याय करने के लिए ा रहा था। उसके न्याय का दिन भयानक और व्याकुल कर देने वाला होगा।

क्या आप इन घटनाओं का सामना करने के लिए तैयार हैं? क्या प्रभु के प्रति आपका मर्पण आने वाले संकटों में आपको स्थिर रख सकेगा? विश्वासी होने के नाते हमें ाय पाने के लिए बुलाहट दी गई है। जय पाने का अर्थ प्राणों का बलिदान भी हो कता है। जबकि अंतिम दिन निकट है, हालात दिन-प्रतिदिन गम्भीर होते जाएंगे। हमारे ीरज की कठिन परीक्षा होगी। इब्रानियों 10:38-39 के प्रोत्साहन के साथ प्रभु आपको ाशीष दे।

"मेरा धर्मी जन विश्वास से जीवित रहेगा, परन्तु यदि वह पीछे हटे तो मेरे मन ो प्रसन्नता नहीं होगी। हम उनमें से नहीं जो नाश होने के लिये पीछे हटते हैं, पर नमें से हैं, जो प्राणों की रक्षा के लिए विश्वास रखते हैं।"

हम उनके समान न बनें जो पीछे हटते हैं, पर उनके समान बनें जो विश्वास में ्थिर रहते हैं ताकि आत्मा उद्धार पाए।

्वचार-विमर्श के लिये प्रश्न :

1 प्रभु का दिन आने वाला है, उस दिन क्या होगा, हम क्या आशा करते हैं? मुहरों के खोले जाने पर पृथ्वी पर क्या हुआ?

1 विश्वासियों पर प्रभु कठिन समय आने देगा, आप ऐसा क्यों समझते हैं?

- इस अध्याय में विभिन्न मुहरों के खोले जाने पर विचार करें। सब बातों का अन्त निकट है, क्या इसका कोई प्रमाण मिलता है?
- आकाश के फट जाने पर पृथ्वी के लोगों में क्या प्रतिक्रियाएँ हुईं? क्या आप प्रभु के आगमन दिवस के लिए तैयार हैं?

प्रार्थना के विषय :

- प्रभु का धन्यवाद करें कि इतिहास की घटनाएँ उसके नियंत्रण में हैं और कलीसिया का सताव भी उसके हाथों में है।
- प्रभु से अनुग्रह माँगें कि आप स्थिर रह सकें जबकि उसका आगमन निकट है।
- कुछ क्षण अपने उन प्रियजनों के लिए प्रार्थना करने में व्यतीत करें जिन्होंने अभी तक प्रभु को और उसके उद्धार को स्वीकार नहीं किया है। प्रभु से कहें कि वह उनके हृदयों को अपने आगमन के लिए तैयार करे।

अध्याय 13

्क लाख चौवालीस हज़ार तथा विशाल भीड़

(पढ़ें प्रकाशितवाक्य-7)

संपूर्ण इतिहास में परमेश्वर अपने लोगों में से कुछ ऐसे लोगों को चुनता रहा है जो के विशेष दास बन सकें। फिर उन दासों को उसने तैयार किया और अपने कार्य लिए प्रयोग किया। समय समय पर उसने विभिन्न लोगों को बुलाया है। छठी मुहर ने के बाद यूहन्ना ने चार स्वर्गदूत देखे। ये चारों स्वर्गदूत पृथ्वी की चारों हवाओं थामें हुए थे ताकि हवा न चले। पद-2 में हम पढ़ते हैं कि इन स्वर्गदूतों को पृथ्वी : समुद्र की हानि करने का अधिकार दिया गया था। चार हवाएँ परमेश्वर के दण्ड प्रतीक नजर आती हैं।

फिर पाँचवाँ स्वर्गदूत यूहन्ना को दर्शन में दिखाई दिया। उसके पास जीवित परमेश्वर मुहर थी तथा वह उसके अधिकार के साथ बोलता था। इस स्वर्गदूत ने उन चारों दूतों से कहा कि वे परमेश्वर के क्रोध की उन चारों हवाओं को तब तक थामें जब तक कि परमेश्वर के सच्चे दासों के माथे पर मुहर न लगा दी जाए। यहेजकेल पुस्तक में भी इसी प्रकार से मुहर लगाने का कार्य किया गया था। परमेश्वर ने व्यक्ति को जिसके पास कलमदान था, आज्ञा दी थी कि वह यरूशलेम नगर बीच से होकर जाए और उन लोगों के माथे पर चिन्ह लगाए जो नगर में हो रहे ात कामों के कारण आहें भरते और कराहते हैं (यहे. 9:4)। अन्यों को आज्ञा दी कि जिनके माथे पर चिन्ह न हों उन सब को वे घात कर दें (यहे. 9:5)।

चिन्ह लगाने का उद्देश्य क्या था? यहेजकेल 9 अध्याय में माथे पर चिन्ह इसलिए ाया गया था ताकि उन लोगों को अलग कर उनकी रक्षा की जा सके। चिन्ह लगाने

की इन घटना की तुलना मिस्र की घटना से की जा सकती है। मृत्यु के स्वर्गदूत
उन सारे मिस्रियों के पहिलौठों का घात कर दिया था जो मेमने के लहू द्वारा सुर
नहीं थे और जिनके घर की चौखटों पर लहू नहीं लगा था। प्रकाशितवाक्य 9:4 प
से हम और अच्छी तरह समझ सकते हैं कि मुहर या चिन्ह लगाने का अभिप्राय
है। हम पढ़ते हैं कि अथाह कुण्ड के धुएं से पृथ्वी पर टिड्डियाँ निकलीं जिन्हें
लोगों को हानि पहुंचाने की आज्ञा नहीं थी जिनके माथे पर परमेश्वर की मुहर
मुहर इसलिए थी कि परमेश्वर के लोग बुरे समय में बचाए जाएँ।

यूहन्ना हमें उन लोगों की गिनती एक लाख चौवालीस हजार बताता है जिन
मुहर लगाई गई। ये 1,44,000 लोग कौन हैं? यह बड़े वाद-विवाद का विषय
है। हालांकि बाइबल इस संबंध में स्पष्ट जवाब नहीं देती पर कुछ संकेत जरूर क
है कि हमें सहायता मिल सके। पद-4 पर ध्यान दें, हमें यहां पता चलता है कि
लोग इस्राएल के प्रत्येक गोत्र से लिए गए थे। पद 5-8 में संपूर्ण विवरण पाया ज
है कि हर गोत्र से कितने प्रतिनिधियों पर मुहर की गई। इस्राएल के प्रत्येक गोत्र
12,000 व्यक्तियों को चुना गया।

प्रत्येक गोत्र से केवल 12,000 को ही क्यों चुना गया? हो सकता है कि नंबर ब
का कोई विशेष महत्व हो। इस्राएल में बारह गोत्र थे जिनकी अगुवाई उनके बारह प्रा
करते थे। हमारे प्रभु यीशु ने बारह चेले चुने थे। प्रकाशितवाक्य 21 के अनुसार प
नगरी नए यरूशलेम के बारह फाटक थे। प्रकाशितवाक्य 6 अध्याय में हमने देखा
कि वहां चौबीस प्राचीन थे (बारह बारह के दो भाग)। संख्या एक लाख चौवाल
हजार भी दो खण्डों में है। 2 हजार गुणा 12 हजार। इस प्रकार हम देखते हैं कि पवित्रश
में 12 की संख्या विशेष महत्व रखती है। कुछ लोग एक लाख चौवालीस हजार
संख्या को शब्दशः नहीं मानते पर प्रतीकात्मक रूप से मानते हैं।

प्रकाशितवाक्य 14 अध्याय में इन एक लाख चौवालीस हजार लोगों के विषय
जिन पर मुहर की गई थी, विस्तृत जानकारी दी गई है। इस अध्याय के पहले
में हम पढ़ते हैं कि इन लोगों के माथे पर पिता का नाम लिखा था। इस से हम
अर्थ लगा सकते हैं कि वे पिता के हैं और वे पिता की रक्षा में थे। वे मेमने के अनुय
थे, उन्हें अन्य लोगों में से खरीदा गया था या उन्हें छुटकारा दिया गया था (14:
वे बिना किसी दोष के थे (14:5)।

ये एक लाख चौवालीस हजार लोग कौन थे? टीकाकारों में इस बात पर मत
पाया जाता है। प्रका. 7:4-8 पदों में यूहन्ना लम्बी सूची देता है और बताता है

ोग इस्राएल के गोत्रों से चुने गए थे। इस प्रकार हमें विश्वास करना पड़ेगा कि े पूर्वज यहूदी थे। अन्य टीकाकार आत्मिक संदर्भ में इसे संपूर्ण कलीसिया के में देखते हैं।

स पद्यांश की मूल बात यह है कि छठवीं मुहर खुलने के बाद कुछ लोग चुने परमेश्वर ने उन्हें परखा, उन्हें अलग किया और उनकी रक्षा की। यह स्पष्ट है इन लोगों को भी भारी सताव और समस्याओं में होकर गुजरना पड़ेगा, लेकिन पृथ्वी पर परमेश्वर का प्रकोप पड़ेगा तो ये लोग बचाए जाएंगे, परमेश्वर इनकी करेगा।

काशितवाक्य 14 से हम निश्चय रूप से कह सकते हैं कि ये एक लाख चौवालीस र लोग अन्त तक परमेश्वर के विश्वासयोग्य दास-दासियाँ बने रहेंगे, पर तौभी परमेश्वर पृथ्वी के निवासियों पर अपना प्रकोप भेजेगा तो वे भी भागीदार रहेंगे। 44,000 लोग अन्धकार में ज्योति की भाँति चमकेंगे। वे परमेश्वर के विश्वासयोग्य ी बने रहेंगे। उनकी दृष्टि परमेश्वर की ओर लगी रहेगी और वे संपूर्ण मन से श्वर से प्रेम करते रहेंगे। क्लेश और व्याकुलता के समय में वे परमेश्वर की महिमा लिये प्रकाशमान रहेंगे। उनकी उपस्थिति परमेश्वर के अनुग्रह और दया की गवाही । उनकी उपस्थिति से ज्ञात होगा कि परमेश्वर अभी भी पापी को अपने समीप ता है।

जब एक लाख चौवालीस हजार लोगों पर मुहर लग गई, तब यूहन्ना ने ऐसी बड़ी देखी जिसे गिना नहीं जा सकता था। इस भीड़ के लोग हर जाति और देश के यहाँ एक लाख चौवालीस हजार लोगों और इस भीड़ के मध्य अन्तर पर ध्यान ाए। यहां हम फिर यह संकेत पाते हैं कि एक लाख चौवालीस हजार का समूह ी जाति का था।

यह बड़ी भीड़ जिसमें हर जाति और हर देश के लोग थे, श्वेत वस्त्र पहने हुए उनके हाथों में खजूर की डालियाँ थीं। हम पहले भी अध्ययन कर चुके हैं कि पाने वालों को श्वेत वस्त्र पहनाए जाने की प्रतिज्ञा की गई थी (प्रका. 3:5)। र की डालियाँ विजय का प्रतीक थीं। ध्यान दीजिए कि जब इन लोगों ने विजय तो विजय का श्रेय स्वयं नहीं लिया, उन्होंने यह नहीं कहा कि वे स्वयं अपने से विजयी हुए हैं। पद-10 में उन्होंने ऊंची आवाज से कहा कि उनका उद्धार ी से हुआ है जो सिंहासन पर बैठा है। यह वही मेमना है जो वध किया हुआ है का. 5:6)। यह मेमना कोई और नहीं हमारा प्रभु यीशु स्वयं है। जो भीड़ जमा थी

ऊंचे स्वरों में कह रही थी कि उनका उद्धार उस कार्य से हुआ जो यीशु ने कि
उसी ने उन्हें विजय दी है।

स्वर्ग के समस्त स्वर्गदूतों ने चौबीस प्राचीनों और चारों प्राणियों और भीड़
साथ मिलकर स्तुति वन्दना की। वे भी आराधना में मेमने के सामने मुंह के बल गिर ग

जब यूहन्ना दर्शन के बारे में सोच-विचार कर रहा था तो कुछ व्याकुल हो ग
हम भी इस अध्याय की बातें पढ़कर आश्चर्य में पड़ सकते हैं। यूहन्ना भी इस मह
दर्शन को पाकर उसे समझने का संघर्ष करने लगा। विशेषकर वह इस भीड़ के
में समझ नहीं पा रहा था कि भीड़ किस बात का प्रतीक है। हमें याद रखना चाहि
कि प्रेरितों के समय में सुसमाचार निश्चय ही सारी जातियों और भाषाओं में नहीं फै
था। यूहन्ना के लिए यह समझ पाना इस समय कठिन हो रहा था कि हर जाति
कुल और भाषा के लोग कहां से आकर परमेश्वर की स्तुति कर रहे हैं।

एक प्राचीन यूहन्ना की यह उलझन समझ रहा था और वह उसके पास आ
उसने यूहन्ना को बताया कि यह भीड़ महाक्लेश झेलकर आई है। हालांकि यहां
नहीं बताया गया है, पर संदर्भ से हम जान लेते हैं कि इस भीड़ ने अपने विश्व
के कारण भारी संकट उठाए हैं। इस प्राचीन ने यूहन्ना को बताया कि अब आगे
लोग भूखे न रहेंगे और न ही प्यासे रहेंगे। न ही धूप की तपन उन्हें लगेगी क्यों
मेमना स्वयं उनका चरवाहा होगा, वह उनकी देखभाल करेगा, वह उन्हें जीवन
के स्रोतों के पास ले जाएगा। दुख और आँसू उनका हिस्सा नहीं रहेंगे। मेमना उन
आँसू सदा के लिए पोंछ डालेगा।

प्राचीन ने हमारे सामने एक बड़ी दुखभरी तस्वीर खींची है। हालांकि इस भीड़
भारी दुख-मुसीबत सही, तौभी उन्होंने जय पाई, वे विजेता रहे। जब पाँचवीं मुहर खो
गई थी तो शहीदों की आत्माएं पुकार उठीं थीं, "हे पवित्र और सच्चे प्रभु, तू क
तक न्याय न करेगा?" (6:10)। तब प्रभु ने उत्तर दिया था, 'जब तक कि तुम
संगी दासों और भाइयों की, जो तुम्हारे समान वध होने वाले हैं, गिनती पूरी न हो जा
संभव है यह भीड़ उन्हीं वध होने वाले संगी दासों और भाइयों का छोटा सा भ
हो जिनकी ओर प्रभु ने संकेत किया था। क्या इस भीड़ द्वारा वह गिनती पूरी हो ज
है जो अपने विश्वास के कारण वध किए जाएंगे?

हालांकि एक लाख चौवालीस हज़ार लोग जिन पर मुहर लगी थी, महाक्ले
के दौरान बचाए जाएंगे, क्योंकि उनके लिए प्रभु की प्रतिज्ञा है, पर तौभी उन
जीवन सरल नहीं होगा। कभी-कभी विश्वास के कारण प्राण देना, दुखों में जी

ताति करने से उत्तम होता है। जबकि स्वर्ग में इस बड़ी भीड़ का परमेश्वर की उपस्थिति में स्वागत होगा, इन एक लाख चौवालीस हज़ार लोगों का कार्य जारी गा।

इस अध्याय में हम पाते हैं कि भारी सताव सहना अभी बाकी है। कुछ लोग चुने ए हैं कि अपने विश्वास के कारण शहीद हों और परमेश्वर की उपस्थिति में पहुंचें। न्य लोग इस लिए चुने गए हैं कि परमेश्वर का प्रकोप पड़ने के दौरान नाश होने लों के लिए ज्योति ठहरें। यह प्रभु पर निर्भर है कि वह किसे अनन्त जीवन के लिए नता है और किसे मृत्यु के लिए। दोनों ही स्थिति में, प्रभु के लोग, चाहे जीवित , चाहे मरें, अन्त तक विश्वासी रहने के द्वारा प्रभु की महिमा के लिए बुलाए गए हैं।

चार-विमर्श के लिये प्रश्न :

इस अध्याय के आरम्भ में हम पढ़ते हैं कि स्वर्गदूतों ने प्रकोप को रोके रखा था। आपको इस से क्या सन्तोष प्राप्त होता है?

1,44,000 पर क्यों मुहर लगाई गई? जिस समय परमेश्वर का प्रकोप पृथ्वी पर उंडेला जाएगा, तब उस समय इनकी क्या भूमिका होगी?

जबकि 1,44,000 पर मुहर लगाई गई और वे बचाए जाएंगे, पाठांश पढ़ने से ज्ञात होता है कि भारी भीड़ जो हर जाति व कुल की है, क्लेश भोगेंगे और परमेश्वर की उपस्थिति में वे पहुंचाए जाएंगे; इस से हमें परमेश्वर की योजना के विषय क्या शिक्षा मिलती है?

यूहन्ना को यह समझने में कठिनाई हो रही थी कि लोगों की बड़ी भीड़ जो हर जाति और देश की थी व परमेश्वर की आराधना कर रही थी, कहाँ से आई थी और वे लोग कौन थे। क्या आज हमारे लिए इसे समझना सरल है? यूहन्ना के समय से आज हमारे समय तक सुसमाचार कितना सुनाया जा चुका है?

र्थना के विषय :

प्रभु का धन्यवाद दीजिए कि कुछ समय के लिए उसका न्याय दंड रोक दिया गया है।

प्रभु का धन्यवाद दीजिए कि हमारे जीवनों के लिए उसके पास निश्चित योजना है।

- ❒ प्रार्थना कीजिए कि वह आपको सामर्थ दे कि आप उसके लिए स्थिर रह सक
- ❒ प्रभु का धन्यवाद दीजिए कि उसके कारण आपका उद्धार पूरा हुआ है।
- ❒ प्रभु का धन्यवाद दीजिए कि वह समस्त विश्व में अपने राज्य का विस्तार क रहा है। धन्यवाद दीजिए, आपके देश में जिस तरह सुसमाचार संदेश पहुंचा

अध्याय 14

ातवीं मुहर तथा तुरहियों का शब्द

(पढ़ें प्रकाशितवाक्य 8:1-9:21)

हली छह मुहरों के खोले जाने पर अनेकों भयंकर बातें पृथ्वी पर घटीं जैसे तलवार, म्प, अकाल, महामारी, मसीहियों पर सताव, धोखा, आकाश में विभिन्न चिन्ह प्रकट इत्यादि। ये सब बातें पहली छह मुहरों के खुलने पर हुईं। प्रभु यीशु ने अपनी ाओं में स्पष्ट कह दिया था कि उसके आगमन से पूर्व ये सब बातें होना आवश्यक ।

इससे पहले कि सातवीं मुहर खोली जाए, प्रभु ने 1,44,000 समर्पित दासों को ग किया और उन पर मुहर लगाई। क्लेश और अधिक भयंकर होने पर था। जब मर्पित दास उस क्लेश में से होकर गुजरेंगे तो प्रभु की रक्षा का हाथ उन पर रहेगा। पृथ्वी पर परमेश्वर का महाप्रकोप आने वाला था। जैसे जैसे हम प्रकाशितवाक्य पुस्तक के अध्ययन में आगे बढ़ेंगे, हम पाएंगे कि यह सताव बढ़ता और भयंकर जाएगा।

जब सातवीं मुहर खुली तो स्वर्ग में आधे घण्टे तक सन्नाटा छा गया। यह सन्नाटा न बात का प्रतीक है? जब कोई अद्भुत घटना होने वाली होती है, तभी आप ऐसे ाटे की आशा कर सकते हैं। यह सन्नाटा उत्सुकता का सन्नाटा था कि पता नहीं क्या होने वाला है। सबके मन का ध्यान उस घटना की ओर लगा था जो अब ने को है। अब सामान्य बातचीत करने का समय नहीं रह गया था।

इस सन्नाटे में, सात स्वर्गदूतों ने मोर्चे संभाल लिये थे। प्रत्येक स्वर्गदूत के हाथ एक एक तुरही थी। इन तुरहियों के फूंके जाने पर जो विपत्ति निर्धारित थी वह ी पर आने वाली थी। इससे पहले आठवाँ स्वर्गदूत प्रकट हुआ। उसके हाथ में

एक सोने का धूपदान था। उसने धूप का धुआं पवित्र लोगों की प्रार्थनाओं के स
सोने की वेदी पर चढ़ाया। हम देख चुके हैं कि प्रकाशितवाक्य 6:10 में, जब पाँच
मुहर खुली थी तो वेदी के नीचे जिन संतों के प्राण थे, वे पुकार कर कह रहे
''हे पवित्र और सच्चे परमेश्वर तू कब तक न्याय न करेगा? कब तक पृथ्वी के निवासि
से हमारे रक्त का प्रतिशोध न लेगा?''

प्रभु ने उन्हें जवाब दिया था कि जब तक तुम्हारे संगी दासों और भाइयों की,
तुम्हारे सदृश वध होने वाले हैं, गिनती पूरी न हो जाए; तब तक प्रतिशोध नहीं लि
जा सकेगा, जैसे ही गिनती पूरी होगी, उनके रक्त का बदला लिया जाएगा। प्रकाशितवा
अध्याय 7 में हम ऐसी एक विशाल भीड़ के विषय में अध्ययन कर चुके हैं जि
कोई गिन नहीं सकता था, और जिसमें प्रत्येक जाति, समस्त कुल, लोग और भा
में से लोग शामिल थे, और जो मेमने के सिंहासन के सम्मुख खड़ी थी। हमने दे
था कि ये लोग महाक्लेश में से निकलकर आए थे और परमेश्वर की उपस्थिति
पहुंचे थे। ऐसा प्रतीत होता है कि इस भीड़ के द्वारा वह गिनती पूरी हो गई थी। अ
वह समय आ गया था कि प्रभु अपने संतों के रक्त का प्रतिशोध ले। तब स्वर्ग
ने धूपदान लिया और वेदी की आग से भरकर उसे पृथ्वी पर फेंक दिया। इसके नती
में बादल की गर्जन, भीषण नाद, बिजली की चमक तथा भूकम्प हुआ। प्रभु तैय
था कि अपने संत जनों की प्रार्थनाओं के जवाब में उनके रक्त का बदला ले। सच्च
और पवित्रता की जीत होती है।

इसके बाद स्वर्गदूत ने अपनी तुरही फूंकी। और लहू से मिश्रित ओले और अ
उत्पन्न हुए जो पृथ्वी पर फेंक दिए गए। इसका परिणाम बड़ा विनाशकारी हुआ। पृथ्
वृक्ष और घास की एक तिहाई भस्म हो गई। नूह के जल-प्रलय के बाद से पृथ
पर कभी ऐसा विनाश देखने में नहीं आया। पृथ्वी की अर्थ-व्यवस्था पर जो विन
का परिणाम हुआ उसकी केवल कल्पना ही की जा सकती है।

इसके तुरन्त बाद ही दूसरी तुरही फूंकी जाने के लिए तैयार थी। और जब उ
फूंका गया तो कोई विशाल सी वस्तु समुद्र में डाल दी गई। यूहन्ना समझ न स
यह क्या वस्तु थी, उससे इतना ही कहा गया कि यह आग से जलती हुई महापर
के सदृश कोई वस्तु थी। हम इसकी कल्पना करते हुए कह सकते हैं कि यह ब
किसी विशाल तारे के समान होगी जो आकाश से टूटकर समुद्र में जा गिरा हो। बाइब
बताती है समुद्र का एक तिहाई लहू हो गया। समुद्र के किनारे खड़े एक तिहाई जह
नष्ट हो गए। फिर समुद्र के एक तिहाई प्राणी भी दूषित पानी से मर गए। हम केव

इस बीमारी की कल्पना ही कर सकते हैं जिसके कारण जलचर मारे गए और जिसने महासागर को दूषित कर दिया था।

जब तीसरी तुरही फूंकी गई तो एक विशाल तारा आकाश से गिरा। इस तारे का नाम ''नागदौना'' था। नागदौना बड़ी कड़वी वस्तु होती है। इस तारे द्वारा पृथ्वी का सारा पानी दूषित होकर कड़वा हो गया। नदियाँ व सोते सब कड़वे हो गए। जल का एक तिहाई नागदौना हो गया। बहुत से मनुष्यों की मृत्यु हो गई।

चौथी तुरही के फूंके जाने से आकाश पर प्रहार हुआ। सूर्य का एक तिहाई, चन्द्रमा का एक तिहाई तथा तारों का एक तिहाई अन्धकार हो गया। इसके साथ साथ भयानक अंधकार ने पृथ्वी के निवासियों को ढक लिया।

चौथी तुरही फूंके जाने पर, एक उकाब ने ऊंची आवाज़ से अगली तीन तुरहियों के फूंके जाने की घोषणा की। यह विशेष घोषणा क्यों की गई? इसलिए कि अगली तीन तुरहियाँ पहली चारों से अधिक भयानक हैं। उकाब ने अथवा स्वर्गदूत ने पृथ्वी पर दण्ड की भयानकता की घोषणा की।

जब पाँचवीं तुरही फूंकी गई तो यूहन्ना ने आकाश से एक तारा गिरता हुआ देखा। हम नहीं जानते कि यह तारा किस बात का प्रतीक है। तौभी हम केवल इतना तो जानते हैं कि इस तारे को अथाह कुण्ड की कुंजी दी गई। प्रकाशितवाक्य 1:18 में हम पढ़ते हैं कि अथाह कुण्ड और मृत्यु की कुंजियाँ प्रभु यीशु मसीह को दी गई हैं। जबकि हम स्पष्ट रूप से नहीं कह सकते हैं कि यह तारा प्रभु यीशु मसीह को दिखाता है, तो इतना हमें अवश्य मानना चाहिए कि परमेश्वर के मेमने के अधिकार से यह कुंजी तारे को सौंपी गई।

उस (तारे) व्यक्ति ने उस कुंजी से अथाह कुण्ड को खोला। हम पहले ही यूहन्ना के दर्शन द्वारा स्वर्ग की महिमा की एक झलक पा चुके हैं। अब यूहन्ना हमें नरक की झलक दिखाता है। जब अथाह कुण्ड का द्वार खुला तो उसमें से धुआँ निकला, मानों किसी बड़ी भट्टी से निकल रहा हो। यह धुआँ इतना काला था कि आकाश अन्धकारमय हो गया। सूर्य भी धुएं से ढक गया जिसकी रोशनी पहले ही एक तिहाई कम हो चुकी थी।

फिर उस कुण्ड से ज़हरीली टिड्डियाँ निकलीं। ये साधारण टिड्डियाँ नहीं थीं। इनके डंक बिच्छुओं के समान ज़हरीले थे। हालांकि इनके काटने से मृत्यु तो नहीं होगी, पर पीड़ा सहने से बाहर होगी। इन टिड्डियों का स्वरूप युद्ध के लिए तैयार घोड़ों जैसा था (पद 7)। उनके सिर पर ऐसी कोई वस्तु रखी थी जो सोने के मुकुट

के समान लगती थी। उनके बाल स्त्रियों के बालों के समान लम्बे थे। उनके दांत सिंहों के दांतों के समान घातक थे। उन्होंने लोहे के कवच पहन रखे थे जिससे वे सुरक्षित रह सकें। उन्हें कोई मार सके, यह असम्भव था। उनकी पूंछ बिच्छुओं की सी थीं जिनमें मनुष्यों को पांच माह तक पीड़ा देने की शक्ति थी। उनके पंखों की आवाज ऐसी थी जैसी रथों और युद्ध में जाते हुए बहुत-से घोड़ों के दौड़ने से होती है। ये शत्रुओं पर आक्रमण करने के लिए पूरी तरह तैयार थीं। उनके राजा का नाम इब्रानी भाषा में "अबद्दोन" और यूनानी भाषा में "अपुल्लयोन" था। इन दोनों शब्दों का अर्थ है-विनाशक।

इन टिड्डियों के पास सीमित अधिकार थे। इन्हें आज्ञा नहीं थी कि वृक्षों और घास को हानि पहुंचाएं। यही टिड्डियों का सामान्य भोजन होता है। ये आम टिड्डियाँ नहीं थीं, इन्हें उन लोगों को हानि पहुचाने की अनुमति नहीं थी जिनके माथे पर मुहर लगी थी। प्रकाशितवाक्य अध्याय सात में हम पढ़ चुके हैं कि स्वर्गदूत द्वारा 1,44,000 लोगों पर मुहर लगाई गई थी। वे सभी लोग अभी भी उस वक्त पृथ्वी पर ही थे। इन लोगों को टिड्डियों का कोई भय नहीं था। यह मिस्र की घटना से मिलती-जुलती घटना कही जा सकती है। मिस्र में एक ओर तो मिस्री लोग दस विपत्तियों के कारण आतंकित थे वहीं दूसरी ओर गेशोन में जहाँ प्रभु के लोग रहा करते थे, वे पूरी तरह से इन विपत्तियों से सुरक्षित थे (निर्ग. 9:25-26)।

ये टिड्डियाँ केवल उन्हीं लोगों को पीड़ा पहुंचा रहीं थीं जिन पर मुहर नहीं लगी थी। उन्हें उन लोगों के प्राण लेने की अनुमति नहीं थी। लेकिन उनके द्वारा दी गई पीड़ा बहुत ही भयंकर पीड़ा थी। बाइबल बताती है कि टिड्डियों के काटे हुए लोग मृत्यु की अभिलाषा तो करेंगे पर मृत्यु उन से दूर भागेगी।

पद 5 में हम पढ़ते हैं कि टिड्डियों को पाँच महिने तक घोर पीड़ा देने की अनुमति दी गई। टीकाकार बताते हैं कि टिड्डियों का जीवनकाल पाँच महीने का होता है। मुख्य विचार यह है कि यह सताव सीमित था। चाहे यह सताव जितना भी भयंकर हो, पर फिर भी यह थोड़े ही समय का था।

इन टिड्डियों के बारे में हम उतनी ही जानकारी रखते हैं जितनी इस अध्याय में हमें दी गई है इसके अतिरिक्त हम और ज्यादा कुछ नहीं जानते। इनका आरम्भ दुष्टात्माओं से होता है यह बात स्पष्ट है। इन्हें पृथ्वी के निवासियों का नाश करने को स्वतन्त्र छोड़ दिया जाता है। ये भयंकर शारीरिक पीड़ा पहुंचा सकती हैं। परमेश्वर अविश्वासियों को उनके पापों का दण्ड देने के लिए इनका प्रयोग करता है। समय पर ही हमें इन

टिड्डियों का वास्तविक रूप समझ में आ सकता है। संक्षेप में कहा जा सकता है कि वे दिन पीड़ाओं और भय से भरे हुए होंगे।

फिर जब छठवीं तुरही फूंकी गई तो स्वर्ग की वेदी से एक आवाज़ आई जिसने छठे-स्वर्गदूत को आज्ञा दी कि वह उन चार स्वर्गदूतों को खोल दे जो फरात नदी के निकट बंधे हैं। ये वे चार स्वर्गदूत हो सकते हैं जिनका जिक्र प्रकाशितवाक्य 7:2 में किया गया है और जो परमेश्वर के प्रकोप को थामे हुए थे। इन स्वर्गदूतों को मनुष्य जाति का विनाश करने के उद्देश्य से आज़ाद किया गया। इन चारों स्वर्गदूतों के पास विशाल सेना थी जिसकी संख्या लगभग बीस करोड़ थी। उन्हें मानव जाति की जनसंख्या का एक तिहाई भाग नष्ट करने का अधिकार दिया गया।

घोड़ों और उनके सवारों के विवरण पर ध्यान दीजिए। सवार कवच पहने थे जो लाल, नीले और पीले रंगों में थे। हम इन रंगों का अर्थ लगाने की केवल कल्पना ही कर सकते हैं। उनके घोड़े विशेष प्रकार के थे। उन घोड़ों के सिर सिंहों के सिर के समान थे और उनके मुंह से अग्नि, धुआँ और गन्धक निकलते थे। अनेकों टीकाकार इसे वर्तमान युग की मिसाइलों और तोपों के संदर्भ में देखते हैं।

यूहन्ना के युग में निश्चय ही ऐसे हथियार नहीं थे, न ही ऐसी बातें थी जो वर्तमान युग से मेल खा सकें। आगे हम घोड़ों के बारे में पढ़ते हैं कि इनकी पूंछें बड़ी ही खतरनाक थीं। उनकी पूंछें सर्प के समान थीं। और उनमें सिर थे। इन्हीं से वे संपर्क में आने वाले को काट लेती थीं। जैसा कि हम पहले भी बता चुके हैं इनके द्वारा एक तिहाई मानवजाति घात कर दी गई थी, वह इन्हीं पूंछों द्वारा या बारूदी इंजनों द्वारा घात की गई। हम केवल इस सेना की तस्वीर कल्पनाओं में ही कर सकते हैं कि कितनी भयंकर यह सेना रही होगी। मूल बात जो हम जानते हैं वह यह है कि और कठिन समय अभी आना बाकी है व प्रभु का न्याय दंड बड़ा वास्तविक और प्रचण्ड होगा। जब परमेश्वर पृथ्वी पर विपत्तियाँ लाएगा तो अनेकों लोग नाश होंगे।

यहाँ सबसे महत्वपूर्ण बात जिस पर हमें विशेष ध्यान देना है वह यह है कि इतनी भारी विपत्तियों के बावजूद लोगों ने मूर्तिपूजा, जादू-टोने, व्यभिचार, चोरी आदि बुरी बातों से मन न फिराया (पद-20-21)। उन्होंने परमेश्वर के प्रकोप के प्रत्युत्तर में उचित प्रतिक्रिया नहीं की। उन्होंने अपने हृदयों को कठोर कर लिया।

प्रकाशितवाक्य 9:20-21 मानव हृदय की कठोरता का एकमात्र ऐसा कथन है जो सम्पूर्ण बाइबल में और कहीं नहीं पाया जाता। अविश्वासी मानव का कठोर हृदय कौन सी बात से विनम्र हो सकता है? या टूट सकता है? पृथ्वी स्वयं एक दिन नष्ट हो

जाएगी। भय और विनाश उनके चारों ओर मंडलाता रहेगा। तौभी ऐसे कठोर स्त्री-पुरुष अपना हृदय प्रभु की ओर करने से इंकार कर देंगे।

मैं आपको याद दिलाना चाहता हूँ कि परमेश्वर के अनुग्रह से हम और आप उस विशाल भीड़ में शामिल होंगे। ख्रीस्त की स्तुति हो जिसने हमारे विद्रोही स्वभाव को बदल दिया और हमें अपने निकट बुला लिया। यदि हम अनन्त काल तक उसकी स्तुति करते रहें और अपने बचा लिए जाने का उसे धन्यवाद देते रहें तौभी कम होगा।

अभी तक परमेश्वर के न्याय के संबंध में जो कुछ हमने अध्ययन किया है वह तो मात्र आरम्भ ही है। क्या आप प्रभु यीशु को अपना उद्धारकर्त्ता स्वीकार करते हैं? इस अध्याय में वर्णित तुरही के फूँके जाने पर जो प्रकोप पृथ्वी पर पड़ता है उस पर ध्यान दें, विचार करें। अपने पापों ही में पड़े न रहिये। प्रकाशितवाक्य 9 अध्याय के अविश्वासी कठोर हृदय वाले न बनें। देर न करें, प्रभु की ओर फिरें।

विचार-विमर्श के लिये प्रश्न :

- पृथ्वी पर आनेवाले परमेश्वर के न्याय दंड के विषय में हम क्या सीखते हैं? इस दंड का पृथ्वी की अर्थव्यवस्था पर और लोगों पर क्या परिणाम होगा?
- पाप के और विद्रोही स्वभाव के विरुद्ध परमेश्वर की घृणा के बारे में हम क्या सीखते हैं? हमारी प्रतिदिन की दिनचर्या में इसका क्या प्रभाव होता है?
- परमेश्वर के भयानक दंड के प्रति पृथ्वी के निवासियों का कैसा प्रत्युत्तर रहा? अविश्वासी लोगों के कठोर हृदय कैसे तोड़े जा सकते हैं? आप इस संबंध में क्या विचार रखते हैं?

प्रार्थना के विषय :

- प्रभु का धन्यवाद करें कि वह पाप और विद्रोही स्वभाव का लेखा लेगा।
- प्रभु का धन्यवाद करें कि उसने आपका हृदय कोमल बना दिया है।
- प्रभु से अनुग्रह मांगें कि भविष्य का सामना कर सकें, विश्वासयोग्य रहने की सामर्थ मांगें।
- प्रभु का धन्यवाद करें कि उसने आपको क्षमा किया है और पृथ्वी पर चाहे कितने भी संकट आएं, आपका भविष्य उज्ज्वल है क्योंकि आप उसकी उपस्थिति में रहेंगे।

अध्याय 15

स्वर्गदूत तथा छोटी पुस्तक

(पढ़ें प्रकाशितवाक्य-10)

सातवीं तुरही फूंके जाने से पहले यूहन्ना एक शक्तिशाली स्वर्गदूत को स्वर्ग से उतरते देखता है। इस अध्याय में यूहन्ना इस स्वर्गदूत की पाँच विशेषताओं का वर्णन करता है। प्रत्येक विशेषता उन विशेषताओं से मेल खाती हैं जो यूहन्ना ने प्रभु यीशु मसीह की पहले भी बताई है।

पहली विशेषता: इस स्वर्गदूत की पहली विशेषता यह है कि वह बादल ओढ़े हुए है। प्रकाशितवाक्य 1:7 में हम पढ़ते हैं कि प्रभु यीशु बादलों के साथ आने वाला है। यीशु की भांति यह स्वर्गदूत भी स्वर्ग से बादलों में उतरा।

दूसरी विशेषता: इस स्वर्गदूत के सिर पर मेघ-धनुष था। धनुष, परमेश्वर और नूह के बीच वाचा का चिन्ह था। जब यूहन्ना ने पहली बार स्वर्गीय सिंहासन की झलक देखी थी, तब उसने परमेश्वर को उस सिंहासन पर विराजमान देखा था, और सिंहासन के चारों ओर मेघ-धनुष था (प्रका.4:3)। यह स्वर्गदूत जिसे यूहन्ना ने स्वर्ग से उतरते देखा था, एक ऐसे महिमापूर्ण परमेश्वर को प्रदर्शित करता है जो वाचा का पालन करने वाला परमेश्वर है।

तीसरी विशेषता: यूहन्ना बताता है कि इस स्वर्गदूत का मुख सूर्य जैसा था। प्रकाशितवाक्य 1:16 में यूहन्ना ने जिस व्यक्ति का वर्णन किया है और जो सात दीपदानों के मध्य खड़ा था, उसका मुख भी सूर्य के समान दमक रहा था। उसके मुख की ओर देखना असम्भव था।

चौथी विशेषता: यूहन्ना बताता है कि इस स्वर्गदूत के पांव अग्नि के खम्भे के सदृश्य थे। प्रका. 1:15 में बताया गया है कि जो व्यक्ति दीपदानों के मध्य खड़ा था उसके पैर ऐसे चमकदार पीतल के समान थे जो भट्टी में तपाकर चमकाया गया हो।

पाँचवीं विशेषता: अंतिम विशेषता पर ध्यान दीजिए कि इस स्वर्गदूत के हाथ में खुली हुई एक छोटी सी पुस्तक थी। यह संभव हो सकता है कि जिस पुस्तक का यहाँ जिक्र किया गया है, वह वही पुस्तक हो जिसे यूहन्ना ने प्रकाशितवाक्य 5:7 में मेमने को दिए जाते हुए देखा था।

इस प्रकार सातों मुहर खुल जाती हैं और पुस्तक का रहस्य भी प्रकट हो जाता है, इसका सन्देश भी संसार पर प्रकट हो जाता है। मैं समझता हूं इस स्वर्गदूत का जैसा चित्रण यहाँ पाया जाता है उस चित्रण में यीशु ही एकमात्र ऐसा व्यक्ति है जिसमें ये सारी विशेषताएँ पूरी होती हैं।

फिर हम पढ़ते हैं कि इस स्वर्गदूत ने अपना दाहिना पांव समुद्र पर तथा बायां पांव पृथ्वी पर रखा। यह स्पष्ट रूप से संकेत करता है कि उसकी प्रभुता पृथ्वी और समुद्र दोनों पर है। हमारा प्रभु यीशु सबका प्रभु है। अपने पांव के बल पर दृढ़ता से खड़े होकर यह स्वर्गदूत सिंह के समान दहाड़ा। हम पढ़ते हैं कि इस प्रकार दहाड़ने से गर्जन के सात शब्द सुनाई दिए।

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में सात की संख्या का बार बार प्रयोग किया गया है। हम सात मुहरों के बारे में अध्ययन कर चुके हैं। अब हम सात तुरहियों पर अध्ययन कर रहे हैं। आगे चलकर हमारा सामना सात कटोरों से होगा और इस अध्याय में हम सात गर्जनों पर अध्ययन करेंगे।

जब गर्जन के सातों शब्द हो चुके तो यूहन्ना उन्हें लिखने पर ही था कि स्वर्गदूत द्वारा उसे आज्ञा दी गई कि वह इन बातों को न लिखे। मानव जाति के लिए वे सातों गर्जन के शब्द मुहरबन्द कर दिए गये। प्रभु ने क्यों ऐसा किया कि केवल यूहन्ना पर ही गर्जन के शब्द प्रकाशित हुए और मानवजाति के लिए वे वचन नहीं थे, हम नहीं जानते।

जब सातों गर्जन के शब्द पृथ्वी पर न्याय दंड की घोषणा कर चुके तो स्वर्गदूत ने अपना दाहिना हाथ स्वर्ग की ओर बढ़ाकर शपथ खाई। दाहिना हाथ बढ़ाकर शपथ खाना एक सामान्य क्रिया थी। उसने उस परमेश्वर की शपथ खाई जिसने स्वर्ग, पृथ्वी और समुद्र की सब वस्तुओं की सृष्टि की, और शपथ खाकर कहा कि अब अंतिम न्याय होने में और देर न होगी।

यह शपथ स्वर्गदूत के विषय में कुछ महत्वपूर्ण बातें बताती हैं। याकूब 5:12 में हमें सावधान किया जाता है कि कहीं शपथ खाकर हम उसे पूरा न कर पाने से दोषी न हो जाएं।

''पर मेरे भाइयों, सबसे श्रेष्ठ बात यह है कि तुम शपथ न खाना, न तो स्वर्ग की और न पृथ्वी की और न किसी और वस्तु की। पर तुम्हारी बातें ''हां'' की ''हां'' और ''नहीं'' की ''नहीं'' हों, जिससे कि तुम दण्ड के योग्य न ठहरो।''

स्वर्गदूत ने शपथ इसलिए खाई कि उसे यकीन था कि वह विजय पाएगा। ध्यान दीजिए स्वर्गदूत ने कहा था कि अब और देर न होगी, परमेश्वर की योजना शीघ्र ही पूरी की जाएगी। उसका यह कथन बड़ा सामर्थी कथन था। वह स्वर्गदूत स्वयं में भी बड़ा शक्तिशाली प्राणी था। क्या कोई साधारण सा स्वर्गदूत ऐसा कथन कह सकता था? काल और परिस्थितियों पर नियंत्रण रखनेवाला केवल परमेश्वर ही है, वही नियंत्रण रख सकता है। स्वर्ग के समस्त स्वर्गदूत तो उसके सेवक हैं, वे उसकी आज्ञाओं की प्रतीक्षा में रहते हैं। केवल ख्रीस्त यीशु ही को परमेश्वर की योजना जानने और उसे पूरा करने की जिम्मेदारी और अधिकार दिया गया है। केवल वही यह बात सुनिश्चित कर सकता था कि 'अब और देर न होगी।'

फिर इस स्वर्गदूत ने घोषणा कर दी कि परमेश्वर का वह रहस्य पूरा हो जाएगा जिसकी सूचना उसने अपने दास नबियों को दी थी। जब परमेश्वर शैतान और पाप पर विजय प्राप्त कर लेगा तब अंतिम चरण में सातवीं तुरही फूंकी जाएगी। यह शैतान पर मेमने की जय होगी।

जब यूहन्ना अपने सामने दृश्य देख रहा था तो उसे स्वर्ग से एक वाणी सुनाई दी। उसे आज्ञा दी गई कि उस स्वर्गदूत के हाथ से छोटी पुस्तक ले ले। आज्ञा का पालन करते हुए यूहन्ना स्वर्गदूत के पास गया और वह छोटी पुस्तक मांगी। वह आकस्मिक रूप से या लापरवाही से उसके पास नहीं जा सकता था। वह बड़ी श्रद्धा और दीनता के साथ उसके पास गया।

जब यूहन्ना स्वर्गदूत के निकट पहुंचा तो स्वर्गदूत ने उसे पुस्तक देते हुए कहा– 'ले, इसे खा ले।' यूहन्ना ने ऐसा ही किया। वह उसके मुंह में मधु जैसी मीठी लगी; पर जब वह उसे खा चुका तो उसका पेट कड़वा हो गया।

जब हम कोई वस्तु खा लेते हैं तो वह हमारा हिस्सा बन जाती है। यूहन्ना को परमेश्वर का वचन ग्रहण करके उसे अपने जीवन में लागू करना था। उसे उन वचनों के अनुसार स्वयं को ढालना था।

ध्यान दीजिए कि जो वचन यूहन्ना ने खाए थे वे मीठे थे। परमेश्वर का संदेश जिन्हें वचन के रूप में लिखा गया सबसे सर्वोत्तम और श्रेष्ठ वचन हैं। इसमें परमेश्वर के

प्रेम के विषय में बताया गया है। इसमें यीशु की मृत्यु और उसके जीवन चरित्र क वर्णन है कि वह हमारे बदले में मरा। इस से अधिक मीठा सन्देश और क्या हो सकता है

जो कोई सुसमाचार के इस मीठे संदेश को ग्रहण करता है वह यह भी जानता है कि इस सन्देश की एक सच्चाई इसका कड़वापन भी है। बाइबल स्पष्ट बताती है कि खीस्त के कारण लोग हम से घृणा करेंगे। फिर जो खीस्त को स्वीकार करता है उसे अपना क्रूस भी उठाना है। इस क्रूस का बोझ उठाना सरल नहीं होता।

यूहन्ना को परमेश्वर के वचन का मीठा और कड़वा संदेश ग्रहण करने के लिए बुलाया गया। उसे उस वचन को ग्रहण करने के बाद दूसरों को भी बताना था। उसे "बहुत से लोगों, जातियों, भाषाओं और राजाओं के समक्ष" नबूवत करनी थी (10:11) उसे प्रभु यीशु को और उसकी बातों को लोगों पर प्रकाशित करना था। आसानी से लोग वचन ग्रहण नहीं करते, तौभी उसे बताना ही था।

यह वचन बहुत महत्वपूर्ण वचन है, इसमें अनेकों लोगों का भविष्य तय होता है

इस अध्याय में हम देखते हैं कि किस प्रकार घटनाक्रम धीरे-धीरे उस ओर बढ़ रहा है जब और भी अधिक भयानक परमेश्वर का प्रकोप पड़ने वाला है। स्वर्गदूत द्वारा कहा गया यह कथन "अब और देर न होगी" पृथ्वी पर और भयानक रीति से परमेश्वर का दण्ड पड़ने की ओर संकेत करता है।

विचार-विमर्श के लिये प्रश्न :

- इस पाठ में स्वर्ग से उतरने वाले स्वर्गदूत की पाँच कौन कौन सी विशेषताएँ थीं? ये विशेषताएँ स्वर्गदूत के व्यक्तित्व के बारे में क्या बताती हैं कि वह कौन है?
- आपके विचार से सात गर्जनों का रहस्य बताने से प्रभु ने क्यों रोक दिया? क्या वे सभी बातें जो परमेश्वर हम पर प्रकट करता है, दूसरों को उन्हें बताने की आवश्यकता है? क्या परमेश्वर आज हम से व्यक्तिगत रीति से बातचीत करता है?
- हमने देखा कि वह समय आने वाला था जब 'और देर न होगी'। आप क्या समझते हैं- क्यों परमेश्वर अभी तक पृथ्वी पर अपना न्याय नहीं कर रहा था, दण्ड को वह क्यों रोके हुए है?

प्रार्थना के विषय :

- ❐ कुछ क्षण सोचें कि किस प्रकार परमेश्वर व्यक्तिगत रीति से आप से बातचीत करता रहा और अपने विषय में सत्य प्रकट करता रहा। इसके लिए उसका धन्यवाद करें।
- ❐ परमेश्वर ने कुछ ऐसी बातें यूहन्ना पर प्रकट की थीं जिन्हें वह नहीं चाहता था कि यूहन्ना दूसरों पर उन्हें प्रकट करे। परमेश्वर से कहें कि वह आपकी सहायता करे कि आप पहचान सकें कि कौन सी बातें आपके लिए हैं और कौन सी आपको दूसरों को बताना है।
- ❐ प्रभु को धन्यवाद दें कि वह एक दिन जगत का न्याय करेगा। सहायता के लिए प्रार्थना कीजिए कि आप उस दिन तैयार पाए जाएं। उस निश्चय के लिए उसे धन्यवाद दें जो उस दिन आपको होगा।

अध्याय 16

दो गवाह

(पढ़ें प्रकाशितवाक्य 11:1-14)

परमेश्वर के प्रकोप की तुलना दया से की जाती है। पापी जन को पश्चात्ताप करने का पूरा पूरा समय दिया जाता है। जब परमेश्वर अपना कोप प्रकट करता है तो यह नहीं कहा जा सकता कि यह अनुचित है। परमेश्वर अंतिम क्षण तक पापी जन को अपने निकट आने और पश्चात्ताप करने का अवसर देता है। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के इन पाठों में हम देखते हैं कि उसने विपत्तियाँ डालना आरम्भ कर दिया है तौभी जिन्हें वह दण्ड देता है उनसे बराबर आग्रह करता रहता है कि वे पश्चात्ताप करके बच जाएँ। वह किसी पापी के नाश होने से प्रसन्न नहीं होता। वह आशा करता रहता है कि वे उसके निकट आ जाएं।

यूहन्ना को दर्शन में नापने की एक छड़ी दी जाती है कि वह उस से मंदिर तथा वेदी को नाप ले। प्रेरित को उन लोगों की गिनती भी नापनी थी जो उपासना के लिए मंदिर में आते थे। अधिकांश टीकाकार इस मत पर सहमत हैं कि यह नाप मंदिर की सुरक्षा के लिए था। यह सुरक्षित भूमि थी जिसके चारों ओर बाड़ा बंधा था। नपी हुई इस भूमि पर किसी शत्रु को आने जाने का अधिकार नहीं था। उपासकों को इसलिए नापा गया या उनकी गिनती इसलिए की गई कि कोई भटक न जाए। पाठांश में हम पढ़ते हैं कि उपासक मंदिर में परमेश्वर की उपस्थिति में इकट्ठा थे।

जब परमेश्वर का यह मंदिर नापा जा रहा था तो ध्यान दीजिए कि मंदिर का बाहरी आंगन नहीं नापा गया। इसे गैर यहूदियों को दे दिया गया था। यहाँ पुराने नियम का चित्र दिखाई देता है। यहूदी परमेश्वर के चुने हुए लोग थे। अन्य लोग गैर यहूदी और अन्यजाति थे। ध्यान दीजिए इन्हीं अविश्वासी गैर यहूदियों को मंदिर का बाहरी आंगन दिया गया। हम पढ़ते हैं कि वे बयालीस माह तक पवित्र नगर को रौंदेंगे (पद 2)।

यहाँ कौन सी घटनाएँ घटेंगी? हमारी आँखों के सामने भारी सताव का इस पवित्र

नगर में होने का दृश्य उभर आता है। अविश्वासी लोग पवित्र नगर में और मंदिर के बाहरी आंगन में प्रवेश कर गए हैं। विश्वासी लोग भीतरी आँगन में रोक दिए गए हैं, जहाँ परमेश्वर की उपस्थिति प्रकट हुई थी। जब तक विश्वासी उपासना में रुके हैं वे सुरक्षित हैं। उनके चारों ओर परमेश्वर की पवित्र वस्तुओं को अविश्वासी लोग रौंद रहे हैं। मंदिर में ईश्वर निंदा और अपवित्रता उमड़ पड़ी है। अविश्वासी को स्वतन्त्रता है कि जो चाहे सो करें। चारों तरफ पाप व बुराई फैल गई है।

ध्यान दीजिए, लिखा है वे बयालीस माह तक अर्थात् साढ़े तीन साल तक पवित्र नगर को रौंदेंगे और यह बुराई इसी तरह होती रहेगी। यह ध्यान देना जरूरी है कि प्रभु ने इन पापपूर्ण गतिविधियों की सीमा निर्धारित कर दी है। अभी भी वह सब बातों पर नियंत्रण रखता है।

जब उचित समय आया तो प्रभु ने इस अंधकारपूर्ण स्थिति में अपने दो गवाहों को भेजा। ये गवाह टाट ओढ़े हुए थे। उन्होंने संसार की दशा देखकर हार्दिक खेद प्रकट किया। उन्होंने अविश्वासियों को उनके दुराचार से मन-फिराने की पुकार लगाई। वे 1260 दिन तक नबूवत करते रहे, अर्थात् 42 माह तक या साढ़े तीन वर्ष तक उनका प्रचार होता रहा। जितने समय तक शैतानी बुराइयों को राज्य करने की आज्ञा दी गई थी, उतने ही समय तक प्रचार होता रहा। जिन लोगों ने पवित्र नगर को रौंदा था और प्रभु की निन्दा की थी, प्रभु उन्हें अवसर देता रहा कि वे मन फिरा लें।

ये दो गवाह कौन थे? बाइबल हमें यह नहीं बताती कि वे थे कौन? यह बात गुप्त रही। समय ही बताएगा कि ये दोनों गवाह कौन थे। टीकाकार विभिन्न प्रकार के अनुमान लगाते हैं। कुछ मानते हैं कि मूसा और एलिय्याह जीवित हो गए थे। अन्य कहते हैं कि हमें इन्हें व्यवस्था और सुसमाचार के रूप में समझना चाहिये। कुछ कहते हैं ये वे जन हैं जो जन्म लेंगे।

इस पाठ को समझने के लिए यह जानना जरूरी नहीं है कि ये गवाह कौन थे। पद-4 हमें बताता है कि ये जैतून के वे दो वृक्ष और दो दीपदान हैं जो पृथ्वी के प्रभु के समक्ष खड़े रहते हैं। यह दृष्टान्त जकर्याह 4 से लिया गया है। अपने दर्शन में जकर्याह नबी ने दो सोने के दीपदान देखे थे। इन दीपदानों में दो जैतून के वृक्षों से एक सोने की नलकी द्वारा निरंतर तेल पहुंचाया जाता था। पवित्रशास्त्र में तेल पवित्रात्मा के कार्य का प्रतीक माना जाता है। जिस चित्र को यूहन्ना ने देखा वह हमें बताता है कि इन दोनों गवाहों को पवित्रात्मा की सामर्थ प्राप्त होगी ताकि वे उस कार्य को कर सकें जिसके लिए वे नियुक्त हुए हैं। जगत की ज्योति होने के नाते उन्हें चमकने के लिए

परमेश्वर के आत्मा के तेल की सामर्थ प्राप्त होती रहेगी ताकि वे परमेश्वर के लिए चमकते रहें।

उस अधिकार पर ध्यान दीजिए जो प्रभु ने इन गवाहों को दिया। उन्हें अधिकार है कि आकाश को बन्द कर दें जिससे कि नबूवत के दिनों में वर्षा न हो। फिर उन्हें जल पर भी अधिकार है कि उसे लहू बना दें। वे जब चाहें पृथ्वी पर सब प्रकार की महामारी भेजें। यदि कोई उन्हें हानि पहुंचाना चाहता है, तो उनके मुख से आग निकलकर उनके शत्रुओं को भस्म कर सकती है। परमेश्वर ने उन्हें इस खास कार्य के लिए सामर्थ दी थी और वरदानों से भी विभूषित किया था।

जब ये गवाह अपनी नबूवत का काम पूरा कर चुकेंगे तो अथाह कुण्ड से एक पशु निकलेगा जो उनसे युद्ध करेगा और उन्हें मार डालेगा। उनकी सेवा पूर्ण होने के बाद ही ऐसा होगा। इससे पहले शत्रु की उन पर कोई भी चाल प्रभावी नहीं हो सकेगी। इससे उन्हें प्रोत्साहन मिलना चाहिए जो प्रभु की सेवा में लगे हैं।

इन गवाहों के शव महानगर की सड़क पर पड़े रहेंगे। इस महानगर का नाम आत्मिक रूप से सदोम और मिस्र बताया गया है। फिर लिखा है कि इसी नगर में प्रभु यीशु क्रूस पर चढ़ाया गया था। सदोम और मिस्र दोनों देश अपनी दुष्टता के लिए प्रसिद्ध रहे हैं। इब्राहीम के काल में सदोम अपनी बुराई के कारण नाश कर दिया गया था। मिस्र वह देश था जहाँ प्रभु की प्रजा गुलाम बनकर रही थी। मिस्र के लोगों ने ही उस समय परमेश्वर के लोगों का पीछा किया था जब वे मिस्र की गुलामी से छूटे थे। सदोम और मिस्र पाप के प्रतीक नगर हैं। वास्तव में जिस नगर में यीशु को क्रूस पर चढ़ाया गया था वह यरूशलेम नगर था, पर यहां इसे सदोम और मिस्र कहा गया है क्योंकि उनके मध्य पाप पाया जाता था।

इन दो गवाहों के शव महानगर की सड़क पर पड़े रहेंगे। साढ़े तीन दिन तक जातियों, कुलों, भाषाओं और राज्यों में से लोग उनके शवों को देखते रहेंगे। उनके शव गाड़े नहीं जाएंगे। उनकी मृत्यु के कारण लोग आनन्द मनाएंगे, एक दूसरे को लोग उपहार भेजेंगे।

सारी दुनिया ने इन गवाहों से घृणा की क्योंकि इन्होंने उन्हें सताया था। प्रभु की उपस्थिति ने उन्हें व्याकुल कर दिया था। इन गवाहों को अधिकार था कि महामारी भेज देते और आकाश बन्द कर देते। वे उन्हें उनके पापों के प्रति कायल करने के लिए ऐसा कर सकते थे, पर वे फिर भी न सुनते, और परमेश्वर की सामर्थ का अनादर होता। जब गवाह मरे तो अविश्वासी लोगों ने आनन्द मनाया।

परन्तु साढ़े तीन दिन के बाद परमेश्वर की ओर से जीवन के श्वास ने उनमें प्रवेश किया। वे अपने पैरों पर खड़े हो गये। उनके दर्शकों पर बड़ा भय छा गया। जबकि सारी दुनिया इन जीवित गवाहों को देख रही थी और भयभीत थी, तो उन्हें स्वर्ग से एक ऊंची आवाज़ सुनाई दी। उस आवाज़ ने इन गवाहों को बुलाया। और वे अपने शत्रुओं के देखते देखते बादलों में स्वर्ग को चले गए।

जब वे गवाह स्वर्ग को चले गए तो पृथ्वी पर बड़ा भूकम्प हुआ। और नगर का दसवां भाग ढह गया। और सात हज़ार लोग उस भूकम्प में मारे गए। जो बचे रहे थे उन्होंने परमेश्वर के सामर्थ्य को पहचाना और परमेश्वर की महिमा की। अपनी मृत्यु के समय इन गवाहों ने वह कार्य कर दिखाया जो वे अपने जीवित रहते न कर पाए थे।

इन बातों के पूरा होने के बाद यूहन्ना ने एक स्वर्गदूत को यह कहते सुना, दूसरी विपत्ति बीत चुकी, देखो तीसरी शीघ्र ही आने वाली है (पद-14)। इस विपत्ति को समझने के लिए हमें प्रकाशितवाक्य 8:13 देखना होगा। यहां उकाब या स्वर्गदूत पृथ्वी को चेतावनी देता है कि तीन तुरही फूंका जाना बाकी है। यहाँ ग्यारहवें अध्याय में हमने जिस तुरही का अध्ययन किया है वह दूसरी तुरही थी, अंतिम और तीसरी तुरही अब फूंकी जानी बाकी है। हमें इस पाठांश से कौन सी बातें प्राप्त होती हैं? प्रकाशितवाक्य की पुस्तक की व्याख्या करने में सबसे बड़ी परीक्षा यह आती है कि इसकी घटनाओं और पात्रों के संबंध में अनुमान लगाना पड़ना है कि उचित अर्थ क्या हो सकता है। यह कितना अच्छा होता कि हम जान पाते कि ये दो गवाह कौन हैं या कौन हो सकते हैं। हम केवल उतना ही इनके बारे में जानते हैं जितना हमारे पास लिखा है। परमेश्वर को भाया कि वह इन गवाहों की विस्तृत जानकारी हम से गुप्त रखे। हमारे लिए यह जानना ज़्यादा ज़रूरी है कि अन्त के दिनों में जबकि परमेश्वर का न्याय दंड पृथ्वी पर आरम्भ होगा तब भी परमेश्वर यही चाहता रहेगा कि एक पापी मन फिराए और बच जाए। वह पापी जन को मन फिराने का अवसर अंतिम क्षण तक देता रहेगा। ये दो गवाह और 1,44,000 लोग परमेश्वर की दया और उसके धीरज की याद दिलाते रहेंगे। जब अंतिम न्याय होगा, उस समय सब कुछ प्रकट हो जाएगा, जो वास्तव में दोषी होगा वह दोषी ही ठहराया जाएगा।

जहाँ तक परमेश्वर के लोगों का सवाल है वे उसी तरह गिन लिए जाएंगे जैसे एक चरवाहा अपनी भेड़ों को गिनता है। उनके चारों ओर जो भयानक क्लेश का वातावरण होगा, उसमें वे बचाए जाएंगे। अच्छा चरवाहा ध्यान रखेगा कि कोई भेड़ खो न जाए।

ाचार-विमर्श के लिये प्रश्न :

हमने यह पाठ इस कल्पना के साथ आरम्भ किया था कि अविश्वासी लोगों ने पवित्र नगर पर कब्ज़ा कर लिया है और प्रभु परमेश्वर की निन्दा कर रहे हैं। जबकि ये सताव चल रहा है, दिन कठिन हैं, परमेश्वर के द्वारा उसके लोगों की रक्षा हो रही है, वे जीवित पाए जाते हैं। आपको इन सब बातों से कैसा प्रोत्साहन मिलता है?

इस पाठ में वर्णित दो गवाहों को अद्‌भुत अधिकार प्राप्त थे तौभी वे दुष्ट के हाथों मारे गए, और उन्होंने विश्वासयोग्यता के साथ अपना उत्तरदायित्व भी निभाया था। आपकी सेवकाई में आपके विश्वास को इससे क्या बल प्राप्त होता है?

दो गवाहों को प्राप्त अद्‌भुत अधिकार के बावजूद, उस समय के लोगों ने उनका तिरस्कार किया और अन्त में उन्हें मार डाला। इस से हमें अविश्वासियों के हृदय की कठोरता के विषय क्या जानकारी मिलती है? क्या परमेश्वर लोगों पर दबाव डालता है कि वे उसे चुनें?

पापियों के प्रति परमेश्वर के धीरज के विषय में हम क्या सीखते हैं?

र्थना के विषय :

परमेश्वर से अनुग्रह मांगें कि आप आने वाली कठिनाईयों का सामना कर सकें।

परमेश्वर का धन्यवाद करें पापियों के प्रति उसके अद्‌भुत धीरज के लिए।

परमेश्वर का धन्यवाद करें कि आपका जीवन उसके हाथों में सुरक्षित है और वह आपकी सामर्थ से बाहर आपको समस्या में नहीं पड़ने देगा।

अध्याय **17**

सातवीं तुरही का फूँका जाना

(पढ़ें प्रकाशितवाक्य 11:15-19)

जब सातवीं तुरही फूंकी गई तो स्वर्ग में स्तुति प्रशंसा ऊंचे शब्दों में होने लगी। अविश्वासी ोगों पर परमेश्वर का भारी प्रकोप पड़ने वाला था। तुरही बजते ही यूहन्ना ने इन ऊंची ावाजों को सुना जो स्वर्ग में गूंज रही थीं। हो सकता है हमें न मालूम हो कि ये ावाजें कहां से आ रही होंगी, तो यूहन्ना हमें बताता है, ये आवाज़ें बहुत ऊंची थीं। ह स्वयं ही आत्मा में वहां था।

इन आवाजों ने उन्हें जो वहाँ उपस्थित थे, याद दिलाया, ''संसार का राज्य हमारे भु और उसके मसीह का राज्य बन गया है।'' यह रहस्य जानने के लिए आपको त्पत्ति की पुस्तक में जाना होगा जब परमेश्वर ने संसार की सृष्टि की। तब मनुष्य जसको उसने रचना की थी वह परमेश्वर की निकटता से भटककर पाप कर बैठा ा। यीशु ने उसके पापों की क्षमा के लिए क्रूस पर अपने प्राण दिए। अपनी मृत्यु ौर पुनरुत्थान द्वारा यीशु ने शैतान से वह सारा कुछ वापस ले लिया जो वास्तव में नुष्यों का था। यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान के कारण परमेश्वर का राज्य अब समस्त ंसार में फैल रहा है। प्रतिदिन स्त्री-पुरुष ख्रीस्त की प्रभुता के अधीन होते जा रहे हैं।

विशेष बात जो हमें समझनी है वह यह है कि परमेश्वर का राज्य दुष्टता और अंधकार े मध्य फैल रहा है। दुष्टता का राज्य अभी भी हमारे मध्य प्रबल है। अंतिम तुरही ूंकी जाने पर शत्रु की सारी कोशिशें नष्ट कर दी जाएंगी। ख्रीस्त की प्रभुता संसार र प्रकट की जाएगी और दुष्टता कुचल दी जाएगी।

फिर दूसरी बात जो उन आवाज़ों ने याद दिलाई यह थी कि ''वह युगानुयुग राज्य रेगा।'' प्रभु ने सदैव ही इस संसार पर राज्य किया है। उसने सदैव ही सर्वोच्च शासक े रूप में मानवीय इतिहास पर नियंत्रण रखा है। इन सब बातों के विषय में वे आवाज़ें हीं बता रहीं हैं। ये आवाज़ें ख्रीस्त के अंतिम और महिमापूर्ण राज्य के आरम्भ की

घोषणा करती हैं। यह राज्य उस समय स्थापित होगा जब शैतान और दुष्टता पर विजय कर ली जाएगी। यह समस्त संसार में धार्मिकता और मेल-मिलाप का राज्य होगा।

ध्यान दीजिए कि यह राज्य युगानुयुग रहेगा, कभी समाप्त नहीं होगा। धार्मिकता इसमें निवास करेगी। ख्रीस्त के इस राज्य को कोई वस्तु भी समाप्त नहीं कर पाएगी। क्या ही महिमापूर्ण वह दिन होगा! ज़रा कल्पना कीजिए, बिना पाप के यह संसार होगा। कल्पना कीजिए ऐसे संसार की जहां ख्रीस्त सर्वोच्च स्थान पर होगा, और राज्य करेगा। वह दिन आने वाला है जब यह वास्तविकता होगी। हम समझ सकते हैं, क्यों स्वर्ग में स्तुति के गीत गूंज उठे थे। उस महान दिन के बारे में सोच कर हमें भी स्वर्ग के स्तुतिगान में अपनी आवाज़ें मिलाने और अपने महान् प्रभु की महिमा में धन्यवाद और स्तुति करने की प्रेरणा मिलती है।

जब चौबीस प्राचीनों ने इन स्तुति के गीतों की आवाज़ों को सुना तो मुंह के बल गिर पड़े और वन्दना व आराधना करने लगे। प्रभु कौन है और उसने क्या किया है यही सोचते हुए वे प्रभु की आराधना करने लगे थे, आइये इस विषय में विस्तृत अध्ययन करें :

इन प्राचीनों ने प्रभु यीशु की आराधना यह जानते हुए की कि वह कौन है। ध्यान दीजिए इन प्राचीनों की स्तुति प्रभु यीशु के विषय में क्या बताती है।

पहली बात: यीशु प्रभु है। प्रभु होने के नाते वह सब पर सर्वोच्च शासक है। उसी के नाम से सब कार्य होना चाहिये।

दूसरी बात: वह परमेश्वर है, सबका सृष्टिकर्त्ता और जीवनदाता। वही सबके जीवनों का आधार है।

तीसरी बात: वह सर्वशक्तिमान है। उसके लिये कोई कार्य असम्भव नहीं। वह दुष्टता पर और मृत्यु पर विजयी हुआ है।

अंतिम बात: वह ऐसा प्रभु है जो है, जो था। वह हमेशा से था, और हमेशा तक रहेगा। उसका न कोई आदि है और न अन्त है। चौबीसों प्राचीन ऐसे महिमापूर्ण और महान परमेश्वर के सम्मुख मुंह के बल गिर गए और उसकी स्तुति-आराधना करने लगे।

प्राचीनों ने प्रभु यीशु की आराधना इसलिए भी की कि उसने क्या किया है। पद-17 हमें बताता है कि वह अपनी महान् सामर्थ को लेकर राज्य करने लगा है। अब वह शैतान और दुष्टता पर अपना अधिकार रखने की घोषणा कर रहा था। अभी तक तो शत्रु अपना सिर उठाए हुए था और क्रियाशील था, अब उसके दिन पूरे हो गए थे,

ागिन लिए गए थे। सातवीं तुरही फूंक जाने के साथ, प्रभु शत्रु के विरुद्ध अंतिम ड़ाई लड़ने जा रहा था ताकि अपना उचित अधिकार ले ले। सारी जातियाँ क्रोधित गई थीं। उन्होंने कलीसिया पर अपना क्रोध प्रकट किया। एक समय वे अपनी विजय आनन्द मना रहीं थीं, पर अब उनका अन्त आ पहुंचा था। परमेश्वर का न्यायोचित प अब उन पर भड़कने वाला था। अब उनका न्याय करने का दिन आ पहुंचा था।

अब न केवल दुष्टता का न्याय करने का ही दिन आ पहुंचा था पर साथ ही उन ों को जिन्होंने जय पाई थी, प्रतिफल देने का भी समय आ गया था। परमेश्वर दासों को अपनी विश्वासयोग्यता का प्रतिफल पाने के लिए उसके निकट खड़े । का समय आ गया था। वे अन्त तक विजयी रहे, उन्होंने अच्छी दौड़ दौड़ी थी। । समय आ गया था कि सब संतगण मिलकर शत्रु की हार का आनन्द मनाएँ। जैसा नन्द इनके द्वारा मनाया जायेगा, कभी किसी ने नहीं मनाया होगा; वह दिन सचमुच ा वैभवशाली दिन रहा होगा।

जबकि यूहन्ना इन चौबीसों प्राचीनों को आराधना स्तुति करते हुए देख रहा था, तो ने देखा कि परमेश्वर का मंदिर जो स्वर्ग में है, खोल दिया गया। महापवित्र स्थान न्ना के लिए खोल दिया गया और यूहन्ना ने मंदिर में वाचा का संदूक देखा। पुराने ाम के काल में परमेश्वर इसी वाचा के संदूक द्वारा अपनी उपस्थिति का प्रकाशन ा करता था। अब परमेश्वर समस्त संसार पर स्वयं को प्रकट करता है। तब यूहन्ना जलियों की चमक और भयंकर ओला-वृष्टि देखता है। स्वर्ग से बादलों की गड़गड़ाहट शब्द हुए, भूकम्प भी हुए। वह परमेश्वर जो स्वयं को वाचा के सन्दूक के माध्यम प्रकट किया करता था अत्यन्त पवित्र और महान् परमेश्वर था। उसकी उपस्थिति ' और आदर से हृदय को उत्तेजित कर देती है। वह अब पृथ्वी पर न्याय आरम्भ ने जा रहा था।

चार-विमर्श के लिये प्रश्न :

इस पाठ में परमेश्वर को धन्यवाद दिया गया और स्तुति की गई, उसके कार्यों के लिए और जो वह है; आपके लिए परमेश्वर क्या अर्थ रखता है? और उसने आपके लिए क्या किया है?

परमेश्वर के विषय में आवाजें क्या बताती हैं कि वह कौन है?

चौबीस प्राचीनों ने परमेश्वर की आराधना स्तुति क्यों की? हमें उसके कार्यों से और उसके स्वभाव से क्या शिक्षा मिलती है?

- यह पाठ बताता है कि तुरही फूंकी जाते ही परमेश्वर का राज्य अपने पूर्ण वैभ
में प्रकट होगा। जबकि परमेश्वर का राज्य तो हमारे बीच में है पर अपने पूर्ण वैभ
में नहीं है। परमेश्वर के राज्य के कौन से प्रमाण आज संसार में पाए जाते हैं

प्रार्थना के विषय :

- इस पाठ के आधार पर परमेश्वर के विभिन्न गुणों पर विचार कीजिए। उसक
धन्यवाद दीजिए जो वह है, और जो कार्य उसने आपके लिए किए हैं!

- परमेश्वर के राज्य की विजय के निश्चय के लिए उसका धन्यवाद दीजिए।

- पृथ्वी पर उसके राज्य के प्रमाणों के लिए प्रभु का धन्यवाद दीजिए। एक दि
उसका राज्य पूर्ण वैभव में प्रकट होगा, उस दिन के लिए उसका धन्यवाद दीजि

अध्याय 18

स्त्री, बच्चा और अजगर

(पढ़ें प्रकाशितवाक्य-12)

बाइबल की सच्चाईयों में से एक महत्वपूर्ण सच्चाई यह है कि हम ख्रीस्त में जयवन्त से भी बढ़कर हैं। हमारे सामने अनेकों समस्याएं व बाधाएँ आएंगी। कुछ विश्वासियों को उसके नाम के लिए घोर यातनाएं सहन करनी पड़ सकती हैं। जबकि ये समस्याएँ आंखों से दिखाई नहीं देतीं तौभी उन लोगों के लिए जो प्रभु पर भरोसा रखते हैं, विजय निश्चित है। हमारा शत्रु हरा दिया गया है। हालाँकि वह हमारे विरुद्ध क्षण भर में सिर उठा कर हमें कोड़े मारने का प्रयत्न करता है तौभी उसका अन्त समय निकट है।

बारहवें अध्याय में यूहन्ना हमें उसी समय की ओर ले चलता है। यूहन्ना एक स्त्री को अपने दर्शन में देखता है। वह इस स्त्री की कुछ बातों पर ध्यान लगाता है। इस स्त्री ने सूर्य को पहन रखा है। वह चन्द्रमा के ऊपर खड़ी है और उसके सिर पर बारह तारों का एक मुकुट रखा है। यूहन्ना यह भी देखता है कि वह गर्भवती है, और प्रसव-पीड़ा के कारण चिल्ला रही है।

उत्पत्ति 37:9-10 में लिखित मन की कल्पनाएँ इस अध्याय में लिखित बातों की तरह लगती हैं। यूसुफ ने अपने स्वप्न में देखा कि सूर्य, चन्द्रमा और ग्यारह तारे उसे दण्डवत् कर रहे हैं। उसने इस स्वप्न की चर्चा अपने पिता याकूब से की। उसका पिता याकूब तुरन्त उस स्वप्न का अर्थ समझ गया। उत्पत्ति 37:10 में यूसुफ के स्वप्न के अर्थ के विषय में इस प्रकार लिखा है:

उसने इस स्वप्न का वर्णन अपने पिता और अपने भाइयों से किया और उसके पिता ने झिड़ककर उस से कहा, ''तू ने यह कैसा स्वप्न देखा है? क्या मैं और तेरी माता और तेरे भाई सचमुच तेरे आगे भूमि पर झुककर तुझे दण्डवत् करेंगे?''

यूसुफ के स्वप्न में सूर्य, चन्द्रमा और तारे इस्राएल जाति का प्रतीक थे। इसी प्रकार यह स्त्री जो सूर्य पहने थी और चन्द्रमा पर खड़ी थी इस्राएल जाति का प्रतीक

है। उसका सूर्य पहनना और चन्द्रमा पर खड़ा होना प्रकट करता है कि वह बड़ी वैभवशा स्त्री है। बारह तारों का मुकुट जो उसके सिर पर है वह इस्राएल के बारह गोत्रों दिखाता है।

फिर यूहन्ना ने एक अजगर को देखा। अजगर लाल रंग का था और बहुत ब था। उसके सात सिर और दस सींग थे। उसके सिरों पर सात मुकुट थे। ये सब ब हमें अजगर के विषय में क्या बताती हैं? ये बातें बताती हैं कि वह बड़ा शक्तिशा प्राणी था। उसके सींग उसकी शक्ति को दिखाते हैं। क्या यह नहीं हो सकता कि उस लाल रंग उसके हिंसक होने का प्रतीक हो? प्रकाशितवाक्य 17:8-10 में भी ए पशु का वर्णन पाया जाता है जो फिरोजी (लाल) रंग का था और जिसके सात f और दस सींग थे। सात सिरों का अर्थ हमें वहाँ इस प्रकार बताया जाता है।

''बुद्धि की बात तो यह है कि वे सातों सिर सात पर्वत हैं जिन पर वह स्त्री बै है। वे सात राजा भी हैं, जिनमें से पाँच का पतन हो चुका है, एक अभी है, और दू अब तक नहीं आया है जब वह आएगा तो उसका कुछ समय तक रहना आवश्य है'' (प्रका. 17:9-10)।

अत: सात सिरों का अर्थ है सात राजनैतिक शक्तियाँ, जिनका नियंत्रण अजगर हाथों में है।

प्रकाशितवाक्य 12:9 में हमें स्पष्ट रूप से बताया जाता है कि यह अजगर वास में है कौन? यह अजगर शैतान है। शैतान का जो विवरण इस पाठ में हम पढ़ते वह उसका चित्रात्मक विवरण है।

शैतान एक शक्तिशाली अजगर के समान है जिसने कुछ राजनैतिक शक्तियां (जिन्हें सात सिरों के रूप में दिखाया गया है) अपने नियंत्रण में कर रखा है। शैत इन्हीं विभिन्न राजनैतिक शक्तियों के माध्यम से अपनी योजना पूरी करता है और अप विद्रोह प्रकट करता है। इन राजनैतिक शक्तियों की जानकारी हमें नहीं दी गई है ये कौन सी हैं। पर यह पता लगाना कि किन के माध्यम से शैतान काम कर रहा कठिन नहीं। इस्राएल के और कलीसिया के संपूर्ण इतिहास में शैतान राजनैतिक अ का प्रयोग करके परमेश्वर के कार्यों को नष्ट करने की कोशिशें करता रहा है।

ध्यान दीजिये इस अजगर की पूंछ ने आकाश के तारों का एक तिहाई भाग खींचक पृथ्वी पर फेंक दिया (पद-4)। कुछ टीकाकार मानते हैं कि यह उन स्वर्गदूतों ओर संकेत है जो पृथ्वी पर गिरा दिए गए थे। प्रकाशितवाक्य प्रथम अध्याय में स तारे सात कलीसियाओं के दूतों के प्रतीक थे। अत: यह सम्भव है कि तारों का गिर

ूतों का पृथ्वी पर फेंक देने को दिखाता है। जब शैतान ने परमेश्वर के विरुद्ध ; किया था तो वह अकेला नहीं था। उसके साथ स्वर्ग में अनेकों स्वर्गदूत थे ने शैतान का साथ दिया था। इन गिराए हुए स्वर्गदूतों को हम आज दुष्टात्मा या ा के नाम से पुकारते हैं। एक तिहाई तारों का पृथ्वी पर फेंका जाना शैतान के का विद्रोह करने के फलस्वरूप पृथ्वी पर फेंके जाने का प्रतीक हो सकता है।

र अजगर और उसके दूतों के पास एक निश्चित योजना थी। वह अजगर उस अर्थात् इस्राएल के समक्ष खड़ा हो गया जो बच्चे को जन्म देने वाली थी, ताकि मार डाले और खा जाए (पद-4)।

ह बच्चा कौन हो सकता है, जिसे यह स्त्री (इस्राएल) जन्म देने वाली थी? पद 5 ों पता चलता है कि यह बच्चा लोहे के दण्ड से सब जातियों पर शासन करने ाए पैदा होगा। प्रकाशितवाक्य 2:27 में लिखा है, "जो जय पाए...उसे मैं जाति पर अधिकार दूंगा, वह उन पर लोहे के राजदण्ड से शासन करेगा, जिस प्रकार राज्य करेगा।" अतः जिस बच्चे का यहाँ जिक्र किया गया है वह स्पष्ट रूप ायं प्रभु यीशु मसीह की ही ओर संकेत है, और यह यीशु ही है। जब प्रभु यीशु न्म हुआ था तो शैतान ने हेरोदेस को उपयोग करके उसे मरवा डालने का प्रयत्न था। यह संभव हो सकता है कि अजगर के सात सिरों में से एक सिर हेरोदेस ोर संकेत करता हो लेकिन शैतान यानि, अजगर हमारे प्रभु यीशु मसीह को घात में असफल रहा। बाद में पिलातुस नामक राजनैतिक अगुवे को प्रयोग करके उसने को क्रूस पर चढ़वा कर सफलता तो जरूर पा ली, पर यीशु पराजित नहीं हुआ। तकों में से जी उठा। प्रकाशितवाक्य 12:5 में लिखा, "स्त्री का वह बच्चा परमेश्वर उसके सिंहासन के पास उठा लिया गया।" इस बात से हमें पता चल जाता है ह बच्चा कौन है? केवल ख्रीस्त ही है जो परमेश्वर के सिंहासन पर बैठ सकता मारा प्रभु यीशु मृतकों में से जी उठकर अब स्वर्ग के सिंहासन पर बैठा है। अजगर बच्चे को नाश करने में असफल रहा।

ीस्त के स्वर्ग पर चले जाने पर अजगर का ध्यान उस स्त्री की ओर गया। ध्यान ए, कि इस से पहले कि अजगर उस स्त्री को नाश करता, वह स्त्री जंगल ले ाई जहाँ 1260 दिन तक उसकी रक्षा की गई। यहाँ ऐसा जान पड़ता है कि जो यारहवें अध्याय में हुई वही यहां पर दोहराई जा रही हैं। हमने देखा था कि परमेश्वर ागों को नापा गया और उन्हें मंदिर में बन्द रखा गया ताकि उनकी 42 माह तक (1260 दिन तक रक्षा होती रहे।

जबकि स्त्री की जंगल में रक्षा हो रही थी। तब यूहन्ना ने स्वर्ग में एक युद्ध हो देखा। स्वर्ग में रहने वाले दूत शैतान और दुष्टात्माओं से लड़े। शैतान में इतना बल न रह गया था कि स्वर्ग के दूतों का मुकाबला करता रह सके; अत: वह स्वर्ग से पृथ्‍ पर गिरा दिया गया। जबकि स्वर्ग में आनन्द मनाया जा रहा था और नीचे पृथ्वी शैतान की उपस्थिति के कारण भारी शोक था।

पद 10 में शैतान को भाइयों पर दोष लगाने वाला कहा गया है। वह परमेश्वर समक्ष उन पर दिन-रात दोष लगाता है, फिर भी हमें आशारहित होने की आवश्यक नहीं है। वे स्वर्ग में विजयी हुए और पृथ्वी पर भी विजयी होंगे। ध्यान दीजिए, कै वे विजयी होते हैं (पद-11)। ख्रीस्त का लहू शैतान को निष्क्रिय बना देता है। व परमेश्वर के सामने दिन-रात आप पर दोष लगा सकता है पर उसके दोष लगाने कोई लाभ नहीं, यदि आप मेमने के लहू में छिपे हुए हैं। कोई भी पाप जो हम कभी हुआ है या कभी होगा, सब ख्रीस्त के लहू में ढांक दिए जाते हैं। ख्रीस्त पूरी पूरी क्षमा है। शैतान पूरी ताकत से हम पर अपने दोष लगा सकता है, पर वे स क्षमा कर दिए गए हैं। यह हमारे लिए आनन्द की बात है।

प्रभु के प्रति समर्पित रहने के द्वारा भी हम शैतान पर विजयी होते हैं। प्राचीन का के संत लोग मृत्यु से भी पीछे नहीं हटे। प्रभु यीशु के लहू में ढंके रहना और विश्वासपू जीवन व्यतीत करना आवश्यक है। अपनी इच्छानुसार नहीं पर परमेश्वर की इच्छानुस समर्पित जीवन हमें व्यतीत करना है। ऐसा समर्पित जीवन जीने के लिए कड़े परिश्र की आवश्यकता है। प्रकाशितवाक्य 12:11 में जिन विजयी लोगों के बारे में बता गया है उन्हें मसीह के लिए अपने प्राणों तक का बलिदान करना है। वे अपनी गवा के वचन द्वारा अथवा सत्य वचन में स्थिर रहने के द्वारा विजयी हो सकते हैं। शैत पृथ्वी पर फेंक दिया गया है। वह बालक ख्रीस्त को मार डालने में सफल न हो पार वह परमेश्वर के विरुद्ध स्वर्ग में विद्रोह करने में सफल न हो पाया। जो प्रतिज्ञा इ अध्याय में पाई जाती है उसके अनुसार वह कलीसिया के विरुद्ध अपनी कोशिशों भी सफल नहीं हो पाएगा। हम उस पर ख्रीस्त के लहू द्वारा और निरंतर सत्य वच में बने रहने के द्वारा विजयी हो सकते हैं। परमेश्वर के कार्यों को नष्ट करने के अप निरर्थक प्रयासों के कारण शैतान कैसा निराश होगा। उसकी सब युक्तियाँ बेकार रह हैं। वह इस कारण बड़ा क्रोधित भी है।

शैतान अपनी निरंतर हार होने के कारण निरुत्साहित नहीं होता, वह फिर ख्रीस्त के कार्यों में बाधा पहुंचाने का प्रयत्न करता रहता है। वह जानता है कि उस

मय थोड़ा ही है, इसलिए वह पूरी ताकत के साथ कार्य करना आरम्भ कर देता। वह किसी भी तरह परमेश्वर के कार्यों में हानि पहुंचाने का हर संभव प्रयास करता है।

फिर अजगर ने स्त्री पर आक्रमण किया। हमने देखा कि यह स्त्री इस्राएल जाति का प्रतीक है। वह कलीसिया की भी प्रतीक है। पद 14 में वही बात फिर दोहराई ई प्रतीत होती है जो पद 6 में कही गई है। स्त्री को एक बड़े उकाब के से दो पंख सलिए दिए गये कि वह अजगर के सामने से, उस स्थान को उड़ जाए जहाँ एक ाल, कालों और अर्द्ध-काल तक उसका पालन-पोषन किया जाए। यहाँ "काल" ा जिक्र किया गया, इसका क्या अर्थ है? अधिकांश टीकाकार मानते हैं कि यहां ाल का वर्णन प्रतीकात्मक रूप से किया गया है। एक काल एक वर्ष या एक वर्ष अधिक का समय होता है और संभव है इसका अर्थ दो वर्ष का समय है। अर्द्धकाल ा अर्थ, आधा वर्ष है। यदि काल का अर्थ हम इस प्रकार लगाएँ और एक वर्ष, दो र्ष और आधे वर्ष को जोड़ें तो हमारे पास साढ़े तीन वर्ष का काल होता है। और ह साढ़े तीन वर्ष का काल 1260 दिन या 42 माह होता है। यही काल पद 6 में ी बताया गया है। अध्याय ग्यारह में हम अध्ययन कर चुके हैं कि इसी प्रकार काल ी गणना पाई जाती है।

यहाँ जिस मूल बात पर हमें ध्यान देना है वह यह है कि जब शैतान पृथ्वी पर ाकर क्लेश उत्पन्न करेगा तो प्रभु अपने लोगों की उस से रक्षा करेगा। शैतान द्वारा कया गया सताव थोड़े की समय का होगा। पद 15 हमें बताता है कि अजगर ने उस त्री के पीछे अपने मुंह से नदी के सदृश जल बहाया कि उसे जल-प्रवाह में बहा जाए। यह जल-प्रवाह क्या है? बाइबल इस बारे में कुछ नहीं बताती। पर हम निश्चय कह सकते हैं कि यह जल कठिनाईयों, परीक्षाओं और सताव को बताता है जो लीसिया पर उस समय होगा और संसार में व्याप्त रहेगा। यूहन्ना के काल की कलीसियाएँ स जल-प्रवाह रूपी सताव का सामना कर रही थीं जो शैतान के मुंह से बहाया गया ा। शैतान का पूरा ध्यान कलीसिया को नष्ट करने में लगा हुआ था। यदि कलीसियाएं भु के हाथों में न होतीं, प्रभु ही उनकी रक्षा न करता होता तो वे मिट गई होतीं।

निदान, शैतान एक बार फिर निराश हो गया। जो जल-प्रवाह उसने बहाया था, उसे थ्वी ने पी लिया परमेश्वर का सामर्थी हाथ उसके अपने लोगों की रक्षा कर रहा ा। अधोलोक के फाटक कलीसिया पर प्रबल न हुए। अजगर फिर अपनी कोशिशों नाकामयाब हो गया था। इसके बाद वह उस स्त्री की शेष सन्तानों से युद्ध करने ो निकल पड़ा। इन शेष संतानों का वर्णन पद 17 में पाया जाता है कि वे परमेश्वर

की आज्ञा मानती थी और यीशु की गवाही पर स्थिर थी। हम ही उसकी सन्तानें हैं।

यहाँ पर शैतान का युद्ध कलीसिया से है। पृथ्वी पर शेष बचे विश्वासियों के लि ये बड़े ही कठिन दिन होंगे। तौभी प्रभु उन लोगों को त्याग नहीं देगा। परमेश्वर क प्रेम के कारण वे संभाले जाएंगे और उनकी रक्षा की जाएगी। ख्रीस्त के लोगों पर शैता का अधिकार नहीं चल सकेगा। हमारे प्रभु यीशु की स्तुति हो। उसके लहू की साम से विजय हमारी होगी।

विचार-विमर्श के लिये प्रश्न :

- ❒ इस पाठ की स्त्री कौन है जिसने सूर्य पहन रखा था? परमेश्वर की दृष्टि में व क्या थी?
- ❒ अजगर कौन है? उसका क्या उद्देश्य है?
- ❒ जिस बच्चे ने स्त्री से जन्म लिया वह कौन है और उसने किस तरह विजय पाई
- ❒ जब अजगर बच्चे की हानि न कर सका तो उसने स्त्री की ओर ध्यान लगाय परमेश्वर ने उस स्त्री की रक्षा कैसे की?
- ❒ स्त्री की सन्तानें कौन हैं और उनके लिए परमेश्वर की प्रतिज्ञाएँ क्या हैं?
- ❒ इस पाठ से हमें क्या निश्चय प्राप्त होता है?

प्रार्थना के विषय :

- ❒ प्रभु का धन्यवाद करें कि वह व्यक्तिगत रूप से आप पर नजर रखता और आपक रक्षा करता है तथा शैतान की युक्तियों को आप पर प्रबल नहीं होने देता।
- ❒ परमेश्वर का धन्यवाद करें कि वह शैतान को हराने की सामर्थ रखता है। उसक धन्यवाद करें कि वह व्यक्तिगत रूप से आपको शैतान की हर कोशिशों पर विज पाने की सामर्थ देता है।

अध्याय **19**

समुद्र में से निकला हुआ पशु

(पढ़ें प्रकाशितवाक्य 13:1-10)

प्रकाशितवाक्य 13 अध्याय में जिन पशुओं का वर्णन पाया जाता है उनके विषय पता लगाने में बड़ा वाद-विवाद है कि ये किसका प्रतीक हैं। इससे पहले के अध्याय यूहन्ना एक ऐसे विशाल लाल अजगर को दर्शन में देखता है जिसने स्त्री की शेष तानों (इस्राएल) को नाश करने का प्रयत्न किया। वहाँ अजगर शैतान का प्रतीक उसके प्रयत्न असफल कर दिए गये।

प्रकाशितवाक्य ग्यारह अध्याय में हमने पढ़ा कि किस प्रकार परमेश्वर अपने नाम गवाही के लिये पृथ्वी पर दो गवाहों को भेजता है। अब शैतान भी अपने दो पशु ता है। अध्याय 13 के पशु शैतान के दास हैं। वे परमेश्वर के कार्यों को नष्ट करने कोशिश करते हैं। अपने इस पाठ में हम तीन पशुओं पर मनन करेंगे।

पहला पशु समुद्र में से निकला। उसके दस सींग, सात सिर और सींगों पर दस ुट रखे थे। ध्यान देने की बात यह है कि मुकुट उसके सिर पर नहीं परन्तु सींगों थे। फिर यह भी ध्यान देने योग्य बात है कि उसके सिरों पर ईश-निन्दा के नाम खे थे। इन सब बातों को समझने के लिए हमें प्रकाशितवाक्य 17:9-12 पर ध्यान होगा, जहाँ इस प्रकार लिखा है:

''बुद्धि की बात तो यह है कि सातों सिर सात पर्वत हैं जिन पर वह स्त्री बैठी वे सात राजा भी हैं, जिनमें से पांच का पतन हो चुका है, एक अभी है, और दूसरा तक नहीं आया है। जब वह आएगा तो उसका कुछ समय तक रहना आवश्यक जो पशु पहिले था, और अब नहीं है, वह स्वयं आठवां है। वह उन सातों में से है जिसका विनाश निश्चित है। जो दस सींग तू ने देखे हैं, वे दस राजा हैं जिन्हें तक राजसत्ता नहीं मिली है, पर वे उस पशु के साथ घड़ी भर के लिए राजकीय धिकार पाएंगे।''

उपरोक्त पदों से हम जान लेते हैं कि प्रत्येक सींग और प्रत्येक सिर या तो रा का प्रतीक है या फिर किसी राजनैतिक शक्ति का प्रतीक है। जो पशु समुद्र में निकला था उसके सात सिर और दस सींग थे। वह राजाओं और राजनैतिक शक्ति की एक श्रृंखला को प्रदर्शित करता है। इन शक्तियों में कुछ तो आ चुकी हैं और च भी गई हैं। अन्य शक्तियाँ व राज्य अभी आने वाले हैं। जो शक्तियाँ आई थीं वे ब क्रूर और सामर्थी थीं। यूहन्ना पशु का चित्र खींचते हुए बताता है कि वह चीते सदृश था, उसके पैर भालू जैसे और उसका मुख सिंह के समान था। ये सभी प अन्य सब जंगली पशुओं से कहीं अधिक भयंकर, क्रूर और फुर्तीले होते हैं।

ध्यान दीजिए कि इस पशु की सामर्थ और क्रूरता का स्रोत अजगर था। ये राजनैति शक्तियाँ शैतान के नियंत्रण में थीं। इससे हमें पता चलता है कि हमारा शत्रु शैत बड़ा ही शक्तिशाली है। वह इस योग्य है कि लोगों को प्रभावित कर उन्हें अपनी अ कर सकता है। उसने मूसा के दिनों में मिस्र के राजा फिरौन को अपनी ओर कर इस्राएलियों के बच्चे मरवाने का विचार डाला। शैतान ने हेरोदेस राजा को प्रभावित कि कि खीस्त के दिनों में सब बालकों का घात कराया जाए। संपूर्ण इतिहास में हम प हैं कि शैतान ने राजनैतिक शक्तियों को प्रभावित किया जिसके कारण अनेकों ? के लोगों को जान से हाथ धोना पड़ा। जो पशु समुद्र में से निकला था वह ऐसी राजनैतिक शक्तियों का प्रतीक है।

ध्यान दीजिए कि एक पशु के सिर में प्राणघातक घाव था जो अब अच्छा हो ग था (पद-3)। इस पद का अर्थ लगाने में टीकाकार एक दूसरे से सहमत नहीं हैं। हम उद्देश्य भी यह नहीं है कि अनुमान लगाकर सही सही पता लगाएँ कि इस सिर संकेत किसकी ओर है। यह बात तो स्पष्ट है कि यह सिर किसी राजनैतिक अधिक या राजा की ओर संकेत करता है जिसका पतन लगभग तय हो था पर वह फिर अधिकार में आ जाता है और अपना गौरव प्राप्त कर लेता है।

पद तीन हमें बताता है कि सारा संसार पशु के पीछे हो लिया। हम यहाँ फिर शैतान का प्रभाव पड़ते देखते हैं। इन राजनैतिक अधिकारों के माध्यम से शैतान सा को धोखा देने में सफल हो जाता है। सारे लोग पूरी तरह शत्रु शैतान के धोखे में हुए हमें नजर आते हैं। उन्होंने अजगर की पूजा की क्योंकि उसने अपना अधिकार को दे दिया था। उन्होंने उसकी पूजा यह कहते हुए की, ''इस पशु के सदृश क है? कौन इसके साथ युद्ध कर सकता है?'' उन्होंने उसमें अपनी सुरक्षा पाई।

पशु को एक ऐसा मुंह दिया गया जिससे वह परमेश्वर के विरुद्ध निन्दा के

द बोल सके। इसमें कोई सन्देह नहीं कि यह मुंह उसे शैतान अर्थात् अजगर का र से दिया गया था। आज भी हमें कुछ देशों में लोग परमेश्वर की ओर से पीठ ते और उस से दूर भागते दिखाई देते हैं। मेरे देश कनाडा में परमेश्वर से संबंधित बात स्कूलों से, कार्यालयों से और सरकारी विभागों से दूर कर दी गई है। हम ु को स्पष्टत: क्रियाशील होते देख सकते हैं।

इस पशु को बयालीस माह तक कार्य करने का अधिकार दिया गया। प्रकाशितवाक्य रह अध्याय में जितना समय दो गवाहों को दिया गया था उतना ही समय इन्हें भी ा गया। प्रकाशितवाक्य 12 अध्याय में इतना समय स्त्री को अजगर से बचाने के ए दिया गया था। हमारे लिए ध्यान देने की मूल बात यह है कि पशु का अधिकार मित है। परमेश्वर उसे हमेशा तक अधिकार में बना नहीं रहने देगा। उसके कार्य अवधि सीमित है।

इन साढ़े तीन वर्षो या बयालीस महिनों के दौरान पशु ने परमेश्वर की भरपूर निन्दा । पशु ने परमेश्वर के नाम, उसके तम्बू और जो स्वर्ग में उसके साथ रहते हैं, सबकी न्दा की। परमेश्वर के कार्यो के विरुद्ध पशु की कड़वाहट को महसूस करना कठिन ीं। वह परमेश्वर से बड़ी घृणा करता है।

ध्यान दीजिए कि इस पशु को पवित्र लोगों के साथ युद्ध करने और उन पर विजय े का अधिकार दिया गया। उसका यह युद्ध प्रत्येक कुल, लोग, भाषा और जाति संतगणों के विरुद्ध होगा। अनेक लोगों के सामने भटकने की परीक्षा होगी। कुछ शैतान के बहकावे में आ भी जाएंगे।

कुछ ऐसे भी लोग होंगे जो डटकर उसका सामना करेंगे। जिनके नाम मेमने के जीवन पुस्तक में होंगे वे सफलतापूर्वक अन्त तक उसका सामना करेंगे। उन दिनों में श्वासियों पर सताव होगा। प्रभु अपनी सन्तानों का पशु द्वारा मारा जाना रोकेगा नहीं। जो बन्दी होने के लिए ठहराया गया है बन्दीगृह में डाला जाएगा। कुछ को तलवार ा मारे जाने के लिए ठहराया गया है। अन्त तक वे विश्वासयोग्य और सच्चे बने , इसीलिए वे बुलाए गये हैं। प्राण देने तक विश्वासी रहने के लिए उन्हें बुलाहट गई है।

जो विश्वासी इस समय पृथ्वी पर जीवित होंगे वे भारी दुख उठाएंगे। परमेश्वर ने से यह प्रतिज्ञा नहीं की है कि हमारी परिस्थितियाँ अच्छी रहेंगी। यह भारी सताव ब आ पड़ेगा, हम नहीं जानते। पवित्रशास्त्र यह चेतावनी अवश्य देता है कि सताव ना अवश्य है। सुसमाचार का लेखक हमें चुनौती देता है कि प्रभु के पीछे चलने

से पहले हम भली भाँति सोच लें कि भारी कीमत चुका सकेंगे या नहीं? (देखें लूक 14:28)। क्या आप यह जानते हुए कि आपको प्रभु के लिए बलिदान देना पड़ सकता है, उसके पीछे चलने का निर्णय लेंगे? परमेश्वर हमारी सहायता करे कि हम अप प्रभु के दास बनने की बुलाहट की गम्भीरता को पहचान सकें। प्रभु ऐसा होने दे कि हम उनमें से नहीं हों जो नाश होने के लिए पीछे हटते हैं, पर उनमें से हों, जो प्राण की रक्षा के लिए विश्वास रखते हैं (इब्रानियों 10:39)।

विचार-विमर्श के लिये प्रश्न :

- ❒ समुद्र से निकला पशु किस ओर संकेत करता है?
- ❒ समुद्र से निकला यह पशु कहाँ से अपनी सामर्थ व अधिकार पाता था?
- ❒ क्या वर्तमान समय में कोई राजनैतिक अधिकार का प्रमाण मिलता है जो शैतान द्वारा नियंत्रित हो और परमेश्वर के राज्य में बाधा उत्पन्न करता हो?
- ❒ संसार में इन राजनैतिक अधिकारों और शक्तियों को कैसे अधिकार प्राप्त हैं लो के विचारों पर उनका कैसा प्रभाव आज संसार में दिखाई देता है?
- ❒ उन विश्वासियों के साथ कैसा व्यवहार होता है जो उस समुद्र से निकले प को अस्वीकार करते हैं?
- ❒ समुद्र से निकले पशु का अधिकार सीमित है, आपको इस बात से क्या प्रोत्साह प्राप्त होता है? परमेश्वर के बारे में हमें इस से क्या शिक्षा मिलती है?

प्रार्थना के विषय :

- ❒ कुछ क्षण उनके लिए प्रार्थना करें जो आपके ऊपर शासन करते हैं। प्रभु से क कि वे शैतान और उसकी दुष्टता के प्रभाव से दूर रह सकें।
- ❒ प्रभु से प्रार्थना करें कि आप कठिन दिनों में स्थिर रह सकें और परीक्षा में f न जाएं और अन्त तक विश्वासी रह सकें।
- ❒ प्रभु का धन्यवाद करें कि जब विश्वासी कठिन समस्याओं से घिर जाएं तौ प्रभु उनके साथ है। धन्यवाद करें कि शैतान का अधिकार व सामर्थ सीमित

अध्याय **20**

पृथ्वी में से निकला हुआ पशु

(पढ़ें प्रकाशितवाक्य 13:11-18)

एक और पशु पृथ्वी में से निकला। पहला पशु जो समुद्र से निकला था वह सात र वाला विचित्र पशु था। हम जानते हैं कि यह अजगर शैतान का प्रतीक है। इस ान ने दूसरे पशु में अपने शब्द भर दिए जिससे वह उसी के समान बोलने लगा। ी 7:15 में यीशु ने क्या कहा, ध्यान दीजिए:

''झूठे नबियों से सावधान रहो जो भेड़ों के वेश में तुम्हारे पास आते हैं, परन्तु भीतर वे भूखे, फाड़-खाने वाले भेड़िए हैं।''

सन्त पौलुस 2 कुरिन्थियों नामक अपनी पत्री में बताते हैं कि, ''इसमें कोई आश्चर्य ीं, क्योंकि शैतान भी ज्योतिर्मय स्वर्गदूत का रूप धारण करता है'' (2 कुरि. 11:14)। पाठ में शत्रु शैतान की युक्तियाँ स्पष्ट हैं। वह धोखेबाजी करता है। यह दूसरा पशु ने में तो मासूम सा मेमना लगता था परन्तु अजगर के समान निन्दा भरी बातें ता था।

पृथ्वी की सारी सामर्थ और अधिकार उसके पास थे। पहले पशु के समान इसके भी वही सब अधिकार थे, परन्तु यह दूसरा पशु पहले के अधीन था और उसकी ा करता था। हम पहले ही देख चुके हैं कि पहले पशु ने सारे अधिकार शैतान ओर से प्राप्त किए थे। इस तरह दोनों पशु शैतान के हथियार थे।

दूसरा पशु पहले पशु का पूर्ण रूप से सच्चा भक्त था; वह उसकी सेवा करता और साथ ही पृथ्वी के सारे लोगों को उसकी पूजा करने को उभारता था। वह ों एक पुरोहित की भूमिका अदा करता था। उसे बड़े बड़े चमत्कार दिखाने का धिकार प्राप्त था। वह स्वर्ग से अग्नि बरसा सकता था। बहुत से लोग उसके चमत्कारों धोखा खा बैठे थे।

हमें विश्वासी होने के नाते बड़ा ही सतर्क रहने की आवश्यकता है। यदि सत नहीं रहेंगे तो अन्य अनेकों लोगों की तरह हम चिन्ह और चमत्कार देखकर इ ख्रीस्त-विरोधी के धोखे में पड़ सकते हैं। हमारा शत्रु बड़ा ही सामर्थी है। उसका उद्देश केवल धोखा देना है। मूसा के युग में, फिरौन के दरबार के जादूगरों ने वही चि कर दिखाए थे जो परमेश्वर ने अपने दास मूसा को दिए थे। जब मूसा ने अपनी ला भूमि पर डाली थी, वह सर्प बन गई थी। उन जादूगरों ने भी ठीक वैसा ही कर दि था (निर्गमन 7:11-12)। जब मूसा ने पानी को लहू बनाया था, तो फिरौन के जादूग ने भी पानी को लहू बना दिया था (निर्गमन 7:20-23)। शैतान अपनी ताकत से परमेश्व के लोगों को भी धोखा दे देता है।

अपने अधिकारों और सामर्थ का प्रदर्शन करके यह दूसरा पशु पृथ्वी के निवासि को धोखा देता और उनसे पहले पशु की मूर्ति की पूजा करवाता था। धोखा देने लिए वह पहला पशु मूर्ति में प्राण डाल देता था, और मूर्ति बोलने लगती थी। जो मू की पूजा नहीं करता था, उसे मार डाला जाता था। अपने प्राणों की रक्षा करने के लि अनेक लोग मूर्ति की पूजा करने लगते थे। कौन है जो ऐसे संकट के दिनों में ख्री के पक्ष में खड़ा हो सकेगा? कौन है जो दानिय्येल के मित्रों के समान बन सके जो मूर्ति की पूजा से इंकार कर सके? (दानिय्येल 3)।

वह दिन आने वाला है जब मसीहियों को सताव सहना पड़ेगा और अपने विश्वा के कारण बलिदान भी देना पड़ सकता है। ख्रीस्त के कारण शैतान कोड़े भी लग सकता है। उन दिनों विश्वासी भयंकर बाधाओं का सामना करेंगे। इस पाठ में हम पढ़ हैं कि पहला पशु अपने पीछे चलने वालों पर दबाव डालकर उनसे माथे पर या हा पर छाप लगवाने को कहता है, ताकि सब उस छाप को देख सकें। यह उसके स्वामि को दर्शाने वाली छाप थी। जिन पर वह छाप लगी हो, वे पशु के लोग समझे जा थे और उन्हें उनका भक्त बनने का गौरव प्राप्त होता था।

जिन पर यह छाप होती थी वे ही लेन-देन कर सकते थे, व्यापार कर सकते थ और जिन पर छाप नहीं होती थी और छाप लगवाना नहीं चाहते थे वे लोग घात क दिए जाते थे। उन दिनों एक विश्वासी के सामने यह सवाल होगा, ''क्या ख्रीस्त का इंकार कर दूं और अपने परिवार की रक्षा कर लूँ या फिर ख्रीस्त का विश्वा बना रहकर बलिदान हो जाऊं?'' ये बड़े कठिन दिन होंगे। ये वे दिन होंगे जब सच विश्वासियों को नामधारी विश्वासियों से अलग किया जाएगा।

पद 18 में हमें चुनौती दी जाती है कि हम पशु की संख्या का हिसाब लगा लें। इसका नम्बर 666 है। प्राचीन काल से ही टीकाकारों में इस नम्बर के विषय में बड़ा वाद-विवाद चलता आ रहा है। इस संबंध में भिन्न-भिन्न ऐतिहासिक महापुरुषों के नाम सुझाए गए हैं। लेकिन बाइबल हमें नहीं बताती कि यह पशु कौन है और क्या है? पद 18 यह जरूर बताता है कि यह 666 की संख्या किसी मनुष्य की है। वह छठा दिन था? जब परमेश्वर ने मनुष्यों की रचना की थी। छः की संख्या मनुष्य को दर्शाती है। सात की संख्या पूर्णता व सिद्धता को दर्शाती है, यदि और स्पष्टता से कहें तो यह संख्या स्वयं परमेश्वर का प्रतिनिधित्व करती है। हालांकि मनुष्य परमेश्वर की समस्त सृष्टि में सर्वोपरि है तौभी वह परमेश्वर से कम ही है। तब प्रश्न उठता है नम्बर 6 को तीन बार क्यों दोहराया गया है? यह इस कारण दोहराया गया है क्योंकि यह संख्या परमेश्वर की त्रिएकता पिता, पुत्र, पवित्रात्मा के विरोध में पशु की झूठी त्रिएकता को दर्शाती है।

बाइबल की व्याख्या करने का एक महत्वपूर्ण सिद्धान्त यह है कि बाइबल की व्याख्या बाइबल ही से करनी चाहिए। अक्सर बाइबल अपनी व्याख्या खुद करती है। बाइबल में ऐसे अनेकों उदाहरण मिलते हैं जिनके बारे में बाइबल कोई प्रकाश नहीं डालती जैसे कि अभी हमने 666 के बारे में देखा है। जिन विषयों पर बाइबल चुप रहती है, हमें भी उन विषयों पर चुप रहना चाहिए। हम किसी बात का अर्थ लगाने का अनुमान कर सकते हैं और सही अर्थ लगाने की कोशिश कर सकते हैं परन्तु हमारा अनुमान लगाना अनुमान ही रहना चाहिये।

इस पाठ में कुछ बातें स्पष्ट हैं जैसे वे दिन आने वाले हैं जबकि शैतान परमेश्वर की कलीसिया पर दबाव डालेगा। विश्वासियों पर कठिन समय आने वाला है। जो प्रश्न हमें अपने आप से पूछना है वह यह है कि क्या मैं प्रभु से इतना प्रेम करता हूं कि जब ऐसे क्लेश के दिन आएं तो मैं शत्रु के सामने खड़ा रह सकता हूं? क्या मैं उन विश्वासियों में गिना जा सकता हूं जो पशु का चिन्ह अपने माथे या दाहिने हाथ पर लगवाने से इंकार कर देंगे और प्रभु के कारण चिन्ह लगवाने की अपेक्षा प्राणों का बलिदान करना उचित समझेंगे? प्रकाशितवाक्य की पुस्तक हमें चेतावनी देती है कि शैतान पर परमेश्वर के अंतिम न्याय दंड से पहले हालात बहुत ही खराब हो जाएंगे। प्रभु अनुग्रह दे कि हम उन कठिन दिनों में स्थिर रह सकें।

विचार-विमर्श के लिये प्रश्न :

- पृथ्वी से निकला पशु किस से मिलता-जुलता था? इससे हमें शैतान की धोखेबाज़ी के विषय क्या पता चलता है?
- पृथ्वी से निकले पशु के अधिकार और उसकी बातों का स्रोत क्या था?
- समुद्र से निकले पशु और पृथ्वी से निकले पशु के बीच परस्पर क्या संबंध था?
- जो कोई भी पशु की मूर्ति की पूजा करने से इंकार करता था या पशु की छाप अपने माथे या दाहिने हाथ पर लगवाने से इंकार करता था, तो उसके साथ कैसा व्यवहार होता था?
- 666 की संख्या किस बात को दिखाती है?
- क्या आपको निश्चय है कि आप के अन्दर इतना साहस और बल है कि आप उन सताव के कठिन दिनों में प्रभु के विश्वासी जन बने रहेंगे?

प्रार्थना के विषय :

- प्रभु से बुद्धि व समझ मांगें कि आप उसे जान सकें और उसकी योजना को समझ सकें। अंत तक विश्वासी बने रहने का अनुग्रह मांगें।
- उनके लिए प्रार्थना करें जो कलीसिया के अंग तो हैं परन्तु परमेश्वर की महान सच्चाईयों का प्रचार नहीं करते। प्रभु से उनकी आँखें खोले जाने के लिए प्रार्थना करें कि कहीं उन्हें बाद में पछताना न पड़े।
- अपने आध्यात्मिक अगुवों के लिए प्रार्थना कीजिये कि वे शैतान द्वारा धोखा न खा बैठें और कहीं दूसरों को भी भटका न दें।

अध्याय **21**

एक लाख चौवालीस हज़ार गायकों का दल

(पढ़ें प्रकाशितवाक्य 14:15)

पृथ्वी पर घोर सताव होता रहा। दोनों पशु संसार को लूटते रहे। लोग घात किए ाते रहे। जिन लोगों ने पशु की छाप लगवाने से इंकार किया वे भारी क्लेश सहते हे। दोनों पशुओं ने कल्पना से बाहर अपनी शक्ति और अधिकार का दुरूपयोग पृथ्वी र किया। अपने चमत्कारों और चिन्हों द्वारा वे अनेक लोगों को धोखा देने में सफल रहे।

फिर यूहन्ना ने अपने दर्शन में सिय्योन पर्वत पर मेमने को खड़ा देखा। इस मेमने ो वह पशु न समझ लीजिए जो मेमने से मिलता-जुलता था। यह प्रकाशितवाक्य अध्याय 5 ा वह एकमात्र मेमना है जो पुस्तक की मोहर खोलने और पढ़ने के योग्य था। यह ेमना प्रभु यीशु मसीह है। मेमना सिय्योन पर्वत पर खड़ा था। सिय्योन पर्वत का अर्थ, ंदर्भ के अनुसार, स्वर्ग जान पड़ता है। एक लाख चौवालीस हज़ार व्यक्ति जो मेमने े साथ थे वे पद 3 के अनुसार वे लोग थे जो पृथ्वी पर से मोल लिए गए थे। अब मेमने के साथ स्वर्ग में सिंहासन के सम्मुख खड़े थे। उनके क्लेश का समय अब समाप्त हो चुका था। अब वे प्रभु परमेश्वर के साथ थे।

ध्यान दीजिए यह पाठांश इन 1,44,000 व्यक्तियों के संबंध में क्या बताता है। उनके ाथे पर पिता का नाम लिखा हुआ था। अन्य पृथ्वी के निवासियों के माथे पर पशु ा नाम लिखा था। फिर इन 1,44,000 व्यक्तियों ने पशु के नाम को लिखवाने का कार करके अपने स्वर्गिक पिता के नाम को लिखवाना बेहतर समझा।

पद 4 में हम पढ़ते हैं कि इन्होंने अपने आपको स्त्रियों के साथ भ्रष्ट नहीं किया ा, अपने आप को पवित्र रखा था। अधिकांश टीकाकार मानते हैं कि इन्होंने नैतिक ्प से अपने आपको पवित्र रखा और अपने परमेश्वर के आज्ञाकारी रहे।

ये 1,44,000 लोग मेमने के पीछे-पीछे जहाँ कहीं वह जाता था, चले थे। उन्हों मेमने की आज्ञा मानी और उसकी अगुवाई स्वीकार की। ध्यान दीजिए कि ये लोग पृथ्वी के निवासियों में से मोल लिए गए थे। मेमने का लहू उनके लिए बहाया गया था। उसने उन्हें अपने लिए मोल लिया था

वे मेमने के उस कार्य द्वारा चुने गए, बुलाए गए और बचाए गए लोग थे, जो मेमने ने उनके बदले में किया था। हालांकि वे यहूदी जाति के लोग प्रतीत होते हैं, तौभी उन्होंने निश्चय ही ख्रीस्त के कार्य को स्वीकार किया था जो मेमने के रूप में उनके लिए बलिदान हुआ था।

ध्यान दीजिए, ये लोग पिता के सम्मुख प्रथम फल होने को प्रस्तुत किये गए ख्रीस्त ने परीक्षाओं और क्लेशों में उनकी रक्षा की थी और पवित्र लोगों के रूप में वे पिता के सम्मुख प्रस्तुत किये गए थे। प्रथम फल एक प्रकार की धन्यवाद की भेंट हुआ करती थी जो परमेश्वर के सम्मुख चढ़ाई जाती थी। जिस प्रकार इस्राएल की बारियों के प्रथम फल जो परमेश्वर के भवन में भेंट चढ़ाए जाते थे, पवित्र और शुद्ध होना आवश्यक थे, उसी प्रकार ये सब व्यक्ति भी पवित्र और निर्दोष बलिदान के रूप में पिता के सम्मुख चढ़ाए गए। उनके मुह में कोई छल की बात नहीं थी, इनके जीवन में प्रभु की सहनशीलता का स्पष्ट प्रमाण दिखाई देता था। जब वे सताए जाते थे, प्रभु की उपस्थिति उनके साथ थी, उसने उन्हें छोड़ा नहीं था। कोई भी उनमें नष्ट नहीं हो गया। सबके सब पिता के सम्मुख प्रस्तुत किए गए।

जब यूहन्ना दर्शन देख ही रहा था तो उसने स्वर्ग से अपार जल की सी गर्जन की आवाज सुनी; जब उसने आवाज पर ध्यान लगाया तो उसे लगा जैसे वीणा वादक अपनी वीणाएं बजा रहे हों और गायकों का दल गीत गा रहा हो। वे स्वर्ग के सिंहासन के सामने गीत गा रहे थे। वह ऐसा गीत था जिसे 1,44,000 के अतिरिक्त कोई और नहीं गा सकता था और न सीख सकता था। ऐसा क्यों था कि 1,44,000 के अलावा कोई और वैसा गीत नहीं गा सकता था? लगता है ये परमेश्वर द्वारा विशेष उद्देश्य से चुने गए विशेष लोग थे जो पृथ्वी पर हो रहे सताव के मध्य से चुने गए थे। क्या यह विजय प्राप्त होने के उपलक्ष्य में स्तुति का गीत था, जो मेमने के द्वारा उन्हें प्राप्त हुई थी? क्या वह गीत उनकी व्यक्तिगत साक्षी प्रकट करने वाला धन्यवाद का गीत था? जब यूहन्ना ने यह गीत सुना तो उसने महसूस किया कि यह एक निजी धन्यवाद का गीत था। वे ऐसे संकट से निकलकर आए थे जिस से कभी कोई अब तक न गुजरा होगा। इसीलिए अब वे मेमने की स्तुति इस रीति से करते हैं जिस रीति से अब तक किसी ने न की होगी।

जय पाकर ये 1,44,000 लोग मेमने के साथ खड़े दिखाई देते हैं। मेमने के अनुग्रह ने उनकी अगुवाई की थी। ये पद हमें स्मरण कराते हैं कि हम भी मेमने के साथ विजय के पर्वत पर खड़े हो सकते हैं। ऐसा कोई संघर्ष नहीं जिस पर परमेश्वर विजय न पा सके। इस जय के गीत को सुनना क्या ही सुखद अनुभव रहा होगा! हम केवल कल्पना ही कर सकते हैं, कि हृदय कितना अधिक स्तुति, प्रशंसा और आराधना से उमड़ पड़ता है जब हम उस मेमने को सिंहासन पर विराजमान देखते हैं जिसने जय पाई और उन्हें जय प्रदान भी की।

परीक्षाओं की घड़ी में आइये हम फिर इस स्वर्गीय गायक दल का गीत सुनें। सभी एक लाख चौवालीस हजार आवाज़ों ने मिलकर उस परमेश्वर के अनुग्रह और ज्ञान की स्तुति, प्रशंसा और आराधना की जो उन्हें न तो छोड़ेगा और न कभी त्यागेगा। वह समय आने वाला है जब हम भी इस स्वर्गीय गायक दल के साथ स्वर्गीय सिंहासन के सम्मुख खड़े होकर अपनी आवाज़ें मिलाएंगे और उसकी स्तुति और धन्यवाद करेंगे। वह दिन आने तक परमेश्वर आपको अनुग्रह दे कि आप अन्त तक धीरज धरे रहें और विश्वास में स्थिर रहें।

विचार-विमर्श के लिये प्रश्न :

- पृथ्वी पर क्या घटनाएं हो रही थीं? इस पाठ के प्रारम्भ ही में क्या बताया गया है?
- 1,44,000 व्यक्ति इस अध्याय के अनुसार कहां थे? वे क्या कर रहे थे?
- 1,44,000 व्यक्तियों ने धीरज धरा और विजयी रहे, इस से आपको क्या प्रोत्साहन मिलता है?
- वर्तमान समय में आप किन संघर्षों का सामना कर रहे हैं? क्या परमेश्वर इन संघर्षों में आपका सहायक हो सकता है जैसे कि वह 1,44,000 का सहायक रहा?

प्रार्थना के विषय :

- प्रभु का धन्यवाद करें कि इतिहास की घटनाएं उसके नियंत्रण में हैं, उसके आने का समय निकट है जबकि परिस्थितियाँ और भयंकर हो जाएंगी। प्रभु सहायक रहे।
- प्रभु का धन्यवाद करें कि उसने आपको अभी तक परीक्षाओं में स्थिर रहने का

अनुग्रह प्रदान किया है। धन्यवाद करें कि जब हम में कमी पाई जाती है तो वह क्षमा प्रदान करता है।

- प्रार्थना करें कि अभी जिस परीक्षा का आप सामना कर रहे हैं उसमें विजयी रहने का प्रभु अनुग्रह प्रदान करें। सामर्थ के लिए प्रार्थना करें कि आप प्रभु के विश्वासयोग्य रह सकें।

- क्या आप किन्हीं परिचित विश्वासी लोगों को जानते हैं जो आजकल किसी विशेष विवाद से गुज़र रहे हैं? उनके लिए सामर्थी और विजयी होने के लिए प्रार्थना कीजिए।

- प्रभु का धन्यवाद करें कि हमें उस में अनन्त जीवन की उज्ज्वल आशा है। प्रार्थना करें कि आपकी आँखें वर्तमान परीक्षाओं और क्लेशों से हटकर उसी धन्य आशा की ओर लगी रहें।

अध्याय **22**

पृथ्वी की कटनी

(पढ़ें प्रकाशितवाक्य 14:6-20)

पिछले भाग में हमने 1,44,000 व्यक्तियों के स्वर्ग पर चले जाने के विषय में अध्ययन या। वे लोग उस सारी दुष्टता से बचा लिए गये थे जो उस समय पृथ्वी पर व्याप्त । इस पाठ में यूहन्ना की भेंट कुछ ऐसे स्वर्गदूतों से होती है जो पृथ्वी पर परमेश्वर न्याय दंड की घोषणा करते हैं।

पहला स्वर्गदूत मध्य आकाश में एक स्थान से दूसरे स्थान तक एक सुसमाचार लेकर ड़ता फिर रहा था। यह सुसमाचार पृथ्वी पर रहने वाली हर जाति, कुल, भाषा और गों को सुनाने के लिए अनन्त सुसमाचार था। उसने पृथ्वी के सब निवासियों को ताकर ऊंची आवाज़ में कहा कि परमेश्वर की महिमा करो। उसने उन्हें आमन्त्रित या कि वे उस परमेश्वर की आराधना करें जिसने स्वर्ग, पृथ्वी, समुद्र और जल सोते बनाए। ये सब लोग अब तक पशु की पूजा करते थे। परमेश्वर को पूरा अधिकार कि वह बिना दूसरा अवसर दिए उन्हें नाश कर सकता था। वे निस्सन्देह अनेकों गणों की मृत्यु के दोषी थे। 1,44,000 प्रभु के लोग परमेश्वर के गवाह के रूप पृथ्वी पर थे, लेकिन इन लोगों ने उनकी गवाही नहीं सुनी। परमेश्वर ने इन लोगों मन-फिराने का एक और अवसर दिया यह उसकी अनन्त करुणा और अनुग्रह प्रतीक है। यह अवसर उनके लिए अंतिम अवसर था कि वे मन-फिरा लें।

इस पहले स्वर्गदूत के तुरन्त बाद एक और स्वर्गदूत आया जिसने बाबुल के पतन घोषणा की। इस जाति ने अपने कुकर्म की वासनामय मदिरा पी थी। इन्होंने पाप पड़कर परमेश्वर की ओर से पीठ फेर ली थी। बाबुल परमेश्वर के लोगों को उनके से ले गया था; जो कुछ परमेश्वर ने उन्हें दिया था वह सब उसने उनसे छीन या था और उन्हें बन्दी बना लिया था। यहां बाबुल परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह करने र उसके वचनों का तिरस्कार करने का प्रतीक दिखाई देता है। यह उस दुष्टता का

प्रतीक है जो सारी पृथ्वी पर फैल गई थी और जो वहीं से आरम्भ हुई थी, अब बाबु
का पतन निकट था। इसका प्रभाव पूर्ण रूप से समाप्त होने वाला था. उस पर ज
पाई जाने वाली थी तो दूसरे स्वर्गदूत ने बाबुल के पतन की घोषणा की।

तीसरे स्वर्गदूत ने उन लोगों को चेतावनी दी जो पशु की मूर्ति की पूजा करते थ
और जिनके माथे पर उसकी छाप लगी थी। उन्हें परमेश्वर के प्रकोप की मदिरा पी
पड़ेगी। यहां परमेश्वर के प्रकोप का चित्र मदिरा के प्याले के रूप में दिखाया गय
है। मदिरा उस मूर्तिपूजा करने वाले पर पूरा प्याला भरकर उंडेली जाएगी। उनका दण
बड़ा दुखदाई होगा। जो पशु की मूर्तिपूजा करने वाला होगा उसे स्वर्गदूतों और परमेश्व
की उपस्थिति में आग और गन्धक की घोर यातना सहनी पड़ेगी। उनकी यातना क
धुआँ युगानुयुग उठता रहेगा। वे दिन रात पीड़ा और दुख में कराहते रहेंगे। नरक बड़
भयानक जगह होती है। लोगों को नरक के बारे में अनेकों बार चेतावनी दी जा चुक
है। वह दण्ड देने में निष्पक्ष है। यदि आपको अपने उद्धार का निश्चय नहीं है तो आपक
परमेश्वर के प्रकोप से डरना चाहिए और संपूर्ण हृदय से परमेश्वर की खोज करन
चाहिये। परमेश्वर की खोज करने का निर्णय लेना आपके जीवन का सबसे महत्वपू
निर्णय होगा। अपना जीवन बिना उद्धार के निश्चय के न बिताएँ; निश्चय कर लीजि
कि आपका स्थान स्वर्ग में है या नहीं।

ध्यान दीजिए, पशु के नाम की छाप लेने से इंकार करना सरल कार्य नहीं है। विश्वा
को सहनशक्ति और धीरज धरने की आवश्यकता होगी, कुछ विश्वासियों को दुख उठा
पड़ सकता है और अपने विश्वास के कारण मरना भी पड़ सकता है। लेकिन विश्वासि
की मृत्यु उस युगानुयुग के भयंकर प्रकोप के सामने जो पशु की पूजा करने वा
पर परमेश्वर की ओर से पड़ेगा, कोई मायने नहीं रखती। जो प्रभु के नाम में मरते
वे धन्य हैं। उनका भविष्य का जीवन बड़ा गौरवपूर्ण होगा। अपने अनन्त जीवन
निवास स्थान में विश्वासी अपने संघर्षों और परीक्षाओं से विश्राम पाएंगे।

पहले तीन स्वर्गदूतों ने पृथ्वी के निवासियों को चेतावनी दी। अब वह समय
गया था कि परमेश्वर का प्रकोप पड़े। यूहन्ना ने एक उज्ज्वल बादल और उस बाद
पर मानव पुत्र के सदृश किसी को बैठे देखा जिसके सिर पर सोने का मुकुट रख
था। वह अपने हाथ में तेज हँसिया लिये था। तब एक और स्वर्गदूत मंदिर में से निकल
और उसे आज्ञा दी कि हँसिया लगाकर पृथ्वी से फसल काट ले। और तब वह
बादल पर बैठा था, उसने अपना हँसिया पृथ्वी पर लगाई और पृथ्वी की फसल क
ली गई।

यह मानव-पुत्र कौन है? इस संबंध में बड़ा मतभेद पाया जाता है। समस्या का
ात यह है कि यूहन्ना यहाँ यह बताता है कि ''मानव-पुत्र के सदृश'' कोई बैठा
। (पद-14)। यूहन्ना इस व्यक्ति को मानव पुत्र के समान बताता है। यीशु के अनेकों
त्रों में उसे महिमान्वित यीशु के रूप में दिखाया गया है, लेकिन यूहन्ना यहाँ इस
क्ति के बारे में ज्यादा कुछ बताने में समय नहीं लगाता वह केवल इतना ही बताता
कि यह व्यक्ति मानव-पुत्र जैसा लगता था। फिर हम यहाँ पढ़ते हैं कि इस व्यक्ति
 पास एक स्वर्गदूत आकर पृथ्वी की फसल काटने की आज्ञा देता है। अगर हम
ह मानें कि यह व्यक्ति जो मानव पुत्र के समान है, स्वयं यीशु ही था, तो यह उपयुक्त
हीं जान पड़ता कि हमारे प्रभु यीशु को एक स्वर्गदूत आकर पृथ्वी की फसल काटने
ी आज्ञा दे।

हमें यहाँ नहीं बताया जाता है कि स्वर्गदूत ने क्या फसल काटी। यह पहली फसल
ी जो काटी गई। यह संभव हो सकता है कि यह फसल विश्वासी और अविश्वासी
ो अलग अलग करने की फसल हो। हम आगे देखेंगे कि दूसरी फसल जो काटी
ई वह पहली फसल से बिल्कुल भिन्न फसल है। इससे पहले कि परमेश्वर पृथ्वी
र अपना प्रकोप डाले, ऐसा जान पड़ता है कि वह विश्वासियों को हटा लेना चाहता
। वह इसलिए उन्हें पृथ्वी से हटा लेना चाहता है ताकि वे 1,44,000 में शामिल
ोकर युगानुयुग उसके साथ स्वर्ग में रहें। इस फसल के बाद उन लोगों पर जो पृथ्वी
र बचेंगे, परमेश्वर का भारी प्रकोप और विनाश आ पड़ेगा।

तब एक और स्वर्गदूत उस मंदिर में से निकला जो स्वर्ग में है (पद 17)। उसके
ाथ में भी एक तेज हँसिया थी। फिर यूहन्ना देखता है कि एक और स्वर्गदूत वेदी
 निकला जिसे वेदी की अग्नि पर अधिकार था। उसने जिसके हाथ में हँसिया थी,
स से कहा कि अपनी तेज हँसिया से पृथ्वी की दाखलता से दाख के गुच्छे काट
। वेदी की अग्नि किस बात का प्रतीक है? क्या यह संभव है कि यह अग्नि परमेश्वर
 न्याय और उसकी पवित्रता को दिखाती है? परमेश्वर अपने न्याय और पवित्रता
 पृथ्वी पर दंड भेजने वाला था। स्वर्गदूत अपनी हँसिया लगाकर दाखलता की फसल
ाट चुका था। ये दाखलता उन लोगों का प्रतीक हो सकती है जो पृथ्वी पर शेष बचेंगे।
दाखलता के गुच्छे परमेश्वर के प्रकोप के विशाल रस कुण्ड में डाल दिए जाएंगे,
र्थात् अविश्वासी लोगों पर परमेश्वर का प्रकोप पड़ेगा। वे रौंदे जाने के लिए ठहराए
ाएंगे। उनको इतना रौंदा जाएगा जब तक कि उनका लहू बहने की ऊंचाई घोड़ों की
गामों तक और उसकी दूरी तीन सौ किलोमीटर तक न हो जाए (पद-20)।

हमारे लिए क्या ही गम्भीर चेतावनी यह है! न्याय का दिन करीब है। बड़ा ही गम्भीर वह दिन होगा। परमेश्वर अपना भारी प्रकोप प्रकट करेगा। वह पवित्र परमेश्वर है। अवश्य है कि वह न्याय करे। पवित्र परमेश्वर होने के साथ-साथ वह दयालु परमेश्वर भी है। वह हमें हर संभव अवसर देता है कि हम उसकी ओर फिरें। अदन की वाटिका से ही आरम्भ करके वह बार बार चेतावनियाँ देता रहा है। पर मानव-जाति हजारों वर्षों से उसकी ओर से पीठ फेरती रही है। अब वह दिन निकट है जब वह चेतावनी देना बन्द करके अपना प्रकोप डालने वाला है।

विचार-विमर्श के लिये प्रश्न :

- इस पाठ में प्रभु ने पृथ्वी के निवासियों को कौन कौन से अवसर मन-फिराने के लिए दिए?
- बाबुल कौन सी बातों का प्रतीक है? इसका परिणाम क्या हुआ?
- अविश्वासियों के अनन्त दंड के बारे में हम यहां पाठ में क्या सीखते हैं? यूहन्ना ने नरक की क्या विशेष तस्वीर देखी?
- विश्वासियों के पृथ्वी पर सताव की तुलना अविश्वासियों के अनन्त दण्ड के विश्वास से कीजिए। आपको इससे क्या चुनौती मिलती है?

प्रार्थना के विषय :

- प्रभु का धन्यवाद कीजिए कि वह अपनी बड़ी दया के कारण से पापी लोगों को चेतावनी देता और निवेदन करता है कि वे मन फिराएं।
- प्रभु का धन्यवाद करें कि वह दिन आने वाला है जब दुष्ट नाश किए जाएंगे और धार्मिकता की विजय होगी।
- कुछ क्षण प्रभु का धन्यवाद दीजिए, हालांकि विश्वासी लोगों को इस समय दुख उठाना पड़ सकता है तौभी उनके पास धन्य आशा है कि वे पिता परमेश्वर की उपस्थिति में रहेंगे।
- कुछ क्षण अपने उन मित्रों और पड़ोसियों के लिए प्रार्थना कीजिए जो प्रभु यीशु के विषय में कुछ नहीं जानते और न ही उन्होंने अपने पापों की क्षमा पाई है। प्रभु से प्रार्थना करें कि आपको अवसर मिले ताकि आप उन्हें यीशु के बारे में और यीशु में जो आपकी धन्य आशा है उसके बारे में भी बता सकें।

अध्याय 23

्रकोप के सात कटोरों का उंडेला जाना

(पढ़ें प्रकाशितवाक्य 15-16)

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के 15 और 16 अध्यायों का एक साथ अध्ययन करना ाहिए। इन अध्यायों में हमें सात स्वर्गदूतों का वर्णन मिलता है जिनके पास अंतिम ात विपत्तियाँ थीं जो पृथ्वी पर पड़ने वाली थीं। जब ये विपत्तियां पड़ चुकेंगी तब रमेश्वर का प्रकोप पूर्ण हो जाएगा।

जब यूहन्ना इन स्वर्गदूतों को देख रहा था तो उसने देखा कि स्वर्ग में एक अग्नि-मिश्रित ांच का एक समुद्र या हौद है। हम प्रकाशितवाक्य 4:6 में भी ऐसा समुद्र या हौद ख चुके हैं। तो भी इन दोनों समुद्रों के मध्य अन्तर है अर्थात् वह समुद्र जो 4 अध्याय हैं तथा वह जो 15 अध्याय में है। जो समुद्र अध्याय 4 में पाया जाता है वह स्फटिक समान काँच का समुद्र था। और यहाँ 15 अध्याय का समुद्र अग्नि-मिश्रित काँच ा समुद्र है।

प्रकाशितवाक्य 4 में हम पढ़ते हैं कि समुद्र या हौद परमेश्वर के स्वर्गीय सिंहासन सामने था। हम निस्सन्देह अनुमान लगा सकते हैं कि अध्याय 15 का समुद्र भी ्वर्गीय सिंहासन के सामने है। बहुत संभव है कि ये समुद्र उस हौद की ओर संकेत रते हैं जो मिलाप वाले तम्बू में था और वेदी के निकट जाने से पूर्व जहाँ याजक पने आपको शुद्ध किया करते थे।

समुद्र अग्नि-मिश्रित क्यों था? क्या यह संभव नहीं हो सकता है कि यह अग्नि ताव और क्लेशों की अग्नि थी जिसने उन सब सन्तगणों को शुद्ध कर दिया था जो सके चारों ओर खड़े थे? क्योंकि अग्नि और जल दोनों मनुष्यों को पवित्र करने की स्तुएँ होती हैं। वे सभी सन्तगण जो समुद्र पर खड़े थे, वे थे जिन्होंने पशु की व सकी मूर्ति की पूजा नहीं की थी। अनेक सन्तगण शहीद भी हो चुके थे। उन्हें अग्नि ौर जल में से होकर गुजरना था ताकि उस पार स्वर्गीय महिमा में प्रवेश कर पाते।

जिन्होंने पशु पर जय पाई थी उन्हें एक एक वीणा दी गई। वे समुद्र से शुद्ध किए गए थे और अब अपने परमेश्वर के साथ खड़े थे। वे मूसा का गीत गा रहे थे। यह मूसा का गीत कौन सा गीत था? जब परमेश्वर ने उसके द्वारा इस्राएलियों को मिस्र की गुलामी से छुड़ाया था तब मूसा ने एक छुटकारे का गीत गाया था। उन लोगों के पास भी ऐसा ही गीत था जो सिंहासन के सामने खड़े थे। वे पशु के चंगुल से छुड़ाए गए थे। अब वे उस परमेश्वर की उपासना कर रहे थे जिसके काम अद्‌भुत हैं। उसने सिद्ध कर दिया था कि वही एक ऐसा सर्वशक्तिमान परमेश्वर है जिसके लिए कोई कार्य कठिन नहीं। उसके मार्ग धर्म-संगत और सच्चे हैं। इन्हीं सब बातों के कारण अब वे उस परमेश्वर की उपासना कर रहे थे।

कभी कभी हमारे जीवनों में परीक्षाओं के दौरान ऐसा भी समय आता है जब हम परमेश्वर के न्याय के संबंध में सन्देह करने लगते हैं। ये लोग तौभी अब विशाल समुद्र पार करके स्वर्ग के किनारे पर खड़े हैं, और अब वे यह कह सकते हैं कि वह पशु के हाथों निर्दयता से मार डाले तो ज़रूर गए थे, पर उनके परमेश्वर ने उन्हें त्याग नहीं दिया था। उन्होंने अपने जीवन काल में ऐसे परमेश्वर की सेवा की थी जो अपनी प्रतिज्ञाओं में विश्वासयोग्य रहने वाला परमेश्वर है। उन्होंने ऐसे परमेश्वर की सेवा की थी जो अपने सब कार्यों में सच्चा और धर्मी है।

ये लोग जिस परमेश्वर की उपासना कर रहे थे वह युगों का राजा था। वह युगानुयुग का सर्वोच्च परमेश्वर था। सब पर उसका नियंत्रण था। सब प्राणियों को उसका भय मानना आवश्यक था। केवल वही एकमात्र पवित्र परमेश्वर था। उसमें लेशमात्र भी पाप नहीं था। उसने अपने हर कार्य बड़ी बुद्धिमानी के साथ किये थे। सब जातियों को उसके आगे दण्डवत् करना चाहिये था क्योंकि अब वह पृथ्वी का न्याय करने जा रहा था। पशु के भारी क्लेशों को सहने बाद इन लोगों द्वारा जो साक्षी परमेश्वर के अनुग्रह के संबंध में दी गई वह क्या ही अद्‌भुत व प्रभावशाली साक्षी थी।

जब यूहन्ना ने स्तुति का गीत सुना होगा तो उसका हृदय आनन्द से भर गया होगा। फिर उसने आँखें उठाकर देखा तो उसे साक्षी का तम्बू दिखाई दिया। पुराने नियम के काल में परमेश्वर की उपस्थिति इसी साक्षी के तम्बू में थी। परमेश्वर स्वयं को वहीं प्रकट किया करता था। उस तम्बू में से सात स्वर्गदूत सात विपत्तियाँ लिए हुए निकले। इन स्वर्गदूतों ने मलमल के शुद्ध व चमकदार वस्त्र पहिने हुए थे और अपने सीने पर सोने की पट्टियाँ बाँधी हुई थीं। वे याजकीय वस्त्र पहने हुए थे। चारों प्राणियों में से एक ने इन सातों स्वर्गदूतों को परमेश्वर के प्रकोप से भरे हुए सात सोने के कटोरे दिये।

जब ये कटोरे दे दिए गए तो मंदिर में धुआँ भर गया। यह धुआँ परमेश्वर की उपस्थिति

और महिमा को प्रकट करने वाला धुआँ था। जब तक कटोरे पृथ्वी पर न उंडेल दिए गए तब तक कोई भी मंदिर में प्रवेश नहीं कर सका। आइये अब हम देखें कि इन कटोरों में क्या था?

पहले स्वर्गदूत ने अपना कटोरा पृथ्वी पर उंडेला। उसके कटोरे में कष्टदायक फोड़े थे जो उन लोगों को निकल आए जिन्होंने पशु की पूजा की थी और उसकी छाप लगवाई थी। किसी विश्वासी के फोड़ा निकला हो, ऐसा कोई विवरण अभी तक नहीं है।

दूसरे स्वर्गदूत ने समुद्र के जल में अपना कटोरा उंडेला। इससे समुद्र का जल लहू बन गया। ऐसा ही वर्णन हम प्रकाशितवाक्य 8:8 में भी पाते हैं। पर वहाँ केवल समुद्र का एक तिहाई भाग ही लहू बना था। यहाँ समुद्र के प्रत्येक जल-जन्तु भी मर जाते हैं। क्योंकि समुद्र पर यह अंतिम न्याय दंड था।

तीसरे स्वर्गदूत ने अपना कटोरा नदियों और जल-स्रोतों पर उंडेला जिससे सारा जल लहू बन गया। स्वर्गदूत ने पृथ्वी के लोगों को स्मरण भी कराया कि परमेश्वर पवित्र और न्यायी है। उसने पृथ्वी के लोगों को बताया कि उन्होंने पवित्र लोगों और नबियों का लहू बहाया है। अब परमेश्वर अपने दासों के लहू का उनसे बदला ले रहा है।

चौथे स्वर्गदूत ने अपना कटोरा सूर्य पर उंडेला। इससे सूर्य का ताप और अधिक बढ़ गया। पृथ्वी निवासी प्यासे होकर तपने लगे। गर्मी सहन से बाहर हो गई। पीने के लिए पानी भी नहीं रहा था। उनकी मृत्यु और पीड़ा बड़ी भयानक थी। तौभी उन्होंने अपने पापों से मन न फिराया। उन्होंने अपना हृदय कठोर बनाए रखा और स्वर्ग के परमेश्वर की निन्दा करते रहे।

पाँचवें स्वर्गदूत ने अपना कटोरा पशु के सिंहासन पर उंडेला। इस से उसके राज्य में अंधेरा छा गया। हो सकता है सूर्य का प्रकाश जाता रहा हो। अंधकार को भ्रम और अस्त-व्यस्तता का प्रतीक भी माना जा सकता है। अंधकार के फलस्वरूप संपूर्ण मानव जाति अपनी पीड़ाओं में पड़ी कराहती रही। वे समझते रहे कि पशु से अधिक शक्तिमान कोई नहीं है। तौभी उन्होंने अपने विद्रोही स्वभाव से मन न फिराया और अपनी पीड़ाओं के कारण स्वर्ग के परमेश्वर की निन्दा करते रहे।

छठे स्वर्गदूत ने अपना कटोरा फ़रात नामक महानदी पर उंडेला। इस से उसका जल सूख गया और पूर्व दिशा के राजाओं के लिए मार्ग तैयार हो गया। फ़रात नदी ने शत्रुओं के लिये एक प्राकृतिक बाधा उत्पन्न कर रखी थी जिसके कारण वे परमेश्वर की प्रजा इस्राएल पर आक्रमण नहीं कर पाते थे। इस नदी के सूख जाने से अब शत्रु इस्राएल

पर आक्रमण कर सकते थे। सृष्टि निर्माण के समय भी यह नदी विद्यमान थी जो अदन की वाटिका के मध्य से बहती थी। सृष्टि के विनाश का दृश्य भी इसी नदी की आंख के सामने होगा। अब महान युद्ध के दिन के लिए मार्ग तैयार हो चुका था।

जब फ़रात नदी का पानी सूख गया तब यूहन्ना ने तीन अशुद्ध आत्माओं को देख जो मेंढकों से मिलती-जुलती आकृति की थीं। ये अशुद्ध आत्माएँ अजगर, पशु और झूठे नबी के मुंह से निकलीं थीं अर्थात् प्रत्येक से एक एक अशुद्ध आत्मा निकली थी। यह जानते हुए कि अब उनका अन्त समय आ पहुंचा है, वे जाकर समस्त संसार के राजाओं को सर्वशक्तिमान परमेश्वर के उस महान दिन के युद्ध के लिए एकत्र करती हैं। वे जानती हैं कि वे परमेश्वर को हरा नहीं सकती हैं तौभी अपने हृदयों की कठोरता के कारण वे ऐसा करती हैं। यूहन्ना पाता है कि ये दुष्टात्माएं अपने चिन्हों और चमत्कार के साथ राजाओं के पास जाती हैं, उन्हें धोखा देती हैं और उन्हें युद्ध में आने के लिए तैयार करती हैं। वे अपनी पराजय से पहले जितना विनाश कर सकती हैं, करने का प्रयत्न करती हैं। अंतिम युद्ध जिस स्थान पर होना है उस स्थान का नाम हर-मजदौन है

परमेश्वर पृथ्वी के निवासियों को चेतावनी देता रहा कि वे जागृत रहें क्योंकि वे नहीं जानते कि किस दिन वह आ जाएगा। वह चोर की तरह उसी घड़ी आएगा जब आने की किसी को आशा भी न होगी। उन्हें अपने वस्त्रों की चौकसी करनी थी कि कहीं शत्रु उन पर आक्रमण न कर दे और वे सोते पाए जाएं और उन्हें लज्जा उठानी पड़े। प्रभु अन्त समय तक उन पर दया दिखाता रहा।

तब सातवें स्वर्गदूत ने अपना कटोरा वायु पर उंडेल दिया। और बिजली चमकी आवाज़ और गर्जन हुआ, और एक ऐसा बड़ा भूकम्प आया जैसा पृथ्वी पर मनुष्य की उत्पत्ति से लेकर अब तक कभी न आया था। भूकम्प इतना बड़ा और शक्तिशाली था जिससे महानगरी अर्थात् बाबुल के तीन टुकड़े हो गए और राज्य राज्य के नगर धराशायी हो गए। बाबुल को परमेश्वर के प्रकोप की मदिरा पीनी पड़ी। यह विनाश इतना भयंकर था कि सब द्वीप टल गए तथा पर्वतों का पता तक न चला। मन-मन भर वजन के ओले आकाश से मनुष्यों पर पड़ने लगे। यह ओले पृथ्वी पर परमेश्वर का न्याय-दंड था। संपूर्ण पृथ्वी इनके कारण नाश हो गई।

हालांकि पृथ्वी के निवासियों ने इन भारी विपत्तियों को देखा पर तौभी वे परमेश्वर की निन्दा करते रहे। मानव हृदय कितना कठोर हो सकता है यह स्पष्ट हो जाता है परमेश्वर का यह प्रकोप उन पर उचित ही था। वे प्रभु की निन्दा करते हुए ही अपनी कब्रों में चले जाएंगे। यदि हम परमेश्वर के अनुग्रह को अपने जीवन में कार्य करने

और अपने पत्थर के हृदय को दूर करने दें तो हम भी उस भीड़ में शामिल हो कते हैं जो उसकी उपासना कर रही थी। आज हमें किस प्रकार की आराधना करने ी आवश्यकता है? उसने हमें नई सृष्टि बनाया है अतः हमें निरंतर उसकी स्तुति ाराधना में लगे रहने की आवश्यकता है। उसके अनुग्रह ही ने हमारे विद्रोही स्वभाव ो हम से दूर किया है और हमें छुटकारा दिया है। उसकी स्तुति के गीत गाते रहिए।

चार-विमर्श के लिये प्रश्न:

। प्रकाशितवाक्य 4 के कांच के समुद्र और अध्याय 15 के समुद्र के बीच क्या अन्तर पाया जाता है?

। प्रकाशितवाक्य 15 के सन्तगण किस प्रकार शुद्ध और पवित्र किए गए?

। दुख किस प्रकार हमें शुद्ध बनाते हैं? जिन परीक्षाओं का आपने जीवन में सामना किया उनके द्वारा आप किस प्रकार प्रभु की निकटता में आए?

। दुखों, सतावों और अपनी मृत्यु के बावजूद सन्तगण स्वर्ग में प्रवेश करके कांच के समुद्र के समीप खड़े होकर प्रभु परमेश्वर की उपासना कर सके। अपने दुख मुसीबत में क्या आपको भी परमेश्वर की आराधना करना चाहिए?

। परमेश्वर के प्रकोप के विषय में पृथ्वी के लोगों का कैसा व्यवहार रहा? उन्होंने परमेश्वर को क्या जवाब दिया या कैसी प्रतिक्रिया दी? इस से मानवीय हृदय के बारे में क्या पता चला है?

ार्थना के विषय :

। परमेश्वर का धन्यवाद करें कि आप अपने जीवन की दुर्घटनाओं के माध्यम से भी उसकी निकटता में आ सकते हैं।

। अपनी विषम परिस्थितियों में भी क्यों परमेश्वर की स्तुति, प्रशंसा करते रहना चाहिये, ज़रा सोचें। और उसकी स्तुति करें।

। प्रभु का धन्यवाद करें कि उसे यह भला लगा कि उसने आपके हृदय की कठोरता दूर की ताकि आप उसे उचित प्रत्युत्तर दे सकें।

। अपने मित्रों, रिश्तेदारों और जिन्होंने अभी तक प्रभु को स्वीकार नहीं किया है, सबके लिए प्रार्थना करें कि प्रभु उनका हृदय कोमल बनाए।

अध्याय **24**

वेश्या और पशु

(पढ़ें प्रकाशितवाक्य 17:1-18)

इस संसार में अनेकों लुभाने वाली बातें पाई जाती हैं। इन लुभाने वाली बातों में फंसकर असंख्य विश्वासी स्त्री पुरुषों ने अपना विश्वास रूपी जहाज़ डुबा कर नष्ट कर लिया क्योंकि वे सुखविलास की ओर आकर्षित हुए।

सातवें कटोरे के उंडेले जाने के बाद एक स्वर्गदूत ने यूहन्ना के पास आकर उसे एक बड़ी वेश्या का दंड दिखाने के लिए बुलाया। यह बड़ी वेश्या कौन थी? स्वर्गदूत ने यूहन्ना को बताया कि पृथ्वी के राजाओं और पृथ्वी के रहने वाले अनेकों लोगों ने इस वेश्या के साथ व्यभिचार किया है। अधिकांश टीकाकार इस वेश्या को परमेश्वर के विरोध की प्रत्येक बात का प्रतीक मानने पर सहमत हैं। कुछ टीकाकार तो यहां तक भी विश्वास करते हैं कि यह वेश्या सांसारिक धन संपत्ति और सुख-विलास की भी प्रतीक है। यदि इस वेश्या के संबंध में यही धारणाएं हैं तो हम संसार में देख सकते हैं कि इसने अधिकांश लोगों को मतवाला बना दिया है। शैतान का उद्देश्य ही यही है कि हम अपनी ही महिमा करें और जितना भोग-विलास संसार में भोग सकते हैं, भोगें और आनन्द उठाते रहें। यह बड़ी वेश्या इसी जीवन-दर्शन का प्रतीक है।

ध्यान दीजिये कि यह वेश्या बहुत से जल पर बैठी थी। पद 15 में हम पढ़ते हैं कि यह बहुत सा जल लोगों, भीड़, जातियों और भाषाओं की ओर संकेत करता है। उसका जल पर बैठना हमें दर्शाता है कि वह इन सब बातों पर शासन करती है। ये सब उसके गुलाम हैं।

इस बात पर भी ध्यान दीजिए कि यह वेश्या स्वयं एक निर्जन प्रदेश में रहा करती थी। इससे आप अंदाज़ लगा सकते हैं कि यही उसका अंतिम स्थान होगा। क्या इसे प्रभु ने देश-निकाला देकर वहाँ भेज दिया था? हो सकता है उसके भोग-विलास ने ही उसे निर्जन प्रदेश की तरह शून्य और उजाड़ बना डाला हो? वह बैंजनी और किरमिजी

रंग के वस्त्र पहिने थी। बैंजनी और किरमिजी रंग के कपड़े राजकीय वैभव का प्रतीक होते हैं। मत्ती 27:28-29 में हम पढ़ते हैं कि राज्यपाल के सैनिकों ने यीशु के वस्त्र उतारकर उसे गाढ़े लाल रंग का अर्थात् किरमिजी रंग का चोंगा पहनाया था और कांटों का मुकुट गूंथकर उसके सिर पर रखा था, और एक सरकण्डा उसके दाहिने हाथ में देकर उपहास करते हुए कहा था, हे यहूदियों के राजा तेरी जय हो। फिर यह वेश्या सोने, बहुमूल्य रत्नों और मोतियों से सुसज्जित थी। वह इस प्रकार सांसारिक भोग-विलास में पड़ी थी, पर तौभी वह निर्जन प्रदेश में थी।

इसके हाथ में सोने का कटोरा था। वह कटोरा घृणित वस्तुओं से भरा हुआ था वह कटोरा उसके व्यभिचार की अशुद्धता से भरा था। बाहर से तो वह कटोरा बड़ा आकर्षक दिखाई देता था, पर अन्दर से वह दुष्टता से भरा था। यहाँ हम पाप का बड़ा सजीव विवरण पाते हैं।

यूहन्ना उसके माथे पर एक भेद लिखा देखता है, "महान् बाबुल: वेश्याओं और पृथ्वी की घृणित वस्तुओं की जननी।" वह रहस्यपूर्ण बाबुल थी। वह शाब्दिक् बाबुल नहीं, पर प्रतीकात्मक रूप से बाबुल थी। बाबुली लोग परमेश्वर के लोगों के शत्रु थे यह स्त्री उन सब बुरी वस्तुओं का प्रतीक है जिनसे परमेश्वर को घृणा है। वह वेश्याओं की जननी है। परमेश्वर को त्याग कर अन्य देवी देवताओं व मनुष्यों में अपनी समस्याओं का समाधान ढूंढना और परमेश्वर से अधिक उन्हें जीवन में स्थान देना आत्मिक वेश्यावृत्ति होता है। यह स्त्री इन्हीं सब बातों का प्रतीक थी जिसने सांसारिक भोग-विलास को परमेश्वर से अधिक महत्त्व दिया। वह पाप का और परमेश्वर को त्याग कर आत्मिक वेश्यागमन करने का प्रतीक थी।

यूहन्ना ने देखा कि यह स्त्री मतवाली हो गई है। वह मदिरा पीकर मतवाली नहीं हुई पर पवित्र लोगों के लहू से मतवाली हुई है। बाहर से तो यह स्त्री बड़ी सुन्दर दिखाई देती थी, पर अन्दर से बड़ी ख़तरनाक स्त्री थी। उसने बहुतेरे विश्वासियों का नाश किया था। वह विश्वासियों को नाश करने की मतवाली थी।

यह स्त्री पशु पर सवार थी। वह पशु निन्दा के नामों से भरा हुआ था। इस पशु के सात सिर और दस सींग थे। हो सकता है यह पशु वही पशु हो जिसका वर्णन अध्याय 13 में पाया जाता है। हमें प्रकाशितवाक्य 17:9-11 में बताया जाता है कि सात सिर सात पर्वतों के प्रतीक हैं। रोम नगर में सात पहाड़ पाए जाते हैं जिनके कारण रोम जगत प्रसिद्ध है। यूहन्ना तुरन्त समझ गया होगा कि ये सात सिर रोम नगर की ओर संकेत करते हैं। उन दिनों में रोम एक राजकीय अधिकार माना जाता था। रोम

ा कलीसिया के विरुद्ध एक राजनैतिक शक्ति का प्रतीक भी समझा जा सकता है।

12 से 14 पदों को पढ़ने से हमें ज्ञात होता है कि दस सींग दस राजाओं को दिखाते जिन्हें अभी राज्यसत्ता प्राप्त नहीं हुई है। एक का समय आने वाला है जब इन्हें सत्ता ाप्त होगी। उनकी यह सत्ता थोड़ ही दिनों की होगी। उनकी सत्ता का अभिप्राय इतना । होगा कि वे पशु के साथ मिलकर मेमने के विरुद्ध युद्ध करने में शामिल होवें। दस राजा कौन हैं, इसके बारे में नहीं बताया गया है। जो युद्ध होगा उसका परिणाम ाश्चित हो चुका है। पद-13-14 में स्पष्ट बताया गया है कि मेमना और विश्वासी ोग युद्ध में विजयी रहेंगे।

पद 8 से हमें ज्ञात होता है कि जिस पशु को यूहन्ना ने देखा था, ''वह था तो, रन्तु अब नहीं है, वह अथाह कुंड से अपने विनाश के लिए निकलने वाला है।'' ा पशु की सामर्थ का स्रोत शैतान है। प्रकाशितवाक्य 13:4 में इसी पशु का वर्णन जिसे अजगर (शैतान) ने अधिकार दिया था। इस प्रकार हम शैतान का प्रभाव आरम्भ ही संसार में देखते हैं। इस संदर्भ में शैतान पहले ही से था।

प्रकाशितवाक्य 16:10-11 में हम पाते हैं कि पशु के राज्य पर हर-मजदौन के द्ध से पहले अंधेरा छा गया था। अध्याय 20 में बताया जाता है कि शैतान को हज़ार र्षों के लिए अथाह कुंड में डाल कर बन्द कर दिया गया ताकि वह आगे संसार ो भरमाने न पाए। इस घटना को हम कह सकते हैं ''अब नहीं है।'' इसी समय विषय संदर्भ में ''अब नहीं है'' कहा गया है जबकि शैतान के कार्यों पर रोक गा दी जाएगी।

इन हज़ार वर्षों की समाप्ति पर शैतान आज़ाद कर दिया जाएगा और वह फिर अपना ार्य शुरू कर देगा। यदि हम प्रकाशितवाक्य 17:8 का अर्थ जानना चाहते हैं तो इस स्तक के शेष भागों को भी समझना आवश्यक है और उन्हीं भागों के संदर्भ में इसे मझा भी जा सकता है। इससे पहले कि शैतान आज़ाद हो और अपने अंतिम क्रोध ो प्रकट करे, उसकी सामर्थ ढांप दी गई है। उसका विनाश निश्चित है। पद 8 हमें ताता है कि वह अथाह कुंड से अपने विनाश के लिए निकलने वाला है। यह विचार काशितवाक्य 20:7-10 से पूर्णत: मेल खाता है जबकि शैतान कैद से आज़ाद कर या जाएगा और संसार को धोखा देगा और अन्त में आग की झील में डाल दिया ाएगा।

पद 16 में देखें, पशु इस वेश्या से बैर करेंगे, उसे उजाड़कर नग्न कर देंगे, उसका ास खाएंगे और उसे अग्नि में भस्म कर देंगे। हालांकि उस वेश्या ने अनेक बातों का

घमण्ड किया था, डींगें मारी थीं, अब वह असहाय हो गई थी। त्यागी हुई
हो गई थी।

कितने ही लोग संसार के सुख विलास और धन-संपत्ति के लालच में आ
प्रभु से दूर चले जाते हैं। वे नहीं जानते कि यह बाबुल का प्रतीक स्त्री जो प
पर बैठी हुई थी, शैतान का उस पर नियंत्रण था। ज़रा विचार कीजिए, आज कि
विश्वासियों ने सांसारिक आकर्षणों में पड़कर अपनी आत्मा का सर्वनाश कर लि
है? यह रहस्यमयी बाबुल सोने और बहुमूल्य रत्नों और मोतियों से सुसज्जित थी
हाथ में सोने का एक कटोरा लिए हुई थी जो बड़ा लुभावना था और जगमगा र
था। जिन्होंने इसमें से पिया उन्होंने अपने आपको शून्य पाया। इसका ज़हर उनकी आत्मि
सामर्थ्य नष्ट कर देता है। यह संसार हमें कोई भी ऐसी वस्तु नहीं दे सकता जिस
मूल्य हो।

यह पाठ हमें शिक्षा देता है कि सांसारिक सुख विलास अस्थाई होते हैं। क्या अ
ऐसे जहाज़ पर विश्वास करेंगे जिसमें छेद हो और जिसके डूबने की संभावना ह
क्या आप उस कटोरे से पीना चाहेंगे जो आपकी प्यास बुझाने में समर्थ नहीं है?

विचार-विमर्श के लिये प्रश्न :

- सुख-विलास के प्रति आकर्षित होने के संबंध में इस पाठ से क्या शिक्षा मिल
  है? क्या आपके पड़ोस में इन बातों के फंदे में लोग पड़े दिखाई देते हैं?
- परमेश्वर से दूर करने वाली किस विशेष बात के प्रति आप संघर्ष कर
  हैं?
- इस पाठ के अनुसार भोग विलास की ओर खींचने वाली कौन सी सामर्थ्य क
  करती है?
- शैतान और उसकी परीक्षाओं की पराजय के विषय में हम इस पाठ द्वारा क
  सीखते हैं?

प्रार्थना के विषय :

- परमेश्वर से प्रार्थना करें कि आपका ध्यान उसी की ओर केन्द्रित रहे। प्रार्थना
  कि आपको वह बचाए कि आप संसार के भोग विलास में पड़कर अंधे न
  जाएं।

क्या कोई विशेष बात है जिसके कारण आप आज प्रभु से दूर हो सकते हैं? प्रभु से प्रार्थना करें कि वह अपनी मनोहरता आप पर प्रकट करे। प्रार्थना करें कि आप उन सब बातों से मन-फिरा सकें जो आपको परमेश्वर से दूर ले जाती हैं।

प्रभु का इस आश्वासन के लिए धन्यवाद दीजिए कि शैतान अंत में पराजित होगा।

प्रार्थना करें कि परमेश्वर आपके समुदाय के लोगों की आँखें खोले कि वे ख्रीस्त की मनोहरता निहार पाएं। प्रार्थना करें कि उन पर शैतान का प्रभाव दूर हो और वे संसार और उसके आकर्षण की खोज में लगे रहने के बदले परमेश्वर की खोज कर सकें।

अध्याय **25**

बाबुल का पतन

(पढ़ें प्रकाशितवाक्य-18)

जैसे ही अध्याय 18 आरम्भ होता है यूहन्ना एक स्वर्गदूत को स्वर्ग से उतरते देखता इस स्वर्गदूत को काफ़ी अधिकार दिए गए थे। पृथ्वी उसकी महिमा और तेज से ाशित हो उठी थी। वह बड़ी सामर्थपूर्ण आवाज़ में बोला। उसने क्या बोला यह स्पष्ट नहीं है पर हम सोच में जरूर पड़ जाते हैं कि कहीं यह स्वर्गदूत हमारा प्रभु ु ही तो नहीं था।

यह स्वर्गदूत बाबुल के पतन की घोषणा करने के लिए स्वर्ग से उतरा था। एक य था जब बाबुल संसार की तमाम गतिविधियों का केन्द्र था। व्यापारी इसके समुद्री ं पर व्यापार करने आया करते थे। अब वह उजाड़ पड़ा था। अब यहाँ केवल दुष्टात्माएँ, ुद्ध आत्माएँ और अशुद्ध पक्षी ही शेष रह गए थे।

बाबुल पर परमेश्वर का न्याय दंड पड़ा था क्योंकि सब जातियों ने उसके व्यभिचार मदिरा पी थी, और पृथ्वी के राजाओं ने उसके साथ व्यभिचार किया था, तथा वी के व्यापारी उसके भोग-विलास के धन से धनवान हो गए थे। वही लोगों को ेश्वर से भटकाने और सांसारिक भोग विलास में खींचने का कारण थी।

यूहन्ना ने स्वर्ग से दूसरी आवाज़ सुनी। इस आवाज़ ने प्रभु के लोगों को बाबुल बाहर निकलने के लिए कहा। दो कारणों से प्रभु के लोगों को यह बाबुल नगर ड़ना था, जो भोग विलास की ओर खिंच जाने का प्रतीक था। पहला कारण यह कि परमेश्वर नहीं चाहता कि उसके लोग इस बाबुल के पापों में हिस्सेदार बनें। रा कारण यह था कि परमेश्वर नहीं चाहता था कि उसके लोग उन विपत्तियों में जो वे (बाबुलवासी) भोगेंगे (पद 4)।

बाबुल के दुराचारों में फंसने की परीक्षा मसीहियों के सामने थी। बाबुल इस संसार सुख विलास का प्रतीक है। कितने ही मसीही इन सांसारिक अभिलाषाओं में फंस

जाते हैं और भोग विलास की आशा करने लगते हैं। हमारे सामने चुनौती है कि ह सोने की चमक दमक के और भोग विलास के प्रलोभन में न पड़ जाएं। ये वस्तु हमें केवल प्रभु से दूर ही कर सकती हैं।

ध्यान दीजिए यहाँ प्रभु के लोग अविश्वासियों से अलग किए जाते हैं। बाबुल पर परमेश्व का भारी प्रकोप पड़ने से पहले परमेश्वर के लोग वहाँ से हटा लिये जाते हैं।

बाबुल के पापों का ढेर स्वर्ग तक पहुंच गया था। जैसे-जैसे उन पापों की सूच बढ़ी जिनका दण्ड अभी तक लोगों को नहीं मिला था, इससे लोग निश्चिंत होते ज रहे थे, वे समझने लगे थे कि अब उनके पापों का दण्ड उन्हें नहीं मिलेगा। उन्हों समझा कि परमेश्वर उनके पापों की अनदेखी कर देगा। पर ऐसा नहीं है। परमेश्व को उनकी एक एक दुष्टता और बुराई याद थी। उनके हर पाप का दण्ड पूरा पू परमेश्वर देगा। परमेश्वर ने कहा जिस सीमा तक उन्होंने अपनी बढ़ाई की है और भो विलास किया है, उसी सीमा तक उन्हें यातनाएँ और पीड़ाएं दी जाएं। इसका अ यह नहीं कि धन संपत्ति स्वयं में बुरी होती है। इन लोगों का पाप यह था कि इन्हों परमेश्वर से अधिक धन संपत्ति और भोग विलास से प्रेम रखा। ये उनके ईश्वर ब गए थे।

बाबुल और यह स्त्री घमण्ड का प्रतीक थी। उसने दावा किया था कि वह कभ दुख का सामना नहीं करेगी। पद 7 हमें बताता है कि उसने सीमा से बाहर अप बड़ाई की थी। लेकिन परमेश्वर उसे झूठा सिद्ध करेगा। उस पर महामारी, शोक, अका और मृत्यु आ पड़ेंगी। वह परमेश्वर के प्रकोप की ज्वाला से भस्म कर दी जाएगी

बाबुल के विनाश के फलस्वरूप लोगों की प्रतिक्रिया भी हम इस पाठ में पढ़ हैं। जिन राजाओं ने उसके साथ व्यभिचार किया था वे भयभीत हो जाएंगे (पद 9-10) वे समझ नहीं पाएंगे कि यह कैसे हो गया कि एक महान नगर इतनी जल्दी नष्ट ह गया। व्यापारी शोक में डूब जाएंगे क्योंकि उनकी आय का साधन जाता रहा (पद 11-17) समुद्री जहाजों के कप्तानों ने अपने सिरों पर धूल डाली और विलाप किया क्योंकि उनकी आय का साधन नष्ट हो गया था (पद 17-20)।

फिर अपने दर्शन में यूहन्ना ने देखा कि एक बलवान स्वर्गदूत ने चक्की के पा के समान एक विशाल पत्थर समुद्र में फैंक दिया। यूहन्ना ने उस स्वर्गदूत को य कहते भी सुना कि महानगरी बाबुल भी बलपूर्वक इसी प्रकार से फैंक दी जाएगी जब वह पाट समुद्र में फैंक दिया गया, उसका कोई पता न चला। यही दशा बाबु की होने जा रही थी।

बाबुल में फिर कभी संगीतज्ञों का संगीत सुनाई न देगा। सारे संगीत की मधुरता त्म हो जाएगी। शिल्पकार नहीं पाए जाएंगे। चक्की का स्वर सुनाई नहीं देगा क्योंकि लों में पीसने के लिए कुछ न होगा। दीपक का प्रकाश नहीं चमकेगा। दुल्हा-दुल्हन आनन्द के स्वर सुनाई न देंगे। बाबुल के व्यापारी जो संसार के सबसे धनी लोग ने जाते थे, वे सब विनाश के अधीन होंगे। बाबुल के जादू ने सब जातियों को भटका या था। वही अनेकों पवित्र लोगों की मृत्यु की उत्तरदायी थी, उनका लहू वहाँ की मि में था। बाबुल नगरी अपने भौतिकतावाद और अपने भोग-विलास के कारण परमेश्वर प्रकोप के अधीन होकर नाश हुई।

इस संसार का भोग-विलास और धन सम्पत्ति नाशवान है जो हमेशा तक नहीं रहेगा। त में हमें इससे असन्तुष्टि और निराशा ही मिलेगी। कितने ही लोग बाबुल के प्रलोभन आकर भटक गए और अन्त में आत्मिक उजाड़ उनके जीवन में भर गया। वह समय ने वाला है जब हमारा सब कुछ छीन जाएगा। यदि प्रभु आपकी सारी सांसारिक न संपत्ति और सुख विलास ले ले, तो आपके पास क्या बचेगा? क्या आपने अपने वन का आधार उन वस्तुओं को बना रखा है जिनके द्वारा आपका विनाश निश्चित ? जब न्याय होगा तो सारी चमक-दमक भस्म हो जाएगी, हम वास्तव में क्या हैं, ह प्रकट हो जाएगा, केवल सच्चा आत्मिक सोना ही शेष रह जाएगा।

चार-विमर्श के लिये प्रश्न :

बाबुल किस बात का प्रतीक है? उसका कितना प्रभाव चारों ओर आप देखते हैं?

विश्वासी का सांसारिक भोग विलास के आक्रमण में फंस जाना कितना सरल है?

बाबुल के पीछे चलने वाले सोचते थे कि परमेश्वर उन्हें दंड देने में देर कर रहा है इसलिए उन्हें उसका कोई लेखा नहीं देना होगा। क्या आपने ऐसे लोगों को देखा है जो इसी प्रकार का जीवन व्यतीत करते हैं कि मानो उन्हें लेखा नहीं देना है।

परमेश्वर पर भरोसा रखने की अपेक्षा अपने धन और संपत्ति पर भरोसा करना कितना सरल है?

प्रार्थना के विषय :

- धन संपत्ति के प्रति अपने आकर्षण को दूर करने के लिए प्रार्थना करें, ताकि आपका संबंध प्रभु से न बिगड़े।
- प्रभु का धन्यवाद करें कि वह आपकी प्रत्येक आवश्यकता का ध्यान रखता है। क्षमा मांगें जब आपने उस पर नहीं, परन्तु अपने पर और अपने धन पर भरोसा किया।
- प्रभु का धन्यवाद करें कि सांसारिक वस्तुओं से वह स्वयं अधिक महान और मनोहर है।

अध्याय **26**

पशु और झूठे नबी का पतन

(पढ़ें प्रकाशितवाक्य-19)

बाबुल का पतन हो चुका था। चार शत्रुओं को हराना अभी बाकी रह गया था अर्थात् ु, झूठा नबी, अजगर और स्वयं मृत्यु। हमारे सामने इस समय स्वर्ग का दृश्य है। हन्ना ने एक बड़े जनसमूह को परमेश्वर की स्तुति करते देखा। वे इसलिए उसकी ुति कर रहे थे क्योंकि उसने बाबुल को परास्त कर दिया था। वे इसलिए स्तुति र रहे थे क्योंकि उसने धार्मिकता और सच्चाई के साथ उनका न्याय किया था। वे सलिए स्तुति कर रहे थे क्योंकि उसने अपने दासों के रक्त का बदला लिया था।

इस संसार के भोग विलास और ऐश्वर्य की प्रतीक वेश्या अर्थात् महान बाबुल नगरी परमेश्वर का प्रकोप प्रकट हुआ और उसका न्याय किया गया। उसके विनाश का आँ युगानुयुग उठता रहेगा जो मेमने की विजय की याद दिलाता रहेगा। वह अब कभी संसार को भरमाने और धोखा देने के लिए फिर जीवित न होगी। उसका विनाश दा के लिए हो गया। अनेकों लोग बाबुल की ऐश्वर्यता और सम्पन्नता के कारण उसमें ंसा रखते थे। वे उसकी चमक दमक और उसके मनोरंजन के जाल में फंस गए । उसकी पराजय का धुआँ सदा उठता रहेगा जो उसकी हार का स्मरण कराता रहेगा।

जब यूहन्ना जनसमूह को परमेश्वर की स्तुति करते हुए देख रहा था तो उसने चौबीसों चीनों और चारों प्राणियों को भी भीड़ के साथ सम्मिलित होकर दण्डवत् करते देखा। हासन से आती हुई उसे एक आवाज़ सुनाई दी जो परमेश्वर के दासों को चाहे वे टे हों या बड़े, कह रही थी कि वे आकर उस परमेश्वर की स्तुति प्रशंसा करें जो कमात्र सच्चा परमेश्वर है। जब परमेश्वर की स्तुति प्रशंसा करने का प्रश्न आता है वहाँ छोटे बड़े का कोई अन्तर नहीं होता। हमारी सामाजिक हैसियत का कोई मूल्य हीं। उसकी उपस्थिति में सब बराबर होते हैं। स्वर्गीय सिंहासन के सामने छोटे बड़े ब एक साथ दण्डवत् कर रहे थे।

जैसी उस स्वर्ग की आवाज़ ने आज्ञा दी थी, सिंहासन के सामने एक विशाल जनसमूह परमेश्वर की स्तुति करने लगा। उनकी आवाज़ें बादल के घोर गर्जन और समुद्र की लहरों के समान ऊंची सुनाई दे रही थीं। वे कह रहे थे, ''हल्लिलूय्याह, क्योंकि प्रभु हमारा सर्वशक्तिमान परमेश्वर राज्य करता है।'' वे विवाह का गीत गा रहे थे जो आ पहुंचा था। इस विवाह का दूल्हा ख्रीस्त था और दुल्हिन, जिसने अपने आपको इस अवसर के लिए सुशोभित कर लिया था, कलीसिया थी। उसे चमकदार, स्वच्छ और महीन मलमल पहिनने को दिया गया था जो उसकी धार्मिकता के प्रतीक थे (पद 8)। तब स्वर्गदूत ने यूहन्ना से कहा लिख ले, ''धन्य हैं वे जो मेमने के विवाह के भोज में आमंत्रित हैं'' (पद 9)।

ख्रीस्त का उसकी कलीसिया से एक हो जाने के अद्भुत विचार को सुनकर यूहन्ना इतना प्रभावित हुआ कि उसी स्वर्गदूत के पांवों पर गिरकर उसे दण्डवत् करने लगा, जो यह समाचार उसके पास लाया था। पर स्वर्गदूत ने उसे सावधान किया कि वह उसे दण्डवत् न करे क्योंकि वह स्वयं भी उसी के समान साधारण सा एक दास है। केवल परमेश्वर ही आराधना के योग्य है। फिर उसने यूहन्ना से कहा, ''परमेश्वर की उपासना कर, क्योंकि यीशु की गवाही भविष्यवाणी की आत्मा है।'' हमें स्वर्गदूत की इस बात पर कुछ क्षण रुक कर ध्यान लगाने की आवश्यकता है जो उसने यूहन्ना से कहे थे।

प्रभु यीशु और उसकी गवाही दोनों इस भविष्यवाणी की पुस्तक के केन्द्रीय विषय हैं। यूहन्ना ने भविष्यवाणी के जितने वचन उस दिन प्राप्त किये वे सब वचन ख्रीस्त की ओर, और उसकी विजय की ओर संकेत करते थे। जो स्वर्गदूत यूहन्ना के पास संदेश लाया था वह केवल एक सेवक ही था जिसने उसे बताया था कि यीशु क्या कार्य करेगा। यूहन्ना को उस सन्देश की घोषणा करने के कारण स्वर्गदूत को दण्डवत् नहीं करना चाहिए था, बल्कि केवल यीशु को ही उसे दण्डवत् करना चाहिए था जो कार्यों को पूरा करने जा रहा था।

जब यूहन्ना को पता लगा कि उसे केवल यीशु को ही दण्डवत् करना चाहिए था और केवल यीशु को ही सर्वोच्च स्थान देना चाहिए था, तभी उसने आकाश को खुला हुआ देखा। उसी समय एक श्वेत घोड़ा उसे दिखाई दिया जिस पर एक सवार भी बैठा था। उस सवार का नाम ''विश्वासयोग्य और सत्य'' था। वह संसार का न्याय करने और युद्ध करने के लिए आया था। उसकी आँखें आग की ज्वाला के समान थीं। उसने सिर पर बहुत से राजमुकुट पहन रखे थे, बहुत संभव है कि वे उसकी

ाजयों के प्रतीक हों। उसका नाम भी उस पर लिखा हुआ था जिसे केवल वही जानता ा। फिर हमें बताया गया है कि उसका नाम ''परमेश्वर का वचन'' है (पद 13)।

उसका नाम उसके अतिरिक्त और कोई क्यों नहीं जान सकता? क्या यह संभव ै कि नियमानुसार केवल वही इस योग्य था जो इस नाम को धारण कर सके? बाइबल ं किसी व्यक्ति का नाम उसके चरित्र का परिचायक माना जाता है। क्या कोई है ो यीशु के अलावा इस नाम को धारण कर सकता था–''परमेश्वर का वचन।'' अन्य ौन है जो परमेश्वर के वचन का अच्छी तरह से प्रतिनिधित्व कर सकता है? कोई हीं! यूहन्ना इस पदवी से भली भाँति परिचित था। यूहन्ना ने ख्रीस्त के जीवन ारित्र को लिखते समय अपने सुसमाचार में इसी विशेष नाम का प्रयोग किया था (देखें ूहन्ना 1:1)।

सवार लहू में डुबोया हुआ वस्त्र पहिने हुए था। प्रभु यीशु मसीह का लहू बहाया या था। उसे विजय पाने में अपनी जान भी देनी पड़ी थी। उसी लहू ने मानव जाति ो शत्रु के हाथ से छुड़ाया था।

श्वेत घोड़े के सवार के पीछे-पीछे विशाल सेना चलती थी। प्रत्येक सिपाही ने स्वच्छ ौर महीन मलमल पहिन रखा था। एक आम सिपाही की वर्दी ऐसी कभी नहीं होती। में यह जानने की आवश्यकता है कि ये वस्त्र पवित्र लोगों की धार्मिकता के प्रतीक । (पद-8)। ये पवित्र लोग पशु और झूठे नबी से युद्ध करने आए थे। जो युद्ध पशु ौर झूठे नबी से उनका होने वाला था, उसे उन लोगों द्वारा जीता जाना था जिनका ख्रीस्त से सही संबंध हो। यह युद्ध श्रेष्ठ हथियारों और श्रेष्ठ शारीरिक बल का युद्ध हीं था। इस युद्ध के लिए तलवारों, भालों और भौतिक हथियारों की आवश्यकता हीं थी। इस युद्ध में हिस्सा लेने वालों को धार्मिकता के वस्त्रों की आवश्यकता थी। वेत घोड़े के सवार के पीछे जो विशाल सेना चल रही थी उसके लिए ख्रीस्त की ार्मिकता के वस्त्र एक उपयुक्त वर्दी थी। केवल वे ही लोग जिन्होंने ख्रीस्त की धार्मिकता े वस्त्र पहन रखे हों, इस युद्ध में लड़ने का साहस कर सकते थे।

श्वेत घोड़े के सवार का वर्णन पद 15 में भी जारी रहता है। हम पढ़ते हैं, उसके ुख से एक चोखी तलवार निकलती थी ताकि वह जाति जाति का संहार कर सके। ामतौर पर तलवार परमेश्वर के वचन का प्रतीक मानी जाती है। वचन के द्वारा परमेश्वर सृष्टि की रचना की। इसी वचन के द्वारा वह पशु के राज्य और उसके झूठे नबी ा अन्त करेगा।

फिर हम पढ़ते हैं, यीशु संसार पर लौह-दंड से शासन करेगा। उसके शासन करने

के विषय में कोई सन्देह नहीं है। वह जगत का न्याय करेगा। वह परमेश्वर के भयानक प्रकोप की मदिरा का रसकुण्ड रौंदेगा। यहाँ ऐसे व्यक्ति की आकृति सामने आती है जो दाखरस निकालने के लिए अंगूरों को रसकुण्ड में डालकर उन्हें रौंदता है। अंगू ख्रीस्त के शत्रुओं को दिखाते हैं। और रस उनके लहू का प्रतीक है।

श्वेत घोड़े के सवार के वस्त्र और जांघ पर उसका नाम "राजाओं का राजा औ प्रभुओं का प्रभु" लिखा है। वही संसार का सर्वोच्च शासक है। उसी के आगे हर घुटन टिकेगा।

इस युद्ध की तैयारी में यूहन्ना ने एक स्वर्गदूत को सूर्य में खड़ा देखा। उस स्वर्गदू ने आकाश के मध्य उड़ने वाले सब पक्षियों से ऊंचे शब्द से चिल्लाकर उन्हें बड़े भोज के लिए एकत्रित किया। क्योंकि उन्हें राजाओं, सेनापतियों और शक्तिशाली पुरुष का मांस खाना था। उन्हें दासों, छोटों व बड़ों आदि सबके लहू को पीना व उनक मांस खाना था।

फिर पशु, झूठा नबी और पृथ्वी के राजा मेमने और उसकी सेना के विरुद्ध युद्ध करने के लिए एकत्रित हुए। वह पशु और उसके साथ वह झूठा नबी पकड़े गए औ दोनों गंधक से धधकती आग की झील में जीवित डाल दिए गए। बाकी सब उस घुड़सवार की तलवार से जो उसके मुंह से निकलती थी, मारे गए। और सब पक्षी उनका मांस खाकर तृप्त हुए। मेमना उस पशु, झूठे नबी और पृथ्वी के राजाओं प विजयी हुआ।

अब दूसरे और तीसरे बड़े शत्रुओं को पराजित किया जाना शेष रह गया था। इन्होंने पृथ्वी पर अपनी सामर्थ और अधिकार का बहुत प्रयोग किया था। इन पशुओं द्वारा पृथ्वी की सब जातियों को बड़ा धोखा दिया जाता रहा। इनके द्वारा प्रभु के नाम की स्पष्ट निन्दा की जाती रही। अनेकों पवित्र लोगों की मृत्यु के ये जिम्मेदार रहे। इनके विरुद्ध युद्ध में प्रभु विजयी रहेगा। मेमना शत्रुओं पर विजयी होगा।

विचार-विमर्श के लिये प्रश्न :

- कौन से पांच शत्रु हराए जाने हैं?
- यूहन्ना सन्देश की श्रेष्ठता के कारण सन्देशवाहक को ही दण्डवत् करने की परीक्ष में गिर गया। क्या कभी आपने स्वयं को इस स्थिति में पाया है जब सन्देशवाहक को आपने महत्व दिया और जिसका वह प्रतिनिधि है उसको आप भूल गए? यह

कितना सरल होता है कि परमेश्वर की अपेक्षा किसी मनुष्य का अनुसरण किया जाए?

इस पाठ में श्वेत घोड़े का सवार कौन है? हम उसके बारे में क्या सीखते हैं?

श्वेत घोड़े के सवार की सेना के सिपाहियों ने श्वेत शुद्ध मलमल के वस्त्र पहने थे। मलमल किस बात का प्रतीक है, क्यों यह सिपाहियों के लिए उपयुक्त वर्दी थी?

ध्यान दीजिए कि इस पाठ के मुख्य ध्यान का केन्द्र न तो पशु है और न ही झूठा नबी है जो परास्त हो गए थे परंतु प्रभु यीशु मसीह है, जिसने उन्हें हराया था। इससे हमें क्या प्रेरणा मिलती है कि हमें शैतान, संसार और पाप से आज किस प्रकार युद्ध करना चाहिए?

ार्थना के विषय :

प्रभु का धन्यवाद कीजिए कि वह हमारे सब शत्रुओं को हरा सकता है।

श्वेत घोड़े के विषय में कुछ समय तक ध्यान लगाएँ। प्रभु का धन्यवाद करें कि वह स्वयं उस श्वेत घोड़े का सवार है और वह हमें पूरी विजय देने के लिए आया।

प्रभु से प्रार्थना करें कि आपको भी मलमल की धार्मिकता के वस्त्र पहनाए जा सकें। प्रभु से कहें कि वह आपको बताए कि आपके जीवन के किन क्षेत्रों में धार्मिकता के वस्त्रों की आवश्यकता है।

प्रभु से सहायता मांगें कि दुष्टता से लड़ते समय आपका ध्यान उसी की ओर रहे।

अध्याय **27**

अजगर और मृत्यु की हार

(पढ़ें प्रकाशितवाक्य 20)

बाबुल और दो पशु हरा दिए गए। यूहन्ना ने स्वर्ग से एक स्वर्गदूत को उतरते देखा। ...के हाथ में अथाह कुंड की कुंजी और एक बड़ी सी जंजीर थी। यह स्वर्गदूत कौन ... इसकी जानकारी हमें नहीं दी गई है। उसने अजगर को, जो शैतान है, पकड़ लिया, ...र उसे अथाह कुंड में डाल दिया। शैतान हजार वर्ष के लिए जंजीर द्वारा बांध दिया ...गा।

शैतान को बांधे जाने का क्या कारण था? इस पर ध्यान दें। पद 3 में बताया जाता ... कि जब तक हज़ार वर्ष पूरे न हो जाएं, वह जातियों को धोखा न दे। पशु और ...ठे नबी ने पृथ्वी को बहुत धोखा दिया था। लोग उनकी शक्ति, चिन्ह और चमत्कारों ... धोखा खाते रहे। पर अन्त में दोनों परास्त हुए। शैतान स्वयं भी बांध दिया गया ताकि ...गों को धोखा न दे सके। फिर एक प्रश्न हमारे सामने आता है कि क्या अब पृथ्वी ... निवासी मन फिराकर परमेश्वर की ओर लौट आएंगे? परमेश्वर पर विश्वास न करने ... दोष पशु और अजगर पर लगा देना बड़ा सरल है। अब हम इस बात पर विचार ...रेंगे कि क्या पशु और अजगर के मिट जाने से मनुष्य का हृदय बदल सकता है?

एक हजार वर्ष के समय के दौरान क्या घटनाएं घटीं? पद 4 हमें बताता है कि ... लोगों की आत्माएं जी उठीं, जिनके सिर यीशु की गवाही देने और परमेश्वर के ...वन के कारण काटे गए थे, और जिन्होंने न पशु की, न उसकी मूर्ति की पूजा की ..., न अपने माथे और हाथ पर उसकी छाप लगवाई थी; वे जीवित होकर मसीह ... साथ हजार वर्ष तक राज्य करते रहे। इन सारे विश्वासी लोगों ने बड़ा क्लेश उठाया ... पर तौभी अपने प्रभु के प्रति विश्वासयोग्य रहे थे। वे पशु के आगे झुके नहीं, और ... उसकी छाप लगवाई। वे जीवित हुए ताकि ख्रीस्त के साथ हजार वर्ष के दौरान ...ज्य करें और पृथ्वी का न्याय करें।

पद 5 हमें बताता है कि सभी विश्वासी इस समय जीवित नहीं हो गए थे। वे मृत
जो बाकी रह गए थे हज़ार वर्ष पूर्ण होने तक जीवित न हुए। ये बाकी मृतक कौ
थे? पद 4 के अनुसार जो मृतक जीवित हुए थे उनके सिर काटे गए थे क्योंकि उन्हो
पशु की पूजा नहीं की थी और न ही उसकी छाप लगवाई थी। इसका अर्थ है बाक
मृतक वे थे जो अविश्वासी थे, और संभवत: पशु के काल में जीवित नहीं थे।

जो लोग इस समय जीवित हुए, वे पद 5 के अनुसार प्रथम पुनरुत्थान के भागीद
थे। यदि वह प्रथम पुनरुत्थान है तो अनुमान यह लगाया जाता है कि दूसरा पुनरुत्थ
भी होगा। इसके बारे में हम पद 11-15 में पढ़ते हैं।

पद 6 में हमें बताया जाता है कि जो इस प्रथम पुनरुत्थान के भागीदार हैं उन्हें दूस
मृत्यु नहीं सहनी पड़ेगी। यह पहली और दूसरी मृत्यु क्या है? पहली मृत्यु शारीरि
मृत्यु है। हम में से प्रत्येक को यह मृत्यु सहना अनिवार्य है। लेकिन दूसरी मृत्यु शारीरि
नहीं परन्तु आत्मिक मृत्यु है। इसका वर्णन हम प्रकाशितवाक्य 20:14 में पाते हैं। प
14 हमें बताता है कि आग की झील दूसरी मृत्यु है। आग की झील युगानुयुग के द
का स्थान है। इसे नरक दंड भी कहा जाता है। यह अनन्तकाल तक के लिए परमेश्व
से संबंध-विच्छेद की स्थिति है जबकि पुन: परमेश्वर की निकटता में आने की को
आशा नहीं। जो प्रथम पुनरुत्थान के भागीदार थे वे विश्वासी थे। वे नरक और दूस
मृत्यु की ज्वाला से सुरक्षित हैं।

ख्रीस्त के शासन का स्वरूप बताने में कि यह कैसा होगा, बाइबल कुछ नहीं बता
अथवा खामोश है। संक्षेप में कहा जा सकता है कि इस राज्य में कलीसिया को स्वतन्त्र
होगी कि वह शान्ति और सुरक्षा में रह सके, उसकी गवाही देती रहे, बाबुल के प्रती
भोग विलास वहां नहीं होंगे, शैतान और उसके दो पशु पृथ्वी के निवासियों को हा
नहीं पहुंचाएंगे, वे शान्त कर दिए जाएंगे।

आगे पद 7 हमें बताता है कि हज़ार वर्ष पूर्ण होने के बाद शैतान कैद से छो
दिया जाएगा। वह पृथ्वी के चारों कोनों से अविश्वासियों को इकट्ठा करके पवि
लोगों से अंतिम युद्ध करने के लिए निकलेगा।

यह ध्यान देने की बात है कि ख्रीस्त के हज़ार वर्षों के राज्य के दौरान पृथ्वी
अनेकों अविश्वासी भी होंगे। इस एक हजार वर्ष के समाप्त होने के बाद शैतान फि
जातियों को धोखा देने निकलेगा। ख्रीस्त के एक हज़ार वर्ष के राज्य के होते हुए
शैतान को ऐसे लोग पाने में सफलता मिल जाएगी जो ख्रीस्त से व उसके कार्यों
घृणा करेंगे। पद 8 से हमें ज्ञात होता है कि वह गोग और मागोग को भरमा कर उनक

स्त और उसकी कलीसिया के विरुद्ध युद्ध करने के लिए एकत्रित करेगा। ध्यान जाए, जिन अविश्वासियों को शैतान एकत्रित करने में सफल होगा उनकी गिनती द्र की बालू के सदृश होगी।

इस समय के इतिहास की सबसे विचित्र बात यह है कि हालांकि इस समय पृथ्वी पशु, झूठा नबी और शैतान नहीं थे तौभी मानवीय स्वभाव में कोई अन्तर और परिवर्तन आया। शैतान एक हजार वर्ष तक कैद में रहने के उपरान्त भी ख्रीस्त से घृणा ने वालों की भारी संख्या पा सका जिनकी गिनती समुद्र की बालू के सदृश थी। लोग अपने हृदय की कठोरता के लिए शैतान को दोषी नहीं ठहरा सकते हैं। न वे पशु या झूठे नबी को दोषी ठहरा सकते हैं। बाबुल को भी वे दोषी नहीं ठहरा ते हैं जो सांसारिक भोग विलास का प्रतीक थी, वह भी परास्त हो चुकी थी। वे तो ऐसे संसार में रह रहे थे जहाँ ख्रीस्त अपने उन पवित्र लोगों के साथ राज्य रहा था जो जी उठे थे, इतना होने पर भी उन्होंने ख्रीस्त का और उसके उद्धार तिरस्कार किया। अब वे केवल अपने पापपूर्ण हृदय को ही दोषी ठहरा सकते थे। काल हमें स्पष्ट बताता है कि हम ख्रीस्त का तिरस्कार करने का दोष किसी और नहीं लगा सकते हैं। एक पापपूर्ण हृदय हमें ख्रीस्त से दूर रखने के लिए फ़ी है।

गोग और मागोग कौन हैं? यहेजकेल अध्याय 38 और 39 से हमें पता चलता है मागोग नामक देश के राजकुमार का नाम गोग था। यहेजकेल 38:4 में, गोग कुछ की संगठित सेना के साथ परमेश्वर की सन्तानों पर आक्रमण करता है। यही चित्र पाठ में भी पाया जाता है जिसका हम अध्ययन कर रहे हैं। गोग परमेश्वर के लोगों विरोध करने वालों का प्रतीक जान पड़ता है। इस विशाल सेना ने परमेश्वर के को घेर लिया जहाँ परमेश्वर के साथ उसके लोग राज्य करते थे। यह सेना परमेश्वर लोगों को जीतने और उन्हें नष्ट करने के उद्देश्य से आई थी। यह युद्ध थोड़े ही य रहा। परमेश्वर ने स्वर्ग से उन पर आग और गन्धक बरसाई और उन्हें नष्ट कर । जिसका वर्णन हमें यहेजकेल 38:22 में मिलता है।

शैतान को आग और गन्धक की झील में डाल दिया गया। उसने पशु और झूठे से सन्धि की थी। ये तीनों उस आग की झील में रात दिन पीड़ा में तड़पते रहेंगे। उनकी पीड़ाओं से कभी छुटकारा नहीं मिलेगा। उनका यह दण्ड युगानुयुग रहेगा। प्रकार परमेश्वर के चारों शत्रुओं का अन्त हो जाता है अर्थात् बाबुल, पशु, झूठा और अजगर यानि शैतान।

इन घटनाओं के बाद यूहन्ना ने एक बड़ा श्वेत सिंहासन देखा। उसके ऊपर जो बै
था, उसकी उपस्थिति से आकाश और पृथ्वी भाग गए, जिनकी उसने रचना की थ
जो सिंहासन पर बैठा था, वह परमेश्वर के अलावा और कोई नहीं हो सकता है। ज
यूहन्ना देख ही रहा था तो सब मृतक लोग सिंहासन के सामने उपस्थित हुए। सम
और कब्रों ने उन मृतकों को जो उनमें थे दे दिया। वे सब परमेश्वर के न्याय आस
के सम्मुख खड़े हुए। स्वर्ग की पुस्तकें खोली गईं। जिस किसी का नाम जीवन व
पुस्तक में लिखा हुआ न मिला वह शैतान, पशु और झूठे नबी के साथ आग की झी
में डाल दिया गया।

प्रत्येक का न्याय उसके कामों के अनुसार किया गया। जब प्रत्येक का न्याय
चुका तो मृत्यु और अधोलोक आग की झील में डाले गए। अब सर्वोच्च परमेश्वर व
प्रभुसत्ता को चुनौती देने वाला कोई शेष न रहा। उसने शत्रुओं पर अपनी विजय सि
कर दिखाई।

विचार-विमर्श के लिये प्रश्न :

- प्रथम पुनरुत्थान से आप क्या समझते हैं? प्रथम पुनरुत्थान के भागीदार कौन हों
- पहली और दूसरी मृत्यु से आप क्या समझते हैं?
- शैतान एक हजार वर्ष के लिए बांधा जाएगा? क्या इससे उनके हृदय बदल जाए जो पृथ्वी पर होंगे? इससे हमें पाप और विद्रोह करने के मूल कारण के विष क्या शिक्षा मिलती है?
- न्याय का बड़ा श्वेत सिंहासन क्या है? क्या आपको निश्चय है कि आप परमेश के सामने निर्दोष ठहर पाएंगे? आपको यह निश्चय कैसे मिला?

प्रार्थना के विषय :

- प्रभु का धन्यवाद करें कि वह अपने सब शत्रुओं पर विजयी होगा।
- प्रभु का धन्यवाद करें कि उसने आपके हृदय को अपने लिए कोमल बनाया
- यदि आप प्रभु को आज जानते हैं और उसने आपको निश्चय दिया है कि अ न्याय के बड़े श्वेत सिंहासन के सामने निर्दोष खड़े रह सकते हैं, और आप जा हैं कि आपके पाप क्षमा हो गए हैं, तो प्रभु का धन्यवाद कीजिए।

अध्याय **28**

स्वर्गीय नगर

(पढ़ें प्रकाशितवाक्य 21)

जब मृतकों का न्याय हो चुका तो यूहन्ना ने नया आकाश और नई पृथ्वी को देखा। ला आकाश और पहली पृथ्वी मिट गए थे। अपने दर्शन में यूहन्ना ने पवित्र नगरी स्वर्ग से उतरते देखा। इस नगरी का नाम नया यरूशलेम अर्थात् पवित्र नगरी था। नगरी ऐसी सजाई गई थी जैसे दुल्हिन अपने पति के लिए सिंगार किए हो।

यह नई नगरी नई पृथ्वी पर और नए आकाश के नीचे स्थित थी। इस नई नगरी परमेश्वर का ही आदर किया जाता है। पाप को वहां कोई नहीं जानता। नए यरूशलेम आंसू नहीं होंगे। आंसू बहाने का कोई कारण नहीं होगा। मृत्यु, शोक, पीड़ा और मारियाँ सब वहाँ से दूर कर दी जाएंगी। इन सब बातों का संबंध तो वर्तमान युग है। नई नगरी में इन बातों का कोई स्थान नहीं।

यूहन्ना ने लोगों को निमंत्रण देती हुई एक आवाज़ सुनीं कि ''जो प्यासा हो मुफ़्त कर पिए।'' ध्यान दीजिए, हालांकि यह निमंत्रण सबको दिया गया था लेकिन फिर यह केवल उन्हीं के लिए था जो जय प्राप्त करें, वही इन बातों का वारिस होगा द 7)। डरपोक परमेश्वर के राज्य के वारिस न होंगे। डरपोक कौन हैं? इब्रानियों लेखक 10:38-39 में इस प्रकार कहता है :

''मेरा धर्मी जन विश्वास से जीवित रहेगा, परन्तु यदि वह पीछे हटे तो मेरे मन प्रसन्नता नहीं होगी। हम उन लोगों में से नहीं जो नाश होने के लिए पीछे हटते पर उनमें से हैं, जो प्राणों की रक्षा के लिए विश्वास रखते हैं।''

प्रभु यीशु में हमारे विश्वास और भरोसे की परख जीवन-भर होती रहेगी। प्रभु यीशु प्रति हमारी भक्ति और विश्वासयोग्यता का प्रमाण केवल तभी मिल सकता है जब अन्त तक धीरज धरते हुए विश्वास में स्थिर रहते हैं। लोगों को उनके उद्धार का झा आश्वासन देना बड़ा आसान होता है। हम सचमुच उद्धार पा चुके हैं या नहीं इसका

प्रमाण तभी मिलता है जब हमारे विश्वास की परख होती है। इस पाठ में निमं तो सबके लिए है, पर जो धीरज से सहता है, विश्वास में स्थिर रहता है, केवल व उद्धार पाता है।

मैं एक बात और स्पष्ट करना चाहता हूं कि हमारे भले कामों और सहनशील धारण करने के आधार पर हमारा उद्धार नहीं होता है। उद्धार प्रभु यीशु द्वारा मुफ्त प्र होता है, हमारे भले कार्यों से उद्धार का कोई संबंध नहीं है। विषय की सच्चाई यह है कि जिनका सचमुच उद्धार हो जाता है, उनके हृदय और आत्मा में परिव आ जाता है, यही परिवर्तन उन्हें प्रभु की सेवा करने और उसकी भक्ति करने के लि प्रेरित करता है, फिर वे अपने जीवन के हर कार्यों से प्रभु को महिमा देते हैं। जो ल वास्तव में उसके आज्ञाकारी होते हैं वे स्वेच्छा से जीवन की परीक्षाओं और दुखों सहन करते हैं क्योंकि वे प्रभु से प्रेम करते हैं। उनकी विश्वासयोग्यता की परख उन सहनशीलता और धीरज में होती है।

पापी लोग पवित्र नगरी में प्रवेश न कर पाएंगे। डरपोकों, अविश्वासियों, घृणि हत्यारों, व्यभिचारियों, जादूगरों, झूठ बोलने वालों के लिए पवित्र नगरी में प्रवेश क वर्जित होगा। उनका स्थान आग की झील होगा। वे युगानुयुग तक परमेश्वर और उस लोगों से पृथक रहेंगे।

इसके बाद यूहन्ना दर्शन में उठा लिया गया और पवित्र नगरी देखने का उसे अव मिला। जो कुछ उसने देखा वह यहाँ उसे बताता है। वह कहता है कि परमेश्वर महिमा उसमें थी। इस महिमा की तुलना वह यशब और स्फटिक के समान उज्ज्व बताता है। पवित्र नगरी के चारों ओर विशाल शहरपनाह थी जिसके बारह फाटक हर फाटक पर स्वर्गदूतों का पहरा था। उन फाटकों पर इस्राएल के बारह गोत्रों के न लिखे थे। यहेजकेल नबी भी ऐसे ही एक नगर का वर्णन अपनी पुस्तक में करता जिसके बारह फाटक थे और प्रत्येक पर इस्राएल के बारह गोत्रों के नाम लिखे थे (यहेजकेल 48:30-34)। नगरी की शहरपनाह की बारह आधारशिलाएँ थीं पर मेमने के बारह प्रेरितों के नाम लिखे थे।

यहेजकेल के दिनों के स्वर्गदूत के समान, जो स्वर्गदूत यूहन्ना को पवित्र नगरी दि रहा था, उसके हाथ में सोने का एक मापदण्ड था (देखें यहेजकेल 40:3)। उस न को नापा गया। वह नगर वर्गाकार था। नगर की लम्बाई 2,200 किलोमीटर या 1,4 मील निकली और दीवारों की मोटाई 200 फुट या 65 मीटर नापी गई। (कुछ टीका इसे मोटाई के बदले ऊंचाई समझते हैं)। यह शहरपनाह यशब की बनी थी।

यह नगर स्वच्छ कांच के सदृश शुद्ध सोने का था। उस नगर की नींव के सब त्थर सब प्रकार के बहुमूल्य पत्थरों से सुसज्जित थे। नगर का प्रत्येक फाटक एक-एक ाती का था। नगर की सड़क पारदर्शक कांच के समान चोखे सोने की बनी थी।

यूहन्ना ने नगर में कोई मन्दिर न देखा (पद 22), क्योंकि स्वयं परमेश्वर वहां रहा रता था। प्रत्येक दिन परमेश्वर की आराधना स्तुति का दिन था। हर दिन परमेश्वर ; लोग परमेश्वर के साथ-साथ चलते थे। परमेश्वर की महिमा ने नगर को आलोकित कया था इसलिए नगर को सूर्य और चांद के प्रकाश की आवश्यकता नहीं थी। मेमना सका दीपक था। सब जातियाँ उसके प्रकाश में चलीं (पद 24)। नगर के फाटक भी बन्द न होंगे क्योंकि वहां शत्रुओं के आक्रमण का भय नहीं (पद 25)। कोई णित या अपवित्र वस्तु उसमें प्रवेश न कर सकेगी। (पद 27)। उसमें केवल वही वेश करेंगे जिनके नाम मेमने की जीवन की पुस्तक में लिखे हैं (पद-27)।

क्या आपका नाम उस जीवन की पुस्तक में लिखा हुआ है? क्या आपने वह निमंत्रण ुना जो जीवन जल मुफ्त में पीने के बारे में था? क्या प्रभु आपके लिए उस नगर घर तैयार कर रहा है? क्या मोतियों के फाटक आपके लिए खुल जाएंगे? प्रभु आपको श्चय दे कि आपका नाम उस जीवन की पुस्तक में लिखा है। प्रभु प्रत्येक पाठक ो निश्चय प्रदान करे कि आप प्रभु की सन्तान हैं और नए यरूशलेम के नागरिक हैं।

वेचार-विमर्श के लिये प्रश्न :

1 वर्तमान समय के आकाश और पृथ्वी का क्या होने जा रहा है?

1 पवित्र नगरी का वर्णन कीजिए? आप इस नगर में क्या देखने की इच्छा रखते हैं?

1 कौन नए यरूशलेम में प्रवेश कर सकता है? आपको कैसे पता लग सकता है कि इस नगर में आपका भी घर है?

1 सहनशीलता किस प्रकार से हमारे विश्वास के खरेपन की जांच है? क्या आप सहनशील रहे हैं?

प्रार्थना के विषय :

- नए नगर की आशा के लिए प्रभु का धन्यवाद कीजिए।
- प्रभु से सहायता मांगें कि आप जिन सतावों और परीक्षाओं का सामना करते हैं उनमें धैर्य व सहनशीलता से विश्वास में स्थिर रह सकें। धन्यवाद दीजिए कि जो आशा आपके पास है उसकी तुलना में आपके कष्ट और संकट कुछ भी नहीं हैं।
- प्रभु का धन्यवाद दीजिए कि आप उसके उस कार्य के द्वारा जो उसने क्रूस पर किया, इस योग्य बन सके कि पवित्र नगर में प्रवेश कर सकें।

अध्याय 29

दर्शनों की समाप्ति

(पढ़ें प्रकाशितवाक्य-22)

जैसे ही यूहन्ना स्वर्गीय नगर की अपनी यात्रा समाप्त करता है स्वर्गदूत ने उसे एक बढ़ती हुई नदी दिखाई जो परमेश्वर के सिंहासन से निकली थी। वह जीवन देने वाली नदी थी। कुछ टीकाकार उद्धार का प्रतीक यहां देखते हैं। यहेजकेल ने भी ऐसा ही दर्शन देखा था (यहे. 47:1)।

यह नदी पवित्र नगर के मुख्य मार्ग के बीच बह रही थी। नदी के दोनों किनारों पर जीवन का वृक्ष था। हम पहली बार इन वृक्षों का वर्णन उत्पत्ति की पुस्तक में पाते हैं। परमेश्वर ने अदन की वाटिका में जीवन के वृक्ष लगाए थे। उत्पत्ति 3:22 से हमें ज्ञात होता है कि यह वृक्ष अनन्त जीवन देने वाला वृक्ष था।

''तब यहोवा परमेश्वर ने कहा, 'देखो, यह मनुष्य भले और बुरे का ज्ञान पाकर हम में से एक के समान हो गया है। अब ऐसा न हो कि वह अपना हाथ बढ़ाकर जीवन के वृक्ष का फल भी तोड़कर खा ले और सदा जीवित रहे'।''

उत्पत्ति की पुस्तक में हमें बताया जाता है कि मनुष्य को मना किया गया था कि इस वृक्ष का फल न खाए, लेकिन स्वर्गीय नगर में जो निवासी हैं उनको पूरी आज़ादी है वे फल खा सकते हैं।

पद-2 हमें बताता है कि यह वृक्ष प्रति माह फलता था। इसकी पत्तियाँ जाति जाति की चंगाई के लिए थीं। अब सवाल पूछा जा सकता है कि जब स्वर्ग में बीमारियाँ ही नहीं थीं तो इन पत्तियों की क्या आवश्यकता थी?

क्या यह नहीं हो सकता कि ये पत्तियाँ उनकी चंगाई का स्रोत हों? हर जाति का मनुष्य इन पत्तियों द्वारा चंगा हुआ था। अब कोई बीमारी उन्हें हानि नहीं पहुंचा सकेगी।

उस पवित्र देश में हम पाप के श्राप के अधीन न रहेंगे। पाप, बीमारियां, दुख और शैतान सब को हरा दिया गया है। उस नगर में अब ऐसी कोई बात नहीं जो हमें परमेश्वर की संगति से अलग कर सके। मेमना अर्थात् प्रभु यीशु उस नगर में उपस्थित रहेगा। हम हमेशा तक उसकी सेवा करेंगे और उसका आनन्द उठाएंगे।

उस पवित्र नगर में कभी रात न होगी। हम परमेश्वर की उपस्थिति के महिमायुक्त प्रकाश में रहेंगे। उसका तेज संपूर्ण नगर को प्रकाश से आलोकित रखेगा। वहाँ हम यीशु के साथ सर्वदा राज्य करेंगे। ये सारी आशीषें केवल उन्हीं के लिए हैं जो इस पुस्तक के नबूवत के वचन को मानता है।

प्रेरित यूहन्ना ने जो कुछ उस दिन देखा उससे वह आनन्द से परिपूर्ण हो गया। वह उसी सन्देशवाहक के पांवों पर उसकी उपासना के लिए गिर गया जिसने ये बातें उसे दिखाई थीं। पर उस स्वर्गदूत ने उसे सावधान करते हुए कहा कि वह केवल परमेश्वर ही की उपासना करे। हमें बड़ा आश्चर्य होता है कि यूहन्ना जैसा महान प्रेरित कैसे परमेश्वर को छोड़ किसी और के आगे झुक गया। ऐसी परीक्षाएं आज हमारे सामने भी आती हैं जब हम उनमें गिर जाते हैं। विचार कीजिए, हम कितनी बार ऐसी परीक्षाओं में गिरे जब हमने सन्देश से अधिक सन्देशवाहक को महत्व दिया। क्या कभी आप ऐसी परीक्षा में पड़े जब आपने बरदान प्राप्त किसी प्रचारक के आगे घुटने टेक दिए?

क्या कभी आप ने परमेश्वर के ऐसे दास या दासी से भेंट की जिसने आप में आदर और सम्मान की भावना को जागृत किया? यह कितना आसान है कि हम यह भूल जाएं कि वे भी तो हमारी तरह साधारण स्त्री पुरुष हैं।

फिर स्वर्गदूत ने यूहन्ना से कहा कि वह इस पुस्तक की नबूवत की बातों को मुहर न लगाए क्योंकि समय निकट है। इस पुस्तक के वचन उनके लिए सहायक होंगे जबकि वे पुस्तक में लिखित परीक्षाओं में से होकर गुज़रेंगे। अब समय कम रह गया है। पुस्तक की नबूवतों के अनुसार हर एक के लिए अपना अपना निर्णय लेने और आत्म-निरीक्षण करने का समय आ पहुंचा है। कुछ लोग नबूवत के वचनों की अनदेखी करते रहेंगे और अपनी बुराईयों ही में लगे रहेंगे। परमेश्वर उन्हें स्वतन्त्र छोड़ देगा, उन्हें रोकेगा नहीं। अन्य कुछ लोग वचनों को गम्भीरतापूर्वक ग्रहण करेंगे। परमेश्वर उनसे प्रसन्न होगा।

फिर यूहन्ना को याद दिलाया गया कि प्रभु यीशु शीघ्र आने वाला है (पद-12)। प्रत्येक मनुष्य को उसके कामों के अनुसार देने को प्रतिफल उसके पास है। जो अपने वस्त्रों को धो लेते हैं, वे धन्य होंगे। वस्त्र धो लेना, क्षमा दान पाने और धार्मिकता का जीवन व्यतीत करने का प्रतीक है। इन सब लोगों को जीवन के वृक्ष के

अधिकार दिया जाएगा। वे जीवन के वृक्ष का फल खा सकेंगे और सदा तक जीवित रहेंगे। अन्य लोग बाहर कर दिए जाएंगे और वे पवित्र नगर में कभी प्रवेश न कर पाएंगे।

पद 16 हमें स्मरण कराता है कि प्रकाशन का देने वाला एकमात्र सच्चा स्रोत स्वयं वही है। वह दाऊद का मूल वंश अर्थात् प्रतिज्ञात् मसीह है। वह भोर का तारा भी है अर्थात् नया दिन या नया जीवन देने की प्रतिज्ञा है। उसने अपने संदेशवाहक यूहन्ना को भेजा ताकि वह आने वाले दिनों के लिए हमें तैयार कर सके। इसलिए कि यह पवित्र वचन है, तो हमें कोई अधिकार नहीं कि इसमें कुछ बढ़ाएं या कुछ घटाएं।

यदि कोई इसमें कुछ बढ़ाएगा तो परमेश्वर इस पुस्तक में लिखी विपत्तियों को उस पर बढ़ाएगा। और यदि कोई इस नूबवत की पुस्तक के वचनों को घटाएगा तो परमेश्वर जीवन के वृक्ष और पवित्र नगरी से उसका भाग छीन लेगा। इन वचनों को हलके रूप में लेना गम्भीर अपराध है।

जब मैं इस पुस्तक की टीका लिख रहा था तो मैं इस बात को बड़ी अच्छी तरह जानता था कि नबूवत के वचनों में बातें बढ़ाना कैसा सरल होता है। हम नबूवत के इन वचनों में अपनी व्याख्या करने के द्वारा बहुत सी बातें बढ़ा सकते हैं और ऐसे अर्थ लगा सकते हैं जिनका संदर्भ से कोई तालमेल नहीं बैठता। अनेकों टीकाकारों व लेखकों ने इस पुस्तक की व्याख्या करते समय प्रत्येक भविष्यवाणी की तारीख, देश, लोगों के नाम आदि भी अपनी पुस्तकों में दिये। उनके द्वारा दी गई वे बातें और तारीखें बाद में गलत सिद्ध हुई। अतः यह कितना आवश्यक है कि इस पुस्तक के नबूवत के वचनों में ऐसी बातें न बढ़ाएं जिन्हें हम प्रमाणित न कर सकें। इस टीका को लिखते समय यही मेरी कोशिश भी रही है। जिन कुछ पात्रों का इस नबूवत की पुस्तक में वर्णन पाया जाता है जिन्हें हम नहीं जानते कि वे हैं कौन और उनकी पहचान क्या है; तो भविष्य ही बताएगा।

पद 17 में ध्यान दें कि ख्रीस्त के निकट आने का निमंत्रण 'अभी भी दिया जा रहा है। यदि आप उसका निमंत्रण सुन रहे हैं तो उसके पास आने के लिए आपका स्वागत है। यदि आप प्यासे हैं, आप आकर जीवन का जल पी सकते हैं। प्रभु ने कहा कि वह शीघ्र आने वाला है। क्या आप उसके आगमन के लिए तैयार रहेंगे? यदि आप उसका निमंत्रण स्वीकार करेंगे, केवल तभी उसके आगमन की भी प्रतीक्षा कर सकेंगे।

विचार-विमर्श के लिये प्रश्न :

- परमेश्वर के सिंहासन से निकलता हुआ जल किस बात को दिखाता है?
- जीवन का वृक्ष क्या प्रकट करता है? इस वृक्ष में क्या ताकत थी?
- बिना किसी बाधा के प्रभु की निकटता में रहना आपको कैसा लगेगा? जरा विचार करें।
- इस पाठ में जिस पवित्र नगर का वर्णन किया गया है क्या आप उसमें जाने के लिए तैयार हैं? आप कैसे जान सकते हैं कि आपके लिए वहाँ जाने का द्वार खुला है?
- इस पुस्तक के नबूवत के वचनों में घटाने या बढ़ाने का क्या अर्थ है?

प्रार्थना के विषय :

- परमेश्वर का धन्यवाद करें कि आपको इस बात की आशा है कि आप परमेश्वर की उपस्थिति में सदा रहेंगे।
- प्रार्थना करें कि प्रभु सहायता करे कि आप प्रतिदिन इसी आशा के साथ जीवित रहें।
- प्रभु का धन्यवाद करें कि उसने वह सब कार्य कर दिया है कि आप पवित्र नगरी में प्रवेश कर सकें।
- अपने मित्रों और उन प्रियजनों के लिए प्रार्थना करें जिन्होंने अभी तक प्रभु को और उसके उद्धार को स्वीकार नहीं किया है।

अध्याय **30**

मुख्य विषयों पर पुनर्विचार

इस पाठ में हम संपूर्ण प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के विभिन्न खण्डों पर पुनर्विचार करेंगे और संक्षिप्त रूप में इसकी विषय-वस्तु पर दृष्टि डालेंगे। यह पुस्तक निम्नलिखित सात मुख्य खण्डों में विभाजित की जा सकती है :-

1. भूमिका तथा सात विभिन्न कलीसियाओं को पत्र 1:1-3:22
2. सात मुहरें 4:1-8:5
3. सात तुरहियाँ 8:6-11:19
4. स्त्री और अजगर 12:1-14:20
5. सात कटोरे 15:1-16:21
6. परमेश्वर के शत्रुओं का विनाश 17:1-20:15
7. नया यरूशलेम तथा उपसंहार 21:1-22:21

उपरोक्त प्रत्येक खण्ड हमें कोई न कोई आत्मिक शिक्षा एवं प्रोत्साहन देता है। आइये प्रत्येक खण्ड पर संक्षिप्त रूप से विचार करें :

1. सात कलीसियाएँ :

इस खण्ड में सात पत्रों का वर्णन मिलता है जो उन सात कलीसियाओं को लिखे गए जो प्रेरित यूहन्ना के युग में पाई जाती थीं। यह खण्ड हमारा ध्यान उन खतरों की ओर ले जाता है जो सताव के समय एक कलीसिया के सामने आ सकते हैं। उन दिनों इन सातों कलीसियाओं पर उनके विश्वास की जांच और परख का समय चल रहा था। ये हमारी शिक्षा के लिए और सोच-विचार करने के लिए हैं। सताव के दौरान कौन से खतरे कलीसियाओं के सामने आ सकते थे? परीक्षा अथवा परख के दौरान इफिसुस की कलीसिया ने अपना पहला सा प्रेम छोड़ दिया था। स्मुरना की कलीसिया दरिद्रता का सामना कर रही थी, उनका एक सदस्य शहीद हो गया था, तौभी वह विजेता कलीसिया रही। पिरगमुन की कलीसिया बिलाम और नीकुलइयों की झूठी शिक्षा

ा पालन करने लगी थी। थुआतीरा की कलीसिया भटककर व्यभिचार में पड़ गई थी। सरदीस की कलीसिया मरी हुई कलीसिया बन गई थी। फिलादेलफिया की कलीसिया की सामर्थ थोड़ी ही थी, वह प्रभु द्वारा संभाली गई; सहने से बाहर परीक्षा में उसे पड़ने नहीं दिया गया। लौदीकिया की कलीसिया गुनगुनी हो गई थी। जबकि यह अंतिम युग चल रहा है, प्रभु का शुभागमन निकट है; सताव की घड़ी में इन प्रत्येक कलीसियाओं की स्थिति-परिस्थिति से हमें चेतावनी, प्रोत्साहन एवं आत्मिक शिक्षा मिल सकती है।

2. सात मुहरें :

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक का यह दूसरा खण्ड हमें ख्रीस्त-विरोधी के बारे में बताता है जो अपने हर संभव प्रयास से विश्वासियों को सत्य से भटकाने का प्रयत्न करता है। जैसे-जैसे वे दिन निकट आते हैं, हम लड़ाईयों की चर्चा सुनते हैं, अकाल, महामारियाँ और क्लेश होता है। आकाश में चिन्ह प्रकट होंगे, प्राकृतिक आपदाएँ होंगी जो प्रभु के आगमन की सूचक होंगी। महाक्लेश के दौरान एक लाख चौवालीस हजार पर मुहर लगती है, अनेकों लोग क्लेश में शहीद होकर प्रभु की उपस्थिति में प्रवेश करते हैं।

3. सात तुरहियाँ :

यह तीसरा खण्ड हमें सिखाता है कि पृथ्वी पर एक महान न्याय का दिन आने वाला है। पृथ्वी, समुद्र, जल और आकाश का कुछ भाग नष्ट हो जाएगा। अविश्वासी लोगों को घोर पीड़ाएँ सहन करनी पड़ेंगी, परन्तु परमेश्वर के लोगों को कोई हानि न पहुंचेगी, और अविश्वासी संसार के समक्ष एक लाख चौवालीस हजार लोग जिन पर मुहर हुई थी तथा परमेश्वर के दो गवाह विश्वासयोग्यता के साथ गवाही देंगे और परमेश्वर की सेवा करेंगे।

4. स्त्री और अजगर :

इस खण्ड में हम शैतान को परमेश्वर का शत्रु देखते हैं, जो अपनी हर कोशिश से परमेश्वर के कार्यों में बाधा डालता है। उसने प्रभु यीशु मसीह को मार डालने का प्रयत्न किया, पर असफल रहा। फिर उसने अपना ध्यान कलीसिया पर लगाया और अन्त तक कलीसिया का विरोधी रहा। उसने पशु (ख्रीस्त-विरोधी) की सहायता ली। पशु के राज्य के दौरान पवित्र लोगों ने शैतान के दुष्ट कार्य सहे। शैतान ने अपने चमत्कारों और चिन्हों द्वारा बहुतों को धोखा दिया। किन्तु परमेश्वर के लोगों ने धोखा न खाया। पृथ्वी पर बड़ा सताव इस समय रहा। परमेश्वर विजयी रहा, पृथ्वी की कटनी की गई। विश्वासी प्रभु की संगति में उठाए गए और पृथ्वी पर परमेश्वर का प्रकोप शत्रुओं पर प्रकट हुआ।

5. सात कटोरे :

इस खण्ड में परमेश्वर के शत्रुओं पर एक एक करके विपत्तियाँ पड़ती हैं। परमेश्वर
त खण्ड में पशु की पूजा करने वालों का न्याय करता है। समुद्र और जल नष्ट किया
ता है। पृथ्वी के निवासियों को सूर्य की तपन झुलसा देती है। पशु का राज्य अंधकार
फेंक दिया जाता है। शैतान जाति जाति के लोगों को परमेश्वर के विरुद्ध अंतिम
द्ध करने के लिए एकत्रित करता है।

6. परमेश्वर के शत्रुओं का अंतिम विनाश :

इस भाग में हम देखते हैं कि परमेश्वर अपने प्रत्येक शत्रु का नाश कर देता है।
सके शत्रु बाबुल, पशु, झूठा नबी, अजगर, अविश्वासी जातियाँ और स्वयं मृत्यु नष्ट
र दिए जाते हैं। यह भाग हमारे लिए प्रोत्साहन भरा भाग है क्योंकि परमेश्वर अपने
व शत्रुओं पर विजयी होकर सर्वशक्तिमान प्रमाणित हुआ।

7. नया यरूशलेम :

यह अंतिम खण्ड उन बातों की हमें एक झलक दिखाता है जो परमेश्वर ने अपने
न करने वालों के लिए रख छोड़ी हैं, और जो अन्त तक धीरज धरे रहे और विश्वास
स्थिर रहे। इस भाग में नए यरूशलेम का जिक्र किया गया है जहाँ ख्रीस्त राज्य
रेगा। ख्रीस्त के साथ वे लोग भी बिना पाप, मृत्यु और शैतान के भय के राज्य करेंगे
क्लेशों में जयवन्त रहे।

प्रभु का दिन समीप है और विश्वासियों के लिए अंतिम समयों के दिन कठिन
गे, पर हम जानते हैं, मेमना विजयी हुआ है। इस पुस्तक के नबूवत के वचन परमेश्वर
मेमने की विजय की गाथा है कि जो कार्य उसने क्रूस पर आरम्भ किया था वह
ा होगा, प्रत्येक शत्रु हराया जाएगा, परमेश्वर की जीत होगी और जो उसकी आज्ञा
नते हैं उन्हें अनन्त प्रतिफल मिलेगा। यह जानते हुए कि मेमने के द्वारा जो कलवरी
घात किया गया विजय हमारी है, तो हम कैसी आशा करते हैं?

उन सबके लिए जो अपने जीवन में ख्रीस्त की क्षमा को नहीं जानते प्रकाशितवाक्य
ी पुस्तक एक चेतावनी की पुस्तक है। पापपूर्ण जीवन के लिए कोई आशा नहीं।
सके लिए केवल दंड निर्धारित है। विजय केवल उन्ही को मिलती है जो प्रभु यीशु
सीह में अपना भरोसा रखते हैं। यदि आप इस टीका को पढ़ रहे हैं और प्रभु यीशु
ो अपने व्यक्तिगत प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में नहीं पहचानते हैं, तो आज ही
आपको परामर्श देता हूँ कि तुरन्त अपना हृदय खोलिए, उससे अपने पापों की क्षमा
ागिये और पूर्ण रूप से उसमें अपना भरोसा रखना आज ही से आरम्भ कीजिए।

''लाइट टू माई पाथ''

(Light To My Path)

यह संस्था पुस्तकों को लिखने और उनका वितरण करने वाली संस्था है, जो एशिय लैटिन अमेरिका और अफ्रीका आदि देशों में आवश्यकताग्रस्त मसीही सेवकों के मः मसीही साहित्य की आपूर्ति करती है। विकासशील देशों के अनेकों मसीही सेवव को आत्मिक उन्नति के लिए आवश्यक बाइबल ट्रेनिंग प्राप्त करने या बाइबल अध्यय संबंधी सामग्री खरीदने की सुविधाओं का अभाव महसूस होता है। इसी बात को ध्य में रखते हुए यह संस्था सेवा कर रही है। एफ. वायन मैक लेआड, एक्शन इंटरनेशन मिनिस्ट्रीज़ के सदस्य हैं और इस उद्देश्य से पुस्तकें लिखते रहे हैं कि उन पुस्तव को आवश्यकताग्रस्त पास्टर्स और मसीही सेवकों के मध्य, चाहे वे किसी भी देश क्यों न हों, वितरित किया जा सके।

विश्व के 40 देशों से अधिक देशों में हज़ारों पुस्तकें जो इस संस्थान द्वारा प्रकाशि की गई, प्रचार कार्य में, सिखाने में और प्रोत्साहन देने में प्रयोग की जा रही हैं। अ पुस्तकों का अनुवाद हिन्दी, फ्रेन्च, स्पेनिश और हेटीयन क्रीओल में हो रहा है, उद्देश यह है कि अधिक से अधिक विश्वासियों तक पुस्तकें उपलब्ध हो सकें।

एल.टी.एम.पी. सेवकाई विश्वास भर में चलने वाली सेवकाई है। हमारा विश्वा है कि प्रभु इन पुस्तकों के वितरण में आवश्यक बातों की पूर्ति स्वयं करेगा ताकि तमा दुनिया के मसीही विश्वासी इन पुस्तकों से प्रोत्साहन और आत्मिक सामर्थ्य पा सव क्या आप प्रभु से प्रार्थना करेंगे कि वह अनुवाद कार्य तथा वितरण कार्य के लिए द्व खोले? अधिक जानकारी के लिए वेबसाइट का पता नीचे दिया जा रहा है :-

www.ltmp.ca